कथा अखन बाँकी अछि

कथा अखन बाँकी अछि

संस्मरण

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-343-2254-5

दाम : 350 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2025

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र

House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave

Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida

District: Gautam Buddha Nagar

UP: 201315

M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

कथा अखन बाँकी अछि A memoir by Shri Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथा अखन बाँकी अछि

संस्मरण

रबीन्द्र नारायण मिश्र

स्नेहार्पण

जीवन यात्राक सहगामिनी

श्रीमती आशा मिश्रकेँ

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे

प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निबन्ध), ३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबन्ध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबन्ध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2024

२८. माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९. जयतु जानकी(उपन्यास)

३०. यज्ञसेनी(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2025

३१. कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण)

३२. गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह)

In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019

१.न्याय की गुहार

अनुक्रम

यात्रा गामक ९	प्राणक भीख मगैत मिमाइत छागर
डाक्टर सच्चिदानन्द झा १३	आ वलिप्रदान ५६
हबाइ जहाज दरभंगा उतरल १६	भावनीपुर आ पण्डौल ६०
रहिका बड़ पुरान चौक अछि १७	कपिलेश्वर महादेव ६३
गाममे घर बनि रहल अछि १९	जनकपुर यात्रा ६४
गेलिऐ से गेले रहि गेलिऐ!२१	श्री राम बरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ ६५
मधुबनी सहर २६	पटना यात्रा ६९
श्री रामेश्वर महतोजी ३१	राजगीर,नालंदाक यात्रा ७५
डाक्टर कमलाकान्त भंडारी ३२	श्री उदय चन्द्र झा ’बिनोद’ ८८
मधुबनीसँ गाम अबैत-जाइत ३३	प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रकान्त झा ९३
बेटीक शिक्षा ३४	श्री शिवशंकर श्रीनिवास १०२
अड़ेर डीह(डोमटोल) ३५	डाक्टर योगानन्द झा १०६
मद्य निषेध ३६	आटो बला ११०
गाममे सरस्वती पूजा ४०	लाउडस्पीकर बजैत रहल ११४
ई एकटा आन्दोलने छल ४२	अकस्मात चलि जाएब शैलेन्द्र झाजीक ११९
गृह प्रवेश ४५	एहि बेरक ग्राम यात्राक पटाक्षेप १२६
श्री नारायणजी ४७	पुस्तकमे वर्णित व्यक्ति / स्थानसँ संबंधित
ओशो परिनिर्वाण आश्रम ,मधुबनी ४९	किछु चित्रसभ १३०
गाममे मूड़न ५०	पाठकीय प्रतिक्रिया(श्री राज किशोर मिश्र) १४९
हथधरीमे देपुरा ५२	

कथा अखन बाँकी अछि

यात्रा गामक

मास दिनसँ पहिने दरभंगाक रेल टिकट कटा लेने रही। दुनू बेकतीक नीचाँक सीट भेटि गेल रहए। आब समय लगीच आबि रहल छल। अचानक पटनामे विद्यार्थीसभक आन्दोलन शुरू भेल। लोकसभ रस्ता जाम करए लागल। ट्रेन लाइनपर धरना प्रारंभ भेल। बस सभमे आगि फुकि देल गेल। एकटा नेता अनशनपर सेहो बैसि गेलाह। ऊपरसँ मौसम सेहो बेदरंग होमए लागल।

“एहनमे ट्रेनसँ कोना जा सकब?”-ई प्रश्न मोनमे घुमि रहल छल। ऊपरसँ हुनकर ठेहुनमे सिकाइत से रहिते छनि। एक प्लेटफार्मसँ दोसरपर गेनाइ पराभव।

“तखन?”

बहुत सोच-विचार कए सोलह जनवरी २०२५ कए इन्डिगोक हबाइ जहाजमे दुनू बेकतीक टिकट लए लेलहुँ। भेल जे भने कनी खर्चा बढ़ि जाएत,मुदा आरामसँ जाएब। समयो कम लागत।जहाज दू बाजि कए दस मिनटपर उड़तैक आ चारि बजे दरभंगा पहुँचि जाएत। बहुत सही समयमे गाम पहुँचि जाएब।

आब यात्राक समय लगीच आबि रहल छल। जरूरी चीज छुटि नहि जाए तेँ पहिने ओकरासभके धोकड़ामे रखनाइ शुरू कए देलहुँ। किछु किताब,जरूरी दबाइसभ,अनेक प्रकारक कागजात जकर प्रयोजन होइत,राखि लेलहुँ। हमर श्रीमतीजी दूटा बड़का धोकड़ामे सामानसभ भरि लेलनि।धोकड़ीक सामानसभ सेहो राखि देल गेल। लैपटाप तँ जेबेक छैक।ओहीमे गढ़ल जेतैक नव-नव रचना। मधुबनीमे रहबाक जोगार पहिनेसँ भए गेल अछि।असलमे कार्यक्रम बनलाक बाद

हम अपन मित्र श्रीनारायणजीकेँ फोन केने रहिअनि। हुनका कहलिअनि जे छओ मासक लेल हमरा मधुबनीमे मकान किरायापर चाही। ओ सुनि लेलथि। तकर दू घंटाक बाद ओ फोन केलथि-

"हमर मकानक नीचाँ बला भाग खाली अछि। अहाँकेँ पसिंद होअए तँ ओतहि रहि जाउ।"

"एहिसँ नीक की भए सकैत अछि।"

बात पक्का भए गेल। हमर मधुबनी आवासक समस्या देखिते-देखिते समाधान भए गेल। श्रीनारायणजीक ओहिठाम रहलासँ सभटा समाधान अपने होइत रहत। कारण मधुबनीमे ओ पचास सालसँ बेसीए समयसँ रहि रहल छथि,बहुत प्रतिष्ठित छथि आ अपन लोक तँ छथिहे। हुनकर जतेक प्रशंसा कएल जाए से कम पड़त।

समय बितैत देरी नहि होइत छैक। देखिते-देखिते सोलह जनबरी लगीच आबि गेल। दू दिन पहिनेसँ हमसभ अपन धोकड़ामे सामानसभ राखि रहल छलहुँ।कागज -पत्र सभ सेहो राखि लेलहुँ। हबाइ जहाजक चेकिन आनलाइन कए लेलहुँ। सोलह जनबरीक हमसभ दस बजे टैक्सीसँ इन्दिरा गांधी हबाइ अड्डाक टर्मीनल १डी लेल बिदा भए गेलहुँ। हबाइ अड्डा पहुँचलाक एक घंटाक भीतरे हमरा लोकनिक सभ काज संपन्न भए गेल छल।आब निश्चिन्तसँ द्वारि संख्या बारहपर हबाए जहाजमे चढ़बाक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ कि ह्वात्सअप पर एकटा समाद आएल।समाद कि छल बुझू जे एकटा बम छल। हमरा लोकनिक समस्त योजनापर तुषारपात भए गेल छल। दिनमे दू बाजि कए दस मिनटपर उड़ए बला इन्डिगोक बिमान रद्द भए चुकल छल।कारण?कहाँ दनि दरभंगा हबाइ अड्डापर मौसम जहाजक उतरबाक अनुकूल नहि छल। यात्रीसभ बहुत परेसान भए गेल

रहथि,तनाओमे अर-दर बाजि रहल रहथि।किछु यात्री इन्डिगोक महिला अधिकारीक संगे दुर्व्यवहार करैत देखल गेलथि।दू-तीनटा यात्री तँ भयाओन हंगामा करैत रहलाह।ओही समयमे हम अपन ग्रामीण श्री अनिला झाजीकेँ पटना फोन केलिअनि।कहलिअनि-

"हबाइ जहाज रद्द भए गेल।"

से जानि ओहो चिंतित भेलाह। मुदा उपाय की?

यात्री लोकनिक द्वारा हंगामा बढ़ैत देखि इन्डिगोक अधिकारी लोकनि सभ यात्रीकेँ द्वारि संख्या ३२पर चलबाक लेल कहलथि। हम दुनू बेकती भारी हथझोरा उठओने ओहि द्वारिपर पहुँचलहुँ। ओतहु हंगामा होइते रहल,मुदा समाधान किछु नहि। बड़ी कालक बाद यात्री लोकनिकेँ प्रस्थान द्वारिपर बस द्वारा पहुँचा देल गेल। ओतहु ओहिना अव्यवस्था पसरल छल। यात्री लोकनि बेरा-बेरी खिड़कीपर अपन टिकट रद्द करा रहल छलाह। हमहूँ अपन टिकट रद्द करओलहुँ ,कारण कोनो दोसर विकल्प नहि छल। हमरा लोकनि साँझमे एयर इन्डिआक जहाजसँ पटना जा सकैत छलहुँ। मुदा ओहूठाम जा कए राति भरि होटलमे रहए पड़ैत आ भोर भेने टैक्सी वा बससँ मधुबनी बिदा होइतहुँ। खर्च आ परेसानी दुनू होइत। तेँ हमसभ बहुत सोच-विचारक बाद अपन घर वापस आबि गेलहुँ। घर पहुँचलाक बाद हमर पोता-पोतीक प्रसन्नता देखैत बनैत छल। हमर पोता बाजल-

"दादी हलुआ आनए गेल छलथि?"

हबाइ अड्डासँ ग्रेटर नोएडा स्थित अपन घर वापस अबैत-अबैत परसूक स्पाइजेटमे नव टिकट आरक्षित भए गेल छल।मौसम विभागक पूर्वानुमानमे ओहिदिन दरभंगाक मौसम नीक देखा रहल छलैक। यद्यपि दिल्लीमे मौसम नीक नहि रहितैक।मुदा दरभंगाक मौसम नीक भेनाइ बेसी जरूरी छलैक कारण ओहिठामक हबाइ अड्डापर जहाजक उतरबाक लेल बेसी नीक सुविधा नहि छैक।

यदि मौसम खराप भेल,किंवा राति भए गेल तखन ओहिठाम जहाज नहि उतरि सकैत अछि।

एक दिन नीकसँ विश्राम केलाक बाद हम दुनू बेकती फेर भोरे सात बजे हबाइ अड्डा बिदा भेलहुँ। ओहिठाम चेकिन कालेमे फेर उल्ट-पुल्ट समाचार सुनबामे आबि रहल छल।

“दरभंगाक जहाज तँ रद्द भए जेतैक।”

“दरभंगाक मौसम बहुत खराप छैक।”

ई सभ बात सुनलाक बाद मोन उदास भए जाएब स्वाभाविक छल। कारण ट्रेनक टिकट रद्द कए हबाइ जहाजक महग टिकट सुविधेक ध्यानमे रखैत लेने रही। नहि सोचि सकलिऐक जे दरभंगाक हबाइ जहाज तँ कटही गाड़ीओसँ खराप साबित हएत। मुदा आब की उपाय छल? ट्रेनक टिकट रद्द करबा चुकल रही। हबाइ जहाजक टिकट दोबारा बना लेने रही। तखन भेल जे लिखल हेतैक से हेतैक।हमसभ चेकिनक बाद द्वारि संख्या पन्द्रहपर पहुँचि गेल रही। ओहिठाम चाह-पानक उत्तम प्रबंध छल।दरभंगा गेनिहार बहुत रास यात्रीसभ तरह-तरहक गुलंजरसभ छोड़ि रहल छलाह। हम श्रीमतीजीक लेल पनिपिआइक जोगार केलहुँ।अपने तँ चूरा दही भोरे खा लेने रही। फेर अखबारक जोगार केलहुँ, निचेनसँ अखबार पढ़लहुँ। एतेक समय बीति गेलाक बादो हबाइ जहाज जेबाक अनिश्चितता बनले छल। संयोगसँ ओही समयमे हमर ग्रामीण डाक्टर सच्चिदानन्द झाजी पत्नी सहित ओतहि भेटि गेलाह। लगभग बाइस वर्षक बाद हुनका लोकनिसँ भेंट भए रहल छल। आरकेपुरमक हमरासभक डेरापर लगभग बाइस साल पूर्व ओ सभ आएल रहथि। तकर बाद एतेक पैघ अंतरालक बाद ओ सभ

भेटलाह।निश्चय ई बहुत आनन्ददायक घटना छल। आब की?हमसभ भरि छाक गप्प-सप्प केलहुँ।

डाक्टर सच्चिदानन्द झा

डाक्टर सच्चिदानन्द झाजी हमर गौंआ छथि।नेनामे हमसभ बहुत लगीच रही। ओ हमरासँ एक किलास वरिष्ठ रहथि। बादमे ओ वाटसन इसकूल मधुबनी चलि गेलाह।हम एकतारा हाइ इसकूलमे नाम लिखओलहुँ।हमरासभक मैट्रिकक परीक्षाक सेंटर वाटसन इसकूलमे रहए।ओहि समयमे ओ ओतए पढ़ैत रहथि।हमर दोसर गौँआ आ सहपाठी श्री आनन्दचन्द्रजी सेहो ओही इसकूलमे रहथि आ हमर हाल-चाल लैत रहथि।

सच्चिदानन्दजीक पिता स्वर्गीय घूरन बाबू इलाकाक प्रतिष्ठित लोक छलाह। ओ विद्यानुरागी रहथि।हमरा जखन कखनहु देखितथि तँ बहुत उत्साहित करितथि।लोकसभक सामनेमे प्रशंसा करितथि।एहिसभसँ हमर मनोबल बढ़ैत छल।हम आर बेसी जोर-सोरसँ पढ़ाइमे लागि जाइत छलहुँ।हुनकर ज्येष्ठ पुत्र स्वर्गीय विश्वंभर झाजी ओहि समयमे समाजमे चर्चित आ प्रतिष्ठित व्यक्ति छलाह। हमरा मोन पड़ैत अछि जे गामक पुस्तकालयमे जखन कखनहु हम जइतहुँ तँ ओ किताब लेबाक लेल उत्साहित करितथि।आदरणीय स्वर्गीय विश्वंभर झाजी अपना समयक बहुत यशस्वी समाजसेवी छलाह। ओ गाममे कैकटा संस्था जेना खादी भंडार,पुस्तकालय चलबैत छलाह,ओकर संस्थापक छलाह। खादी भंडारसँ बहुत रास गरीबसभक गुजर होइत छल।ओ तत्कालीन स्थानीय राजनीतिमे सेहो दखल रखैत छलाह आ निरंतर पटना अबैत-जाइत रहैत छलाह।कंग्रेस पार्टीमे हुनकर धाख छलनि।अफसोचक बाद अछि जे बहुत कम बएसमे ओ स्वर्गीय भए गेलाह।हुनकर असमय मृत्युसँ लोकसभ बहुत दुखी भेल रहथि।ओहि समयमे हम गामे मे रही।अखन धरि हमरा ओ दृश्य मोन पड़ैत रहैत अछि आ हम ओहि दुखद

प्रसंगक स्मरण कए मौन भए जाइत छी।एहि घटनासँ समाजक बहुत क्षति भेल छल।हुनकर बाद हुनकर चलाओल संस्थासभमे ओ जान नहि रहल ।क्रमशः ओ सभ बंद भए गेल।

डाक्टर सच्चिदानन्द झाजी वाल्यावस्थामे गाममे रहलापर हमर बाबूसँ संपर्कमे रहैत छलाह।पुस्तकालयक सामनेमे सोसाइटी आफिसमे ओ अबैत-जाइत रहैत छलाह।हम बेसी काल ओहीठाम पढ़ाइ करैत छलहुँ आ हुनकासँ ओतहि भेंट होइत छल।नेनाक हुनका संगे बिताओल गेल अविस्मरणीय क्षणमे छल हुनका ओहिठाम जा कए ग्रामोफोन सुनब। ओहि समयमे गाममे दू-तीन गोटेक घरमे ग्रामोफोन छलनि। हुनको ओहि ठाम बड़का ग्रामोफोन छलनि। हम ओहि ठाम जाइ।ओ अपन ग्रामोफोनपर गीतक रेकर्ड चलाबथि आ हमसभ गीतक आनन्द उठाबी।

बादमे हम नौकरीक लेल दिल्ली चलि गेलहुँ। ओ डाक्टरी पेशामे लागि गेलाह आ अनेक उच्चस्थान प्रप्त केलाह। ओहि दिन दिल्ली हबाइ अड्डापर बहुत दिनक बाद हुनकासँ भेंट भेलापर अद्भुत आनन्द भेल।बहुत रास गप्प-सप्प भेल।हुनकर श्रीमतीजीक हमर श्रीमतीजीक सेहो गप्प भेलनि। कहि नहि सकैत छी जे ओ समय कतेक आनन्दसँ बितल। ओ सभ द्वारकासँ तीर्थाटन कए वापस आबि रहल छलाह। मुम्बईसँ दरभंगा ट्रेनसँ वापस अएबाक छलनि। मुदा ट्रेन मौसमक खरापीक कारण रद्द भए गेल। ओ तकर बाद हबाइ जहाजसँ दिल्ली आएल रहथि आ दिल्लीसँ दरभंगाक लेल हबाइ जहाज पकड़बाक क्रममे प्रतीक्षा कए रहल छलाह।

ओही बीचमे यात्रीसभ हंगमा करए लागल।ओ सभ स्पाइस जेटक अधिकारीकेँ वारंबार आग्रह करथि जे दरभंगाक जहाज जेबाक चाही,ओतए मौसम ठीक छैक।तेँ जहाज रद्द करबाक कोनो औचित्य नहि छैक। मुदा ओ कहथि

जे हुनका सूचनाक अनुसार दरभंगाक मौसम ठीक नहि अछि। जहाज उड़ब अनिश्चित अछि। एकटा यात्री कहथि जे ओएह हबाइ जहाज लेह गेलैक अछि। लेह जेबामे विलंब भेलैक तेँ दरभंगाक उड़ानमे देरी देखा रहल छैक।यदि ओ जहाज लेहसँ उड़ि कए दिल्ली वापस आबि जाएत,तखने दरभंगाक लेल उड़ि सकत,अन्यथा रद्द भए जाएत।

दू-तीनटा युवक यात्री तँ बहुत उत्तेजित भए गेल रहथि, हंगामा करबाक लेल उद्यत रहथि। स्पाइसजेटक अधिकारी लोकनि अपन बातपर अड़ल रहथि। हम कैक बेर बहुत विनम्रतासँ हुनकासभकेँ बुझेबाक प्रयास केलहुँ।युवक यात्री लोकनिसँ आग्रह केलिअनि जे उत्तेजक भाषाक प्रयोग नहि करथि। संगे स्पाइस जेटक अधिकारीसँ सेहो निवेदन केलिअनि जे ओ दरभंगासँ वस्तुस्थितिक फेरसँ जानकारी लेथि। ओहि क्रममे दरभंगासँ सत्येन्द्रजी द्वारा पठाओल गेल वीडियो सेहो देखोलिअनि । ओहिमे दरभंगामे रौद उगल देखा रहल छल,आकाशमे मेघ साफ भए रहल छल।मुदा अधिकारी लोकनि एतबे कहथि जे दरभंगा हबाइ अड्डाक एटीएससँ प्राप्त सरकारी सूचनाक प्रतीक्षा कए रहल छथि। समयक संगे असमंजस बढ़िते जा रहल छल।सोचल जा सकैत अछि जे एहि परिस्थितिमे हमसभ कतेक परेसान भए गेल रहब होएब। मुदा कइए की सकैत छलहुँ?

दू घंटा विलंबक बाद अचानक हबाइ जहाजमे चढ़नाइ शुरू भए गेल।यात्रीसभ पाँति लगा लेलनि।हुनकासभक प्रसन्नताक तँ अन्ते नहि छल।हमहूँ हुनका संगे सामान लेने आगू बढ़ि रहल छलहुँ।आब जहाजमे पैसितहुँ कि पता लागल जे सभसँ बेसी हंगामा केनिहार यात्रीकेँ हबाइ जहाजमे प्रवेश नहि देल जा रहल छनि,हुनका बाहरे रोकि लेने छनि।चारि-पाँचटा मुस्टंड घेरि लेने छनि।हुनकर मुँह देखए बला छल। ओ बहुत उदास आ दुखी छलाह।बादमे पता लागल जे ओ

स्पाइसजेटक अधिकारी लोकनिसँ घटी मानलथि। तखन हुनको हबाइ जहाजमे जेबाक अनुमति देल गेलनि।

एक घंटा बीस मिनटमे हमसभ दरभंगा हबाइ अड्डापर उतरि गेल छलहुँ। हम कनी पाछू भए गेल रही। सामान लए जखन बाहर भेलहुँ तँ डाक्टर सच्चिदानन्दजीकेँ तकलिअनि।चारू कात घुमि गेलहुँ।तखने निर्गम द्वारि दिस ध्यान गेल तँ हुनका बाहर होइत देखलिअनि।हमहूँसभ सामान लेलहुँ आ हबाइ अड्डाक निर्गम द्वारि दिस बढ़ि गेलहुँ।कहबाक काज नहि जे अचानक भेल हुनकासँ ई भेंट बहुत आनन्दायी छल,अविस्मरणीय छल।

हबाइ जहाज दरभंगा उतरल

जहिना उड़बामे देरी भेल छल तहिना तेजीसँ हबाइ जहाज दिल्लीसँ दरभंगा उड़ल। जे यात्रा दू घंटामे समाप्त हेबाक छल से चालीस मिनट पहिने एक घंटा बीस मिनटमे समाप्त भए गेल।यात्रीसभक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छलनि। सभ उल्लासमे छलाह।हुनकर सभक आननपर विजयी मुद्रा सहजतासँ देखल जा सकैत छल। यात्रामे भेल विलंबकेँ सभ बिसरि गेल छलाह। बीचमे एकाध बेर मौसम खराप हेबाक घोषणा सेहो भेल। जहाज ऊपर-नीचाँ सेहो केलक।मुदा जहाज उड़ैत रहल आ अंततोगत्वा, दरभंगा हबाइ अड्डापर उतरि गेल। हम तकर जनतब तुरंत अपन परिवारकेँ देलिअनि। हमर अनुज सत्येन्द्रजी सपत्नीक हबाइ अड्डाक बाहर प्रतीक्षा कए रहल छलाह। ओ सभ बहुत हर्षित छलाह।आखिर कैक दिनक अनिश्चितताक अंत भेल छल। हमसभ स्वस्थ चित्त दरभंगा पहुँचि गेल रही। बाहर प्रतीक्षारत कारपर हमसभ बैसलहुँ।सत्येन्द्रजी हुनकर पत्नी सेहो संगे रहथि।दरभंगा हबाइ अड्डापर पहुँचलाक बाद हमसभ अपन मित्र श्रीनारायणजीकेँ सेहो सूचना दए देने रहिअनि। पहिने हमरासभक मधुबनीए जेबाक कार्यक्रम रहए। सोचने रही जे मधुबनी डेरापर व्यवस्थित भए प्रात भेने गाम जाएब। मुदा

जखन कार रहिका बला रस्ता पकड़ि लेलक तखन स्वतः गाम पहिने जेबाक कार्यक्रम बनि गेल।

रहिका बड़ पुरान चौक अछि

कार तीव्र गतिसँ आगू बढ़ल जा रहल छल। सड़कक दुनू दिस हरियर कंचन खेत-पथारक अद्भुत दृश्य देखबामे आबि रहल छल। सरिसओक पिअर-पिअर फूल मनमोहक लागि रहल छल। हबाइ अड्डासँ कनीके आगू बढ़लापर आधुनिक तरीकाक फ्लैटसभ देखबामे आएल।बादमे तँ एहने फ्लैटसभ मधुबनी-सौराठ रोडपर सेहो देखबामे आएल। ग्रामीण क्षेत्रो मे बास योग्य जमीन बहुत महग हेबाक कारण फ्लैट संस्कृतिके बढ़ब स्वाभाविक अछि।सी एम कालेज दरभंगामे पढ़बाक समयमे आ बादमे दरभंगामे टेलीफोन इन्सपेक्टरक नौकरीक क्रममे दरभंगा-गाम आएब-जाएब लागले रहैत छल। बेसी काल रहिका आबि दरभंगाक बस पकड़ैत छलहुँ। बसौली,केवटी,दरिमा,खिरमा, हबाइ अड्डा होइत बस दरभंगा पहुँचैत छल। ओहि समयमे दरभंगा हबाइ अड्डा वायुसेनाक अधीन छल। ओतए नागरिक सेवा नहि होइत छल। हबाइ अड्डापर कारी-उज्जर रंगक एकटा झंडा फहराइत रहैत छल जे बसे मे सँ देखल जा सकैत छल।

कपिलेश्वर होइत हमसभ आब रहिका चौकपर पहुँचि गेल रही। पहिने जखन हम दिल्लीसँ गाम आबी तखन रहिका चौक जस-के-तस देखाइत छल। कोनो परिवर्तन नहि। ओएह गनल-गुथल दोकानसभ। ओतहि एकटा दोकानपर किछु मैथिलीक किताबसभ भेटि जाइत छल।मुदा एहि बेर बहुत परिवर्तन बुझाएल।चारू कात अनेक दोकानसभ पसरल छल।बीच चौराहापर एकटा स्तंभ बनल अछि।हमसभ ओतहि सुधाक दोकानसँ एक किलो माने चारिटा पाकेट पेरा कीनलहुँ आ गाम दिस बढ़ि गेलहुँ।

रहिका-सतलखाक बीचमे एकटा बहुत पुरान धार अछि। ओतहि जखन हमसभ बच्चा रही तँ एकटा बस उनटि गेल रहैक। हमसभ गामसँ आबि कए ओ दृश्य देखने रही। अखनहु जखन हम ओहिठामसँ गुजरैत छी तँ ओ घटना मोन पड़ि जाइत अछि।सतलखासँ कनीके आगू बढ़लापर लकसैर टोल अबैत अछि। ओहिठाम एकटा कनझरनी रहैत छलि। हमसभ जखन बच्चा रही तखन ओकर बेस चला-चलती रहैक। जकरा ककरो कान,माथ दुखाइत,से ओकरासँ झड़ेबाक लेल जाइत छल।एक बेर हमहूँ बच्चामे ककरो संगे ओकरा ओहिठाम गेल रही। ओ नाक पकड़ि कए किछु मंत्र पढ़ैत छलि आ संबंधित व्यक्तिक नाकसँ पिलुआ झड़ए लगैत छल।नीचाँमे पिलुआक पथार लागि जाइत छल। रोगी एहि दृश्यकेँ देखि बहुत आश्वस्त होइत छल जे चलू , एतेक रास पिलुआ नाकसँ बाहर भए गेल। आब तँ चेनसँ रहब,दर्द नहि होएत। लोक नकझरनीकेँ एहि सेवाक बदलामे किछु चाउर,किंवा पाइ दैत छल,नहि तँ उधारिओ राखि लैत छल।बादमे ओ गाम जा कए बकिऔता वसूली करैत छलि।हमरा जनैत सभटा ओकर मात्र हाथक सफाइ छल।कोनो मनुक्खक नाकसँ एतेक रास पिलुआ यदि झरितए तखन ओ जीबित रहितए से संभव नहि बुझा रहल अछि।जे होइ,मुदा ओहि समयमे ओ बहुत प्रसिद्ध छलि आ ओकरा ओहिठाम कारणीसभक पाँति लागल रहैत छल।

लकसैर टोल(सतलखा)सँ जुड़ल छथि प्रोफसर यशोधर झाजी। हुनका मैथिलीमे साहित्य अकादमीक प्रथम पुरस्कार हुनकर पोथी’ मिथिला वैभव’ लेल भेटल छलनि। ओ हमर पितियौत बहिनक ससुर छलाह । जखन हुनका पुरस्कार भेटल रहनि तँ ओ किछु दिनक बाद अपने हाथे मिथिला वैभव पोथी हमर पिताकेँ देने रहथिन।हम ओहि किताबकेँ पढ़बाक प्रयास केने रही। ओहिमे बेसी दर्शनक चर्चा बुझाएल। गाम जाइत काल हुनकर डीह देखाएल। ओहिपर एकटा पक्का मकान बनल अछि जाहिमे निरंतर ताला लागल रहैत अछि। ताला लागल एहन

मकानक गामक-गाम भरमार भए गेल अछि।हम ओहि मकान दिस बड़ी काल धरि देखैत रहि गेलहुँ। ओहि डीहक भूतकालक दृश्य मोन पड़ि गेल।हम इएहसभ सोचिए रहल छलहुँ कि कार आगू बढ़ि गेल।

गाममे घर बनि रहल अछि

गामसँ हमरा सभ दिन बहुत भावुक लगाओ रहल अछि। हम गाममे रही कि नहि,मुदा एहन कोनो दिन नहि रहल होएत जहा हम भोरुका चाहक बैसारक समय अपन श्रीमतीजीक संगे अपन गाम,गामक समस्या,अपन घरक समस्या आ लोक-वेदक चर्चा नहि केने होएब। कहब जे तकर परिणाम कि भेल? ककरा कोन उपकार भेलैक?आब से जे भेल होइक ,मुदा हमरा जेना एकटा जीबित रहबाक कारण कही,किंवा सृजनशील रहबाकक व्योंत कही, से भेटि जाइत छल।

सबाल अछि जे गाममे मकान पहिने किएक नहि बनि सकल आ आब ओही जमीनपर से कोना संभव भए रहल अछि?एहन बात नहि छैक जे हम ताहि लेल प्रयास नहि केलहुँ।लगातार चारि दिन धरि हम चारू भाएक बैसार केलहुँ,मुदा परिणाम ढाकक तीन पात।आखिर हमहूँ सभ किछु छोड़ि वापस भए गेलहुँ। पछिला एगारह सालमे प्रायः कोनो दिन एहन नहि भेल होएत जे उठि-सुठि हम दुनू बेकती गामक घरक प्रकरणक चर्च नहि केने होएब।कहिओ-कहिओ तँ हमर श्रीमतीजी एहि चर्चासँ खिसिआ जाइत छलीह। कहथि-

“खाली चर्चा केलासँ मकान थोड़बे बनि जाएत।अनेरे भोरे-भोर मोन तीत करैत छी।”

हुनकर कहब उचित छलनि। हमरो सोच सही छल।हम निरंतर मंत्र जाप करैत रहलहुँ।तकर परिणाम सार्थक भेल । लगभग एगारह सालक बाद एहन सुयोग भेल जे हमर सभसँ छोट भाए सत्यन्द्रजी सरकारी सेवासँ सेवानिवृत्त भेलाह आ गाममे घर बनेबाक इच्छुक रहथि।हुनके सहयोगसँ उपलब्ध संसाधने सँ काज

प्रारंभ भेल जे क्रमशः आगू बढ़ल। आब शांतिपूर्ण ढंगसँ मकान बनि रहल अछि जाहिमे सभ समांग सहयोग कए रहल छथि।

गाम पहुँचिते हमसभ अपन नव बनैत घर देखि बहुत प्रसन्न भेलहुँ। नींव धरि काज भए गेल छल,माटि भरा चुकल छल। आब आगू काज लेल खाम्हसभ बन्हा रहल छल। चिर प्रतीक्षाक बाद ई काज आगू बढ़ि रहल छल से बड़का संतोषक बात।

गामक प्रति सिनेह , गाममे घर बनेबाक आकांक्षाक संग हम बहुत दिनसँ जीबि रहल छलहुँ।जेना-तेना आब एतेक दिनका बाद गाममे घर बनि रहल अछि। पता नहि ओहिमे कतेक दिन रहि सकब?असलमे ई एकटा संघर्षक शांतिपूर्ण सकारात्मक अंत कहल जा सकैत अछि। निश्चित रूपसँ आगूक पीढ़ीक लेल एकटा आधार भए सकैत अछि। कम सँ कम आब ई तँ नहिए कहल जाएत जे अपने जीवनमे गामसँ उजड़ि गेलहुँ।ओना गाममे जिनकासभकेँ घर छनिहो सेहो अधिकांश बंदे रहैत अछि। घरसभमे बड़का-बड़का ताला लटकल रहैत अछि। घरक भगवतीकेँ ठीकापर दए देल गेल छनि। गामक केओ साँझ देखा दैत छनि। तैओ लोकसभ गाममे घर बनाइए रहल अछि। गामक-गाम घर बनेबाक उजाहि उठल अछि। अड़ेर हाटपर गृह निर्माणक सभटा सामान भेटि जाइत अछि।असलमे हमर गामक चौक जे पहिने दू-चारि टा दोकान रहल हेतैक,आब नीक बजार भए गेल अछि। सड़कक काते-काते दोकानसभ बढ़ैत-बढ़ैत धकजरीमे सटि गेल अछि। लगपासक गामक लोकसभ ओतहिसँ बहुत रास सामानसभ कीनैत छथि।

गाम अबैत जाइत आ गामोमे किछु विशिष्ट लोकसभसँ भेंट होइत रहैत अछि। मधुबनीसँ गाम आएब-जाएब होइते रहैत अछि। बस,टेकरसभक बहुत सुविधा भए गेल छैक। एक बजेक आस-पास कैकटा बस अड़ेर होइत बेनीपट्टी जाइत अछि। ओहि बासकेँ पकड़बाक लेल गंगासागर बस स्टैंड जाए पड़ैत

छैक।ओहि ठाम कनी पहिने पहुँचू, बसमे बैसि जाउ।नियत समयपर बस खुजि जाएत। कालेजसभमे परीक्षा चलि रहल छलैक। ताहि लेल गाम-घरसँ वालिकासभक हुजुम बससँ अबैत-जाइत देखाइत छल।लगैत छल जे आब अपनो दिस वालिकासभक शिक्षा दिस लोकसभक ध्यान गेलैक अछि जे निश्चय बहुत स्वागतयोग्य बात थिक। मुदा मधुबनीमे ,रहिकामे सभठाम परीक्षा केन्द्रसभक बाहर अभिवावक लोकनिक भीड़ लागल देखाएल।लोकसभ अपन विद्यार्थीक मदतिक लेल आतुर बुझाइत छलाह। ओ ई नहि बूझि रहल छलाह जे एहि तरहक प्रयाससँ हुनकर बच्चाकेँ मदति नहि,अपितु सत्यानाश भए रहल छनि।ओ सभ बस एकटा भीड़क भाग बनि कए रहि गेल छलाह।

बसमे,टेकरमे ,चौकपर,दोकानपर सभठाम हिन्दी भाषामे सूचना,नामपट्ट वा व्यापारिक प्रचारक सामग्री देखबामे आएल। ततबे नहि,मधुबनीमे एकठाम सूचना छल-"एहि ठाम भांगरा डांस के लिए अग्रिम बुकिंग किया जाता है।"

अपन संस्कार,संकृतिकेँ बिसरि आन ठामक रीति,परंपरा,संगीत-नृत्यक अंधाधुकरण भए रहल अछि।"

गेलिऐ से गेले रहि गेलिऐ!

१८ जनबरी२०२५सँ हम दुनू बेकती ग्रेटर नोएडाक अपन आवास छोड़ि मधुबनीमे रहि रहल छी। हम प्रायः नित्य गाम-अबैत-जाइत छी।मकान तँ बनि रहल अछि आ बनिए जाएत।मुदा कैकटा बितल,भोगल बातसभ अखनहु पछोड़ करिते अछि।एहने एकटा प्रसंग ओहि दिन मधुबनीसँ गाम जाइत काल मोन पड़ि गेल।

ओहि दिन फोनमे एकटा मिसकाल देखलिऐक। सामान्यतः एहन मिसकाल अनावश्यक होइत अछि। कैक बेर खतरनाको होइत अछि। आइ-काल्हि तरह-तरहक फसाद फोनपर होइत रहैत अछि। लोक विश्वासमे कोनो

अपरिचितक फोन वा वीडियोकाल उठा लैत अछि आ फँसि जाइत अछि। जहिना विज्ञान जीवनकेँ सुगम आ अर्थपूर्ण केलक अछि,तहिना कैकठाम एकर दुरुपयोगसँ जीनाइ मोसकिल भए जाइत अछि। एहने किछु हमर एकटा परिचितक संग किछु दिन पूर्व भेल रहनि। ओ अपन घरमे विश्राम कए रहल छलाह। रातुक साढ़े दस बाजि रहल छलैक। अचानक हुनका वीडियो काल अएलनि। ओहिमे ककरो नामो उचड़ि रहल छल। भेलनि जे कोनो जरूरी बात हतैक। ओ फोन लगा लेलनि। तकर बाद तँ की की ने होइत गेलनि। जाबे ओ किछु बुझथि,किछु समाधान सोचथि ताबे तँ सभ किछु चौपट भए गेल रहनि। बदमास सभ हुनकर गलत-सलत वीडियो बना लेने रहनि। तकर बाद तरह-तरहक फोन करए लगलनि। आब की करितथि? ओ धमकी सेहो देलकनि। ई कए देब,ओ कए देब। लिअ औ बाबू। हारि कए ओ ओकरा किछु टाका सेहो देलखिन। मुदा ताहिसँ बात सलटलनि नहि। अपितु,ओ आर-आर मांग करए लगलनि। हारि कए ओ पुलिसक शरण लेलनि। बदमास सभ हुनकर गलत वीडियो चारूकात पठा देलकनि। अनेक परिचित,मित्र लोकनि से सभ देखि चकित छल।हमरो ई बात पता लागल।हम तुरंत हुनका उचित परामर्श देलिअनि। जेना-तेना बात सलटलनि। मुदा ओ अनेरे बहुत अधिक परेसानीमे पड़ि गेलाह। एहने-एहने घटनासँ सबक लए हम सामान्यतः अज्ञात नंबरसँ आएल फोन नहि उठबैत छी। ओहूदिन फोन नहि उठओलिऐक। बादमे जखन ट्रुकालरपर देखलिऐक तँ ओ केओ अपने दिसका लोक बुझेलाह।हम ओहि मोबाइल नंबरपर फोन केलिअनि। ओ कहलाह-

"गलतीसँ फोन लागि गेल छल।"

"कोनो बात नहि।"

फेर दुनूगोटेकेँ परिचय भेल। ओ हमरे गामक पुबारि टोलक छलाह। हमरा जनैत छलाह। परिचय होइतहि तुरंत कहलाह-

"अहाँ गेलिऐ से गेले रहि गेलिऐ।"

हुनकर बात सुनि मोनमे बहुत कष्ट भेल। हुनका किछु उत्तर नहि दए सलकिअनि। किछु-किछु ओ कहैत रहलाह।हम सुनैत रहलहुँ।ओ आगू बजलाह-

"हम तँ साढ़ेतीन वर्षसँ गामे रहैत छी। मुदा अहाँ कहिओ नहि देखेलहुँ।"

हम हुनका किछु नहि कहलिअनि। जाबे माए जीबैत छलीह सालमे दू तीन बेर हम गाम निरंतर जाइत रहलहुँ। सन् २०१६मे हुनकर देहान्त भए गेलनि। हुनकर श्राद्ध गामेमे विधिपूर्वक संपन्न भेल रहनि।तकर बाद गाम जेबाक क्रम जरूर कम भए गेल। यद्यपि एहि साल मार्चमे छओ सालक बाद हम गाममे हमर मित्र श्री शैलेन्द्र झाजीक पौत्रक उपनयनमे गेल रही। ओहिठामसँ निर्मलीमे सगर राति दीप जरए कार्यक्रममे सेहो गेल रही। मुदा से हुनका नहि बुझल रहनि।ने हम एहि बारेमे चर्चा कए सकलहुँ।

हुनका जाइत-जाइत हम आग्रह केलिअनि जे अवसर भेटलापर ग्रेटर नोयडा स्थित हमर वर्तमान आवासपर आबथि। ओहो सहमति दैत फोनकेँ समाप्त केलनि। फोन कटि तँ गेल,मुदा हमर मोन बड़ीकाल धरि ओहीमे ओझड़ाएल रहि गेल।हम सोचैत रहि गेलहुँ। की की भेल?केना की भेल?

बादमे हम एहि घटनाक चर्चा अपना घरमे केलहुँ। किछु खास लोक सभसँ सेहो केलहुँ। भए सकैत अछि जे ओ व्यक्ति ओहिना किछु बाजि गेल होथि,किंवा बजा गेल होनि,मुदा हमरा लेल ई प्रश्न बहुत गंभीर विषय अछि,एहू लेल जे प्रायः भरि जिनगी हम एहि समस्याकेँ कोनो-ने-कोनो रूपसँ सामना करैत रहलहुँ अछि आ तकर समाधान केबो केलहुँ आ अखनहु तकर चिंतामे लागल

रहैत छी। कहब से कोना आ तकर परिणाम की भेल? तखन एहि समस्याक भीतरमे जाए पड़त।

अड़ेर गाममे हमरसभक सातम पुस्त चलि रहल अछि। हमर सभक पूर्वज सीतामढ़ी लग मानिक गामसँ एहिठाम सासुरमे बसाओल गेल छलाह। हमर पितामहक बनाओल मकान अगिलग्गीमे जरि गेल रहैक। तकर बाद हमर पिताजी ईंटाक मकान बनओलथि। तकर ऊपरमे खपड़ा देल गेल रहैक। ईंटक भट्ठा गामेमे बड़की कलममे लगाओल गेल रहैक। ताहि लेल बहुत रास सीसोक गाछ काटि कए जारनिक काज कएल गेल रहैक। कोनो कारणसँ ईंटा नीकसँ नहि पकलैक। तेँ मकानमे कतहु पाकल तँ कतहु कचाह ईंटा लागल रहए। ऊपरमे लागल खपड़ा हमर बाबूक मात्रिक जनाढ़सँ आएल कारीगरसभ बनओने रहए। ओ खपड़ासभ बहुत मजगूत छल आ बहुत दिन धरि बाँचल रहल। बादमे कैक बेर भूकम्प भेल जाहिमे मकानक हालति गड़बड़ाइत गेल। मकानमे कैक ठाम फाट भए गेल जकर मरम्मति समयपर नहि भए सकल।कालक्रमे ओ मकान ढहि-ढनामना गेल। ओहि समयमे हम दिल्लीमे काज करैत रही। तकर बाद बहुत दिन धरि जेना-तेना ओही मकानसँ काज चलल। जखन ओ मकान साफे खसि गेल तखन गाममे रहैत हमर अनुज जेना-तेना छोट-छीन मकान बनओलथि। अगिला साल ओहि कोठरीसँ सटल उत्तर दिससँ हमसभ तीन भाइ मिलि कए एकटा कोठरी माएक लेल बनओलहुँ। कल गड़ओलहुँ।आगू दिस कनीकटा ओसारा सेहो बनाओल गेल।अगिला साल(सन्२००४मे) जखन हम दुनू बेकती गाम गेलहुँ तखन सौंसे मकानमे सीमेंटसँ प्लास्टर करबओलहुँ।

सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्त भेलाक बाद मार्च २०१४मे हम गाम गेल रही।तखन गामपर मकान बनेबाक चर्च परिवारमे भेल। हम चाहैत रही जे पैत्रिक घड़ारीकेँ चारि भागमे बाँटि देल जाइ जाहिसँ चारू भाइ अपन-अपन सुबिधानुसार

मकान बनाबथि। एहि लेल गामपर चारू भाएक चारि दिन बैसार भेल।मुदा आपसी सहमति नहि बनि सकल।एहि तरहेँ पुस्तैनी घड़ारी बटाएल नहि, आ बाँचल साझी जमीनमे सेहो आपसी सहमतिक अभावमे हमर मकान बनि सकल नहि।

२०१५ ई०मे हम गाममे एकटा घड़ारीक जमीन किनबाक प्रयास केने रही। सभ किछु तय भए गेल छल। जाहि दिन लिखा-पढ़ी होइत संबंधित व्यक्ति पटनासँ गाम नहि आबि सकलाह।हम मधुबनी चलि गेलहुँ। ओहिठाम हमर मित्र श्रीनारायणजीसँ एहि विषयपर चर्चा भेल। ओ कहलाह-“गाममे घर बना कए फँसि जाएब। लोकसभ तंग करत,आदि,आदि।” हुनकर बातसँ प्रभावित भए हम मना कए देलिऐक।भेल काज गड़बड़ा गेल। साइत ओ बड़ पैघ गलती भेल।”

सन् १९८८-९०क बीचमे मधुबनी सहरक स्टेडियम रोडमे जमीन किनि हम पक्का मकान बनबओलहुँ। ताहि लेल सरकारसँ गृह ऋण लेलहुँ। एहि मकानकेँ बनबएमे आ तकर बाद जे घटनासभ भेल से विस्तारसँ हम आन ठाम ,मोह भंग, शिर्षकसँ लिखि चुकल छी। तेँ पुनरावृत्ति नहि करैत एतबा लिखि रहल छी जे अंततोगत्वा, ओहो मकान सन् २०१६मे बिका गेल। तकर बादे हम ग्रेटर नोएडामे मकान किनलहुँ जे बहुत सुभ्यस्त अछि। एहिठाम हमसभ सपरिवार बहुत आनन्दसँ पछिला सात-आठ सालसँ रहि रहल छी। मुदा गाममे घर होअए से लौल अछिए। मार्च २०२४मे जखन गाम गेल रही तँ लगभग दस सालपर फेर गाममे मकान बनेबाक विषयपर गामपर चर्चा भेल। हमर भातिज चंदनक रुखि साफे बदलल छल। ओ समस्याक समाधान लेल बहुत उत्सुक बुझेलाह ।“चाहे बटबारा होउ,वा सामिलेमे मुदा मकान बनबैत जाउ।हम सभ लेल सहमत छी,तैयार छी।”-से ओ बजलाह।देखा चाही आगू की होइत अछि।हम सभ दिनसँ गाममे घर

बनेबाक लेल उत्सुक रहलहुँ,मुदा किछु कए नहि सकलहुँ।भावी प्रबल।सारांश जे, जे हेबाक सएह होइत छैक।

१३।१।२०२४

मधुबनी सहर

मधुबनी हमरासभक गामसँ पन्द्रह किलोमीटरपर अवस्थित अछि। हम बच्चेसँ एहि ठाम अबैत-जाइत रहलहुँ।हमरसभक मैट्रिकक परीक्षा केन्द्र मधुबनी वाटसन इसकूलमे छल।ओहूसँ पहिने कैक बेर असगरे आ बेसीकाल बाबूक संगे मधुबनी आएल रही। बाबूक संगे मधुबनी आबी तँ ओ मधुर जरूर खुआबथि।किछु-किछु आर सामानसभ कीनल जाइत।

मधुबनीमे जाम ओहिना लगैत अछि जेना कोनो पहाड़ी नदीमे बाढ़ि आबि जाइत अछि।कखन जाम लागि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि। सड़क दुबगली अतिक्रमण भेल अछि जकर हटाएब असंभव थिक।देखिते-देखिते आगूसँ रिक्सा पाछूसँ मोटर साइकिल बामा कातसँ ट्रेक्टर बीचमे फसल किछु यात्री तेहन विचित्र दृश्य बना दैत छथि जकर वर्णन करब मोसकिल।जामसँ निकलि गंतव्य धरि सुरक्षित पहुँचि जाएब अपनेक भाग्यपर निर्भर अछि।

मधुबनीक सीवर व्यवस्था आ स्वच्छताक चर्चा नहिए करब बेसी नीक।मधुबनी सहरमे सीवरक कोनो नीक व्यवस्था नहि अछि। यत्र-तत्र नालासँ सड़ल पानि दुर्गंधित अपशिष्टसभ बहाइत देखि मोन घिना जाइत अछि। पोखरिसभ दुर्गंधसँ गन्हाइत रहैत अछि। गिलेशन बजारक मछहट्टा लग माछी भनभनाइत रहैत अछि। सामनेमे गुंड़क चक्की खुजले राखल देखाएत। ओएह माछीसभ उड़ि-उड़ि गुड़पर बैसैत अछि।की आमिष की निरामिष?एक दिन गुड़क दोकान बलाकेँ कहबो केलिऐक-

“एना उघारल गुड़ किएक रखैत छी?किएक ने एकरा उजरा पन्नीसँ झाँपि दैत छिऐक?”

ओ तुरंत उग्र होइत बाजल-

“की बात करैत छी?ई मधुबनी छैक?भीतर राखि देबैक तँ बिकेबो करत? अहाँक लेबाक होअए तँ भीतरेसँ निकालि देब।मुदा एना नहि बाजू।”

मधुबनीमे एकटा विचित्र बात ई देखबामे आबि रहल अछि जे स्थानीय विक्रेतासभ जेना झगड़ा करबाक लेल तैयार बैसल होअए,आतुर होअए।यदि एकटा बात मुँहसँ निकलि गेल,किंवा किछु प्रश्न पुछि लेलहुँ तँ आगू भगवाने मालिक।जेना तरकारी लेबाक काल हम कहलिऐक-

“दढ़ कदीमामे सँ काटि कए दिअ।”

“जते गोटे आएत सभ कहैत जाएत जे दढ़ कदीमा काटि कए दिअ।तखन तँ हम बेचि लेलहुँ। एक सेर -आध सेर लेब कि नहि लेब ,मुदा फरमाइस करैत जा रहल छी।”

एहि तरहेँ तरह-तरहक बातसभ ओ बाजए लागल। ओहि ठाम ठाढ़ भेल दूटा ग्राहक सेहो अबाक देखैत रहि गेलाह। ओ सभ संभवतः भोज करबाक लेल कदीमा आ ओल एकट्ठे लेबाक लेल तत्पर छलाह,मुदा दोकानदारक बजबाक तरीकासँ छगुन्तामे देखेलाह।

एकदिन काजसँ कचहरी गेल रही।एकटा जमीनक पुरान खतिआओनकेँ साफ-साफ टंकित करेबाक रहए जाहिसँ ओकरा पढ़ल जा सकए। पता लगबैत-लगबैत ओकालतिखानाक पाछू बैसल टंककजी लग पहुँचलहुँ। ओ मिथिलाक पंचकोसीक एकटा प्रसिद्ध गामक बासी छथि। बएस पचहत्तरि,देखबामे शुभ्र। हम हुनका ओ कागज देखए देलिअनि। ओहिमे हाथसँ लिखल सातटा पन्ना

छलैक।तकरा टंकित करबाक लेल ओ सात सए रूपया मंगलनि। फेर अपने छओ सए कहलनि आ बात पक्का भए गेल। ओ दोसर दिन बारह बजे टंकित कए देताह।हम दोसर दिन भेने हुनकासँ ओ कागज लेबए गेलहुँ। ओ नाम पुछलनि आ टंकित कएल कागज निकालि कए दए देलनि। हम ओहि कागजकेँ ध्यानसँ देखैत छी। ओहिमे अपूर्णता बुझाएल।पाछूक दू पृष्ठ टंकित नहि कएल गेल छल। हम हुनका कहलिअनि-

“एहिमे तँ दूटा पन्ना नहि छैक।”

ओ मुँह बिचकबैत बजलाह-“एहिना होइत छैक।कोनो कागज देखि लिऔ।एहन कागजसभमे पछिला पन्नासभ टंकित नहि कएल जाइत छैक।”

“मुदा हम तँ अहाँकेँ पूरा कागज टंकित करए कहने रही।”

“की जाहिल जकाँ बात कए रहल छी। लेबाक होअए तँ लिअ नहि तँ छोड़ि दिऔ।”आर की की बजैत रहि गेलाह।हम हुनकर शब्दक चयनपर बहुत आपत्ति केलिअनि।कहबो केलिअनि जे अहाँ अपन गामक नाम घिना रहल छी। सए-दू सए टाकाक लेल एहन स्तरहीन बात कए रहल छी।लगेमे ठाढ़ दूटा मुसलमान जे उर्दू भाषा जनैत छलाह,सेहो आपत्ति केलकनि । मुदा हुनका लेखे धनसन।ओ टाका धेलाह आ निश्चिन्त भावसँ अपन काजमे लागि गेलाह।हम हुनका कतबो बुझेबाक प्रयास केलहुँ,सभ व्यर्थ। हम माथ पकड़ने आगू बढ़ि रहल छलहुँ कि दिल्लीसँ श्री कामेश्वर चौधरीजीक फोन आएल।हुनका संगे गप्प करैत मोन हल्लुक भेल।संयोगसँ हमर मोबाइल फोन श्रीनारायणजीकेँ लागि गेल रहनि। ओ ओहि आदमीक संग हमर समस्त वार्तालाप सुनैत रहि गेल रहथि।साँझमे जखन हम वापस डेरापर अएलहुँ तखन ओ सभटा गप्प बुझलनि।

नहि कहि सकैत छी जे कचहरीमे भेल ओहि दुखद अनुभवकेँ बिसरबामे कतेक मोसकिल भेल छल। मोनमे बेर-बेर होइत छल-

“सएह कहू,केहन भए गेल अपन सहर अपन गाम-घर?”

मधुबनी सहरमे अखनो किछु विशेषता देखाएल। जेना एहि ठाम तरकारीसभमे गजब स्वाद अछि। भांटा,सजमनि,कदीमा,ओल,खम्हाउर सभ अद्भुत स्वादिष्ट। मुदा कोबी सभक रंग-ढंग बदलल-बदलल बुझाएल। छोटका फुलकोबीसभ नहि देखाएल।ओना गिलेशनक तरकारी बजार तरकारीसँ भरल रहैत अछि।सहरमे कैकटा प्रतिष्ठित दोकानसभ सेहो अछि।मुदा अहाँकेँ जनतब हेबाक चाही जे कोन वस्तुक कोन दोकान नीक अछि।ओना अनचोके यदि कोनो दोकानमे चलि जाएब तखन से बात नहि बुझाएत।किछु मौलसभ सेहो खुजि गेल अछि।होटलसभ सेहो उपलब्ध अछि जे एसीयुक्त कोठरीसभ सुलभ करबैत छथि।

एक बेर फेर हम मधुबनी सहरमे आबि चुकल छी। अपन मित्र श्रीनारायणजीक संगे हुनके घरक भूतलमे रहि रहल छी। एहिठाम रहबाक लेल जरुरी सभटा सामान आनलाइन कीनि चुकल छी। काजबाली,भनसिआ,दूध देनिहार सभक व्यवस्था श्रीनारायणजी पहिनेसँ कए देने छथि।तेँ एहिठाम रहबामे कोनो दिक्कतिक प्रश्ने नहि उठैत अछि।बहुत रास सामानसभ घरेसँ फोनपर श्रीनारायणजी लिखा देलखिन आ थोड़े कालक बाद सभटा सामान रिक्सापर घर पहुँचा देलक।ओकरा फोनपेपर भूगतान कए देलिऐक। दिल्ली,नोएडा जकाँ एहिठाम बिगबास्केट,ब्लिंकइट,जेप्टोसन त्वरित सामान पहुँचाबए बला व्यवस्था भने नहि होइक,मुदा घरे बैसल सामान एतहु आबि जाइत अछि। फेर एमजोन,फ्लिपकार्ट आ जीओमार्ट सेहो एहि ठाम उपलब्ध अछि। बहुत रास सामान हम आनलाइन कीनलहुँ अछि। पानि पीबाक लेल बिसलेरी सेहो एहिठाम भेटि जाइत अछि। पाँच-पाँच लीटरक बोतलसभ प्रचूर मात्रामे कीनि कए राखि

लैत छी। गाम लए जेबाक लेल सेहो पानिक बोतलक जोगार एमजोनक मारफत भए जाइत अछि। कहब जे पानि किएक कीनैत छी? बात तँ सही ,मुदा स्वास्थ्यक ध्यान रखैत से करब उचित बुझाइत अछि। एक दिन रातिमे बहुत रद्द भेल,जखन कि किछु अदन-कदन नहि खेने रही। तखन सोचबामे आएल जे पानि बदलबाक कारण ई उकबा भेल होएत। ओना गामोपर नवका चापाकलक जोगार भेल अछि जे करीब चारि सए फीट नीचाँ धरि धसाओल गेल अछि। ऊपरमे पानि भेटबे नहि केलैक। निश्चय ई चिंताजनक स्थिति तँ अछिए।पानि एतेक नीचाँ किएक चलि गेल? असलमे पोखरि-इनारसभ सुखा गेल,किंवा नष्ट भए गेल।जल संरक्षणक ई नैसर्गिक पुरान तरीका आब रहल नहि। ऊपरसँ दिन-राति गृह निर्माण होइत रहैत अछि।ताहूसँ जलक स्तर नीचाँ जा सकैत अछि। आब बहुत गोटे सबमर्सिबल पंप गड़बा लेने छथि। देखा चाही कतेक दिन धरि ओहो चलि सकत।

दू-तीन दिन मधुबनी बजारसँ किछु-किछु सामानसभ अबैत रहलाक बाद मधुबनी सहरमे हमरा लोकनिक गृहस्थी व्यवस्थित भए गेल ।मधुबनीसँ अड़ेर डीह टोल जाएब-आएब आब बहुत आसान भए गेल अछि। जखन चाही टेकर,बस सभ सुलभ अछि। हमर डेरासँ बस स्टेंड(गंगा सागर लग) बीस-तीस टाकामे चलि जा सकैत छी। तकर बाद ओहि ठामसँ बेनीपट्टी जाए बला कैकटा बस खुजैत अछि।अन्यथा मिथिला टाकीजसँ सटले अड़ेर गेनिहार टेकरसभक पाँति लागल रहैत अछि। किशोरीलाल चौकपर चलि जाउ तँ आर नीक,कारण बीचक जामसँ बँचि सकैत छी।

गाममे किछु विशिष्ट लोकसभसँ भेंट

श्री रामेश्वर महतोजी

हम जखन नौकरी करए दिल्ली गेल रही तखन पहिल राति कोनिआ टोलक श्री रामेश्वर महतोजीक ओहिठाम मंगोलपुरीमे रहल रही। ओ दिन छल २ अगस्त १९७७।तीन अगस्तक हम नार्थ ब्लाकमे पदभार ग्रहण केने रही।ओहि समयमे रामेश्वरजी बीएसएनएलमे काज करैत रहथि।पहिनेसँ हमरा हुनकासँ संपर्क छल।बादमे हम इलाहाबाद चलि गेलहुँ आ हुनकासँ संपर्क नहि रहल। मुदा ओ हमरा मोनमे गड़ल छलाहे।हम नारायणजीसँ हुनका बारेमे यदा-कदा चर्चा करैत रहैत छलहुँ। कमलाकान्तजी सेहो हुनका बारेमे जानकारी दैत रहैत छलाह।एहि बेर जखन गाम गेलहुँ तखन नारायणजी हुनकर मोबाइल नंबर देलनि। हुनकासँ गप्प भेल। ओ कतहु बाहर रहथि। तकर बाद ओ गाम आबि कए हमरासँ भेंट केलथि। एतेक दिनक बाद हुनकासँ भेंट करब बहुत आनन्ददायी अनुभव छल । हुनकर एकटा वालक अमेरिकामे उच्च पदपर छथिन।दोसर वालक श्री रविशंकरक शिष्य छथि आ ओहीमे रमि गेल छथि। ओ अपनो बहुत आध्यात्मिक विचारक छथि आ अनेक धार्मिक समस्थासभसँ जुड़ल छथि।गाममे दुनू बेकती रहैत छथि आ यथासाध्य परोपकारमे लागल रहैत छथि।

डाक्टर कमलाकान्त भंडारी

गाम पहुँचलाक बाद निर्माणाधीन हमर घरक पहिल पाहुन भेलाह,आदरणीय डाक्टर कमलाकान्त भंडारीजी।कमलाकान्तजी परिचयक मोहताज नहि छथि। प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर शुभद्रझाजीक मार्गदर्शनमे ओ कबीरदास मैथिल छलाह,विषयपर पीएचडी केने छथि। हुनकर शोध प्रबंध मिथिलामे चर्चाक विषय अछि। कमलाकान्तजी हमरासँ निरंतर संपर्कमे छथि ,हमर बहुत शुभचिंतक तँ छथिहे।ओहि दिन जखन ओ अएलाह तँ मोनमे बहुत हर्ष भेल। ओ पहिल व्यक्ति छथि जे मकान निर्माणमे सभ तरहेँ मदतिक लेल आश्वासन देलथि।बड़ीकाल धरि हमसभ आपसमे चर्चा करैत रहि गेलहुँ। हुनका चाह,सुधाक पेरासँ स्वागत केलिअनि।ओ अपने कहलथि-

“ई तँ अखन शुरुआत छैक।मकान बनि जेतैक तखन तँ सभ तरहेँ सुविधा रहतैक।”

बादोमे ओ फेर एक दिन आएल रहथि।निर्माणाधीन मकानक प्रगतिसँ संतोष व्यक्त केलनि। कमलाकान्तजी सन लोक अपन समाजमे बहुत दुर्लभ भए

गेल अछि।सभ तरहेँ संपन्न रहितहु ओ एतेक विनम्र छथि से निश्चय बहुत दुर्लभ अछि अपन समाजमे।

oooooooooooooooo

मधुबनीसँ गाम अबैत-जाइत

मधबनीमे डेरा व्यवस्थित भए गेलाक बाद गाममे बनि रहल घरपर ध्यान केन्द्रित भेल। ओहि क्रममे मधुबनीसँ गाम आएब -जाएब चलैत रहल। मधुबनीसँ गाम जाएब बहुत आसान अछि।एहि ठामसँ बस तँ जेबे करैत अछि,मधुबनीसँ बेनीपट्टी,रहिकाक लेल निरंतर आटो रिक्सा सेहो जाइत रहैत अछि। कैकटा यात्रीक संगे सामिल भेलापर मधुबनीसँ अड़ेरक भाड़ा तीस रूपया लगैत अछि। बसोसँ एतबे भाड़ा लगैत अछि।वार्ड नंबर उनतीस,वाल्मीकि बस्ती मधुबनीमे अवस्थित हमर डेरासँ गंगासागर बस स्टाप वा किशोरीलाल चौकपर जेबाक लेल कोनो स्पष्ट व्यवस्था नहि अछि। कनी काल पैरे चलू, तकर बादे रिक्सा भेटि सकैत अछि। कैक बेर तँ बहुत पैरे चलए पड़ैत अछि। सामान्यतः तीस-चालीस रूपया भाड़ा लगैत अछि। गंगा सागर बस स्टापसँ अड़ेरक लेल १२।५० पर बस खुजैत अछि। तकर बादो कैकटा बस अछि। एक घंटासँ पहिने ओ मधुबनीसँ अड़ेर पहुँचा दैत अछि।यदि अहाँ बसस्टापपर कनी पहिने पहुँचि गेलहुँ तखन तँ बसमे सीट भेटत नहि तँ ठाढ़े जाए पड़ि सकैत अछि। मुदा हम पहिने पहुँचि जाइ आ बसमे चैनसँ बैसि जाइ। अपन सीटपर बैसल-बैसल अखबार पढ़ी,ताबे बस भरि जाइक आ हुर्र-हुर्र कए बस खुजि जाएत।

बेटीक शिक्षा

बसमे बैसले-बैसल तरह-तरहक लोकसभसँ संपर्क हेबाक अवसर भेटैत अछि। ओहि समयमे इसकूलसभमे परीक्षा चलि रहल छलैक। परीक्षा समाप्तिक बाद बहुत रास वालिकासभ बसमे चढ़ैत देखाइत छलि। एक बात तँ अबस्स ध्यान देबाक अछि। अपना ओहि ठाम बहुत रास वालिकासभकँ शिक्षकक नौकरी भेटलनि अछि। गाम अबैत-जाइत बस,टेकरसभमे एहन शिक्षिकासभ देखाइत रहैत छथि। एक प्रकारसँ ई सामाजिक क्रान्तिए भेल अछि जे ग्रामीणो क्षेत्रमे एतेक रास महिलासभ नौकरी कए रहल छथि। एक दिन तँ मधुबनीसँ अपन गाम जाइत काल दूटा वालिका भेठलथि। ओ सभ हालेमे शिक्षकक नौकरी प्राप्त केलाक बाद काज कए रहल छलीह। ओहिमे सँ एक गोटे बक्सरक रहए बाली रहथि। दोसर झंझारपुर लगक कोनो गामक। दुनू गोटे उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक लेल जा रहल छलीह। रस्तामे बहुत रास गप्प-सप्प भेल। ओ सभ हमर मैथिली पोथीसभमे रुचि सेहो देखओलनि। हम हुनका गुगलमे अपन नाम लिखबाक आग्रह केलिअनि। से करिते हुनका हमर लिखल मातृभूमि,लजकोटर आर आर कतेको पोथीसभक नाम उचरि गेलनि।से देखि ओ सभ प्रभावित भेलीह। हम हुनका अपन किताब देबाक लेल उत्सुको भेलहुँ,मुदा ओ सभ मैथिली पोथी पढ़बामे अपन असमर्थता व्यक्त केलनि। अपन गाम अएलाक बाद हम उतरि गेलहुँ आ ओ सभ उच्चैठ चलि जाइत रहलीह। ओ सभ उच्च शिक्षा प्राप्त छलीह आ आत्मविश्वाससँ परिपूर्ण बुझेलीह।

आब अपनो दिस लोकसभ अपन बेटीसभकँ इसकूल,कालेज पठा रहल छथि। आब पहिलुका बात नहि रहलैक जे बेटीकँ जेना-तेना जतए-ततए बिआह कए देल जाए आ माए-बापक कर्तव्यक इतिश्री भए गेल। आब बेटासँ बेटी अपन माए-बापक ध्यान रखैत अछि। ई बात जगजाहिर अछि। बेटीक माता-पिता अपन

बेटीकेँ उच्च शिक्षा किंवा नौकरीक लेल बंगलोर,दिल्ली ,विदेशो धरि पठेबामे संकोच नहि करैत छथि। बेटीसभ उच्च शिक्षा आ नौकरी प्राप्त कए लेबाक बाद परिवारपर भार नहि रहि जाइत छथि।अनेक मामिलामे स्वेच्छासँ बिआह करैत छथि हुनकर माता-पिता एकरा सहर्ष स्वीकार कए रहल छथि।

अड़ेर डीह(डोमटोल)

हमरा गाममे प्रवेश करितहि डोमसभक घर छनि।बहुत पहिने ओहि बाटे गेलापर नाक मुनए पड़ैत छलैक। लोकसभमे ई धारणा छलैक जे हुनकर सभक छाँहो नहि पड़ए।हम स्वयं ई सभ देखने छी।कहबाक काज नहि जे हुनका लोकनिक सामाजिक,आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय छल। हुनका लोकनिकेँ आपसमे मालिकसभक बटबारा रहैत छलनि। पाबनि-त्योहारमे ओ सभ अपन-अपन मालिकसभकेँ बाँसक वर्तन बना कए दैत छलाह। कैक बेर विधो करबाक लेल हुनकासभकेँ बजाओल जाइत छलनि। मुदा आब हालति साफे बदलि गेल अछि। ओहिठाम हम कतेको काल ठाढ़ रहलहुँ,मुदा दुर्गंध नहि लागल।आब ओहोसभ बहुत सफाइ रखैत छथि।सुनबामे आएल जे ओहीमे सँ तीन गोटे सरकारी नौकरीमे छथि आ अगल-बगलमे घड़ारीक लेल जमीन कीनि लेने छथि। किछु गोटेकेँ सरकार पुस्तकालय लग बसबाक लेल जमीन देलकनि अछि,मुदा अखनहु बेसी गोटे पुरने बासपर रहि रहल छथि जे धारक काते-काते अछि।

हुनका लोकनिक घरक ठीक सामने आ सटल हमरा टोलक कैकटा ब्राह्मण लोकनिक घर छनि। पुरीक शंकराचार्य किछु साल पूर्व ओहिठामसँ मोसकिलसँ दस डेग फटकी एकटा ब्राह्मणक घरमे रहल रहथि। पहिने डोमलोकनिक घर डीहे टोल कहल जाइत छल। आब ओहिठामसँ सटले इसकूल अछि जाहिमे डोम टोल लिखल देखाएल।हम जखन जाइत रही तखन संभवतः दूपहरिआक एक बाजि रहल छलैक। बच्चासभ इसकूलमे भोजन कए रहल

छल।किछु बच्चासभकेँ अपन थारीमे भोजन लेने घर जाइत सेहो देखलहुँ। सरकारक ई योजना बहुत नीक अछि। कम सँ कम एहू बहन्ने बच्चासभ इसकूल पठाओल जाइत अछि।कैक बेर इसकूल भम्ह पड़ैत देखाएल,मुदा शिक्षकसभ बैसल रहथि। सरकारक नव योजनाक ई परिणाम भए सकैत अछि। सुनलिऐक जे आब हुनको सभकेँ अपन उपस्थिति मसीनपर दर्ज करबए पड़ैत छनि।

बेसक हुनकासभकेँ समाज ओछ दृष्टिसँ देखने छलनि,मुदा असलमे ओ सभ छथि महान कर्मयोगी। जखन कखनहु ओहि बाटे जाउ हुनकालोकनिक संपूर्ण परिवार बाँसक वर्तनसभ बनबैत देखेताह। ओ वर्तनसभ गुलाबी रंगमे रंगल-ढंगल बेस आकर्षक आ उपयोगी होइत अछि।अफसोचक बात अछि जे एहन महान कलाकार लोकनिकेँ अखनहु उचित मूल्यांकन नहि भए रहल छनि। हुनका लोकनिक काजक उचित पारिश्रमिक नहि भेटैत छनि।स्थानीय समाजसेवी,नेता आ राजनीतिक कार्यकर्ता लोकनिकेँ चाहिअनि जे एहि विषयपर सरकार आ अन्य संबंधित संस्थाक ध्यान खिचथि। हुनकरसभक सामान आनलाइन एमजोन,फ्लिपकार्टपर बिकाइनि,तकर व्यवस्था कएल जाए।ओना मधुबनीमे बाटा चौक लग हम एहन सामानसभ बिकाइत देखलिऐक।संभवतः मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रक उपेक्षित समुदायक कृतिकेँ लाभकारी हेबाक दिशामे ई सही प्रयास होइक।

मद्य निषेध

गाममे अबैत-जाइत बिजलीक खंभासभमे सरकारक महत्वाकांक्षी मद्य निषेध योजनाक समर्थनमे संदेश लिखल देखाएल। ओहिमे ईहो लिखल छल जे एहि नियमकेँ भंग केनिहार व्यक्तिक सूचना फलना नंबर पर देल जाए जाहिसँ ओकरा कानूनक हिसाबसँ दंडित कएल जा सकए। सरकारक एहि योजनाक कतेक फएदा आम जनताकेँ भेलैक किंवा भए रहल छैक से कहब बहुत

मोसकिल। समय-समयपर विषाक्त दारू पिलासँ पिनहारक अकालमृत्युक समाचार जरूर छपैत रहैत अछि। न्यायालयसभमे एहि तरहक मामिलाक अम्बार लागि गेल अछि। माननीय उच्चतम न्यायालय सेहो एहि कानूनकेँ उचित संशोधन लेल कहि चुकल अछि। ताहि दिशामे किछु-किछु कएलो गेल अछि। मुदा ई तय अछि जे ई कानून अपन लक्ष्य नहि प्राप्त कए सकल।

एक दिन हम मधुबनीमे रिक्सापर बैसल रिक्सा बलासँ पुछलिऐक-

"लोकसभ तारी-दारू पीनाइ छोड़लक कि नहि?"

"एहनो कहीं छोड़ि दैक।सभ पिबै छै? बस पहिने दस टाकामे एक सीसी दैक,आब तकरे दाम चालीस रूपया लगैत अछि।"

"तूँ पिबैत छहक कि नहि?"

"नहि पीबै तँ जीबो करबै?"

आब अहीं कहू जे कानून लोककेँ केमहर लए जा रहल अछि। थाना,कचहरीक चक्कर जरूर बढ़ि गेल छैक,मुदा पिनाइ चलिए रहल अछि,साइत चलिते रहत।

असलमे कानून तँ बहुत अछि,मुदा जा धरि लोकक चरित्र आ व्यक्तित्व नहि सुधरत ताधरि कानून की करत? दहेज विरोधी कानून तँ कहिआसँ अछिए। मुदा दहेज अखनहु कोनो-ने-कोनो रूपमे समाजमे चलिए रहल अछि।महग-महग सामान जेना कार,फ्रीज,टेलीवीजनक अपेक्षा कएल जाइत अछि।

"हमरा आर किछु नहि चाही। अहाँ लोकनिक कृपासँ भगवान कथुक कमी नहि रखने छथि।सभ किछु अछि,जमीन,अपन मकान,मधुबनी,दरभंगामे घर,कैकटा प्लाट तँ अछिए,संगे हमर बच्चासभ पढ़बामे सभ दिन औअलि अबैत रहलाह। तखन अपनेक जे इच्छा।से हम मनो तँ नहि कए सकैत छी। बरिआती

दू-तीन सएसँ कम भइए नहि रहल अछि। ककरा छोड़िऔक?सभतँ अपने छैक। बरिआतीक नीकसँ सम्मान भए जानि बस एतेटा ध्यान राखब। पाग-डोपटा तँ आब सभ दैत छैक। अहाँक तँ बहुत नाम अछि। से अपन देखि लेब।हमरा आब कोन?अंतिम पौदानपर छी।कखन छी,कखन नहि छी। ईहो घर तँ अहींक भेल।काल्हि जा कए अहींक नाति सर्वेसर्वा हेताह।तखन तँ घी हराएल तँ दालिमे ने।बात सही छै कि नहि?"बेटी बला बकर-बकर सुनैत रहि जाइत छथि।आदर्श बिआहक लक्षमण रेखा खिचबामे व्यस्त वरक पिताकेँ कहाँ पलखति छनि जे ओ किछु सोचताह?

पहिने मैथिल ब्राह्मण लोकनिक बिआह अधिकांशतः सभागाछीसँ होइत छलनि। घरकथासँ बहुत कमे लोकक काज होइत छलनि। सभागाछीमे वर-कनिआ पक्षक लोकसभ आपसमे विचार-विमर्श करैत छलाह,मोल-मोलइ करैत छलाह आ बिआह पटि गेलाक बाद सभेमे सिद्धान्त होइत छल। तखन अचानक गामपर ककरो माध्यमसँ समाद देल जाइत छल जे रातिमे बिआह हेतैक । गामपर पाँच-सातटा कुर्सीक जोगार कएल जाइत छल।लगपासक दोकानसँ मधुर ,अन्य भोजन सामग्रीक जोगार होइत छल।ओमहर सभासँ हहाइत-पुफाइत वर,बरिआतीक संगे कन्या पक्षक लोकसभ दूपहर रातिमे अबैत छलाह आ तखन बिआह होइत छलैक। गीत-नाद होइत छलैक। भोर होइत-होइत बिआह संपन्न। बादमे कोजागराक समयमे उत्सव कएल जाइत छल। आब तँ बिआहक रातिए मे से धमगिज्जर होइत अछि जकर वर्णन करब मोसकिल। बसक-बस बरिआती आनल जाइत अछि। ओहिमे सभ किछु यंत्रवत चलैत रहैत अछि। बिसलेरीक बोतएल आएल,पाकेटमे जलखै आएल,चाह-पान भेलैक।घंटा भरिक बाद भोजनक लेल तैयारी शुरू भेल आ बारह बजैत-बजैत भोजन संपन्न। बरिआतीसभ आब जाथु,जतए जेबाक होनि से ओ जानथि। वर सेरबानी पहिरने पंजाबी वर जकाँ

मंचपर विराजित हेताह,कन्याकेँ जयमाल पड़तनि,ओ मंडप धरि फूलसँ सुसज्जित चद्दरिक तरमे बिआह मंडपमे आनल जेतीह।ओहिसँ पहिने दिनमे मेहदीक विध कएल जाएत। वरक ओहिठामसँ महिलासभ कन्याक ओहिठाम मेहदीक रसम करैत छथि। मैथिल ब्राह्मणक बिआहक प्रक्रिया चौपट भए चुकल अछि। मैथिल संस्कृतिक ओहिमे कतहु नामोनिसान नहि भेटत।

मधुबनीसँ गाम अबैत-जाइत एकदिन एकटा आटो रिक्सा बला भेटलाह। ओ सौराठ गामक छलाह ।गप्प-सप्पक क्रममे परिचयक बाद ओ सौराठ सभाक वर्तमान स्थितिक लेल मैथिल ब्राह्मणकेँ दोषी मानलनि। कहलाह-

“ओ सभ आब ब्राह्मण रहलाह कहाँ।आब तँ सभ बभना भए गेलाह। दारू पीबैत छथि,मीट खाइत छथि,की नहि करैत छथि। विद्या,चरित्रमे हीन भए गेल छथि।समाज कथीपर इज्जति करतनि?अहीं कहू।हम सही बाजि रहल छी कि नहि?” ओ आर-आर बातसभ बहुत तर्कपूर्ण रूपसँ रखैत रहलाह। हुनकर गप्प करबाक शैली गजब छल।हम हुनकर बात बहुत ध्यानसँ सुनैत रहि गेलहुँ। हमरा ओ पढ़ल-लिखल लोक बुझेलाह। हम हुनकर परिचय पुछलिअनि।ओ अपन गामक नाम,अपन नाम कहबो केलनि। बेसक कठाइनि लगौक,मुदा हुनकर बातमे दम तँ बुझाइत छल। समाजक एहन स्थिति किएक भेल?एकर की समाधान अछि?एहिसभ बातपर सोचबाक काज अछि।तखने किछु सुधारक आशा कएल जा सकैत अछि।”

तहिना बेटीसभकेँ पैतृक संपत्तिमे कानूनी अधिकार तँ भेटले अछि,मुदा व्यवहारमे की भए रहल अछि से कोनो नुकाएल नहि अछि। सामाजिक सुधार लेल लोकसभमे जागरुकता जरूरी अछि,व्यवहार आ कानूनमे समरुपता तखने भए सकैत अछि।

गाममे सरस्वती पूजा

एहि बेर सरस्वतीपूजाक समयमे हम गाममे रही। अपन दनानक आगू हनुमान मंदिरपर बैसल रही। एकटा विद्यार्थी सरस्वतीपूजाक आमंत्रण पत्र बाँटि रहल छलाह। हमरो दनान दिस गेलथि। हमरा उत्सुकता भेल।की पता हमरो हकार देल जाएत? हम हुनका अपन   पिताक नाम पुछलिअनि।मुदा नहि चिन्हि सकलिअन।तखन बाबाक नाम कहलाह।

“ओ अहाँ मुनि भाइक पौत्र छिअनि।”

“हँ।”

“हम धीरेक जेठ भाए छिअनि।”

से सुनि ओ चकित छलाह।हम पुचलिअनि-

“की बाँटि रहल छी?”

“सरस्वती पूजाक हकार छैक।”

“कतए हेतैक पूजा?”

“कोचिंग इनस्टीच्यूटपर।”

आर ओ आगू बढ़ि गेलाह,संभवतः आर ककरो आमंत्रण पत्र देबाक लेल।हम गुम रही,सोचैत रहि गेल रही।एहन परिस्थिति किएक भेल?की प्रवासीक लेल गाम एकटा दुखद स्वप्न बनि कए रहि गेल अछि? जीवन भरि सरस्वतीक आराधनामे लागल व्यक्तिकेँ ओकरे गामक सरस्वती पूजामे हकारो नहि। हम एहि घटनाक चर्चा आदरणीय श्री सुबोध नाथ झाजी(भूतपूर्व आइ ए एस) सँ फोनपर गप्प-सप्प क क्रममे केलहुँ। ओहो चकित छलाह, खूब हँसबो केलाह।

अपना इलाकामे सरस्वती पूजा आब घर-घर मनाओल जाइत अछि। पहिने सरस्वती पूजा इसकूलसभमे मनाओल जाइत छल। ओतहि लगपासक लोकसभ दर्शनक लेल जाइत छलाह। बुनिआ,केसौर,बतासा प्रसादमे बटाइत छल। ओही अवसरपर हमर गामक आशुकवि स्वर्गीय नाथ कहने रहथि-

पश्चिम इसकूल पूरब धार

जनता हेलि-हेलि भेला पार

मिडिल इसकूलसँ आएल हकार

पुरए गेलहुँ सेहो बेकार

संभवतः प्रसाद नीकसँ नहि भेटलापर एहन कविताक सृजनक प्रयोजन भेल होइक। स्वर्गीय नाथ वैद्य छलाह आ गाममे केओ अस्वस्थ भेलापर हुनका बजबैत छलनि। ककरो बोखार भेलैक तँ ओ बिज्वर भेल कि नहि,से निर्णय नारी देखि कए नाथे करैत छलाह।नाथ यदि कहि देलखिन जे एक दिन रुकू तखन रोगीकेँ पथ्य नहि देल जेतनि। ओमहर रोगी भूखसँ बेहाल रहैत छलाह। ओहि समयमे बोखारक इलाज रोगीकेँ उपास करबाइए कए होइत छल। हमरा मोन परैत अछि जे हमरे दिआदमे एकटा बच्चा एहिना बोखार भेलापर कतेको दिन सहैत रहि गेल छल जाहिसँ ओकर आँत ओझरा गेलैक। बहुत मोसकिलसँ दरभंगामे शल्यचिकित्साक बाद ओकर जान बाँचि सकल छल।आब तँ पारासिटामोल दिऔक आ भोजनो करबैत रहू। रोगीक लेल बोखार होएब ततेक भयाओन समस्या नहि रहि गेल अछि।

सरस्वती पूजा आब घरे-घर मनाओल जाइत अछि। पूजाक परात कैकठाम तँ बच्चासभकेँ डीजेपर नाच करैत देखिलिऐक। सरस्वती पूजाक गरिमाक ध्वस्त करैत तेहन-तेहन गीत सभ बजाओल जा रहल छल,बच्चासभ तेना-तेना नाचि रहल छल जकर पहिने कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल।

ई एकटा आन्दोलने छल

एहि बएसमे गाममे घर बनाएब हमरा लेल एकटा आन्दोलने छल। जकर आब सफलता सामनेमे देखा रहल छल।तेँ हमरा एहि काजकेँ करबामे आ ताहिसँ जुड़ल काजसभमे बहुत आनन्दक अनुभव होइत छल। मकान बनैत देखि ,ओकरा नित्य प्रति अग्रसर होइत देखि बहुत नीक लगैत छल। तेँ हम अरबधि कए जेना-तेना गाम जाइते छलहुँ। ताहि लेल बस,टेकर,आटो जे किछु भेटि जाइत छल तकर उपयोग करैत छलहुँ।गाम जेबासँ पूर्व झोरामे बिसलेरीक बोतल,अमुलक छाछ,केरा,बिस्कुट सहित अनेक प्रकारक जलखैकक सामान संगे रखैत छलहुँ।समय-समयपर ओहिमे सँ किछु-किछु मिस्त्रीसभकेँ सेहो दिअनि।ओ सभ बहुत आह्लादपूर्वक तकरा ग्रहण करैत छलाह।एहि तरहेँ मधुबनीसँ गाम यात्रा एकटा पिकनिक पार्टी सन भए जाइत छल। हम तकर भरिपोख आनन्द उठबैत छलहुँ। कैक बेर हम बहुत थाकि जाइत छलहुँ। एकाध बेर तँ हमर मोनो खराप भए गेल छल। जनबरीक अंतमे मौसम बहुत खराप रहैक। संभवतः ठंढ लागि जेबाक कारण रातिमे रद्द भए गेल। बादमे जखन मौसम गरम होइत गेलैक तखन समस्या बेसी कठिन होइत गेल। गाम आएब-जाएब ओहि ठाम रहब ,बेसी कष्टकर होमए लागल। मुदा मकानमे काज जोर पकड़ने जा रहल छल। हमर उपस्थिति जरूरी बुझा रहल छल। हमर इच्छा छल जे यदि संभव होइ तँ गृहप्रवेश एही बेरक यात्रामे कए ली। ताहि लेल बहुत पहिने सँ पण्डित राघवेन्द्रजी दिन ताकि देने रहथि-तीन मई आ सात मईक। हम सोचने रही जे यदि एक्हुटा कोठरी बनि सकत तँ गृहप्रवेशक विध कए लेब।

मकानक काजक कुंजी ठीकेदार आ मिस्त्री तैयबक हाथमे छलैक। ओ अपना हिसाबे चलि रहल छल। जे ओकर काजक प्रगति छलैक,ताहि हिसाबे सात मईक कार्यक्रम फेल होएबेक छल। ओकरा कतबो कहिऐक,ओ किछु कए नहि

पाबि रहल छल। ऊपरक तलक काज सेहो ढ़ील कए देने छल। हमरा इच्छा छल जे ऊपर तलमे लिंटर धरिक काज भए जाइ तकर बाद एक सप्ताह नीचाँ पूरा शक्तिसँ काज होइ । मुदा पाँच दिन तँ लगभग किछु काज नहि भेल। उपरक तलमे लिंटरक काज नहि भए सकल।नीचाँ तलपर तँ किछु भइए नहि रहल छल।पलंबर अपन काज कए चुकल छल। बिजली मिस्त्री सेहो अपन काज कए चुकल छल। ओकर सभक आगूक काज तँ प्लास्टरक बादे हेबाक रहैक। से तैयबे करताह,मुदा ओ उचित ध्यान नहि पाबि रहल छलाह। तखन एक दिन तैयबक अनुपस्थितिए मे हम बहुत जोरसँ बिगड़लहुँ। आन मिस्त्रीसभ तैयबकेँ सभ समाचार देने हेतनि। तकर असरि हुनकापर भेलनि। हमरा तामसक कारण ई छल जे हम तैयबकेँ वारंबार अपन मजबूरी कहने रहिअनि-

"हमसभ प्रवासीछी।मधुबनीमे डेरा लेने छी। किराया,नौकर-चाकर सभपर अनट खरचा भए रहल अछि। बएसो एहि काजसभक अनुकूल नहि अछि। तथापि अपन गाममे एकटा घर बनेबाक लालसाक कारण लागल छी,सभ कष्ट बरदास्त कए रहल छी।अहाँकेँ एहि बातपर सोचबाक चाही।"

तकर उत्तरमे तैयब कहलाह-

"पाँच कोसमे ककरो मकान एतेक कम समयमे एतेक आगू धरि नहि पहुँचल होएत।काज होएबे करतैक।अहाँ बेसी चिंता नहि करू।"

"से बात ठीक। अहीं कहू जे पाँच कोसमे कैकटा एहन लोक अछि जे दिल्लीसँ मधुबनीमे डेरा राखि गाममे घर बना रहल अछि?"

"से बात जायज कहि रहल छी। हमसभ जी-जानसँ प्रयास करब जाहिसँ अहाँक स्वप्न पूरा भए सकए।"

दोसर दिनसँ एकर असरि देखबामे आएल। काज केनिहार मजदूरसभक संख्या दुगुन्ना भए गेल। लगभग दस दिन धरि ओ सभ बिहाड़ि जकाँ काज

केलाह।परिणाम भेल जे भूतलपर घर आन-आन मिस्त्रीसभ लेल उपलब्ध भए गेल। हम तकर बाद योजनावद्ध ढंगसँ कनीक बेसीओ खरचा कए बिजली मिस्त्री,पलंबर,पेंटर,टाइल्समिस्त्रीकेँ काजपर लगओलहुँ आ पाँच मई धरि घर लगभग तैयार भए गेल।

बादमे घटनाक्रम एहन भेल जे काज अपेक्षाकृत बेसी तेजी धए लेलक। ठीकेदार तैयब हमर बात सुनलनि आ दस दिन कार्यकर्तासभक संख्या दोबर कए देलनि। परिणामतः काज बहुत आगू बढ़ि गेल।हमर इच्छा छल जे ऊपरोक मंजिलक काज निर्वाध चलैत रहैक। ताहि लेल तैयबकेँ हम दू मास पहिनेसँ कहने रहियैक। मुदा ओ से नहि कए सकलाह। असलमे हुनको अपन मजबुरी रहल हेतनि। एक्के संगे कैकठाम काज चलबैत रहब हुनकर पेशागत मजबुरी छनि,नहि तँ जीवन निर्वाह केना हेतनि? आइ ने काल्हि हमर मकान बनि कए तैयार भए जाएत।तकर बादो तँ हुनकर जीवन चलबाक छनि कि नहि?

जखन नीचाँक तलपर प्लास्टरक काज भए गेल तखन आन-आन मिस्त्री(बिजली,पेंटिंग,टाइल्स,प्लंबर) सभक योजनावद्ध ढंगसँ उपयोग कएल गेल जाहिसँ काजमे आश्चर्यजनक प्रगति भेल। सात मईसँ पहिने मकान भीतरसँ पूर्णतः तेयार भए गेल। हम अपनो एहिसँ चकित छलहुँ। मुदा जखन से संभव बुझाएल तखन सभसँ पहिने श्रीनारायणजीकेँ सूचना देलिअनि आ कहलिअनि-

“हमसभ नओ मईक अहाँक मकान छोड़ि देबाक योजना बना रहल छी। असलमे पहिने हमरा ई मकान सितम्बर धरि रखबाक योजना छल। मुदा जखन गामक घरमे काज भए गेल तखन मधुबनीक घर रखबाक कोनो औचित्य नहि रहि गेल।पहिने तँ ईहो सोचने रही जे सत्येन्द्रजी सपरिवार जरूरी भेलापर ओहिमे रहि गामक घरक प्रथम तलक घरक काज करओताह।मुदा हुनकासभक से पसिंद

भेलनि।अपितु,ओ सभ दरभंगेमे अपन सासुरमे रहि गामक घरक देख-रेख करैत जेताह। तखन तँ बात स्पष्ट भए गेल।”

गामक बनैत घरमे पन्द्रह दिन असाधारण गतिसँ काज भेल।एक्के संगे विभिन्न प्रकारक अठ्ठारहटा मिस्त्रीसभ काज कए रहल छल। ओकरासभक आपसी ताल-मेल बड़की समस्या छल। कारण टाइल्स मिस्त्री बहुत विचित्र लोक छल। यद्यपि ओ अपन काजमे माहिर लगैत छल,मुदा एक समूहमे काज करबाक ओकरामे क्षमता नहि छलैक। ओ हमरो बात मानबाक लेल तैयार नहि होइत छल।अपन सुविधानुसार काज करैत छल।परिणामतः बिजली मिस्त्री,पेंटर,पलंबरसभकेँ दिक्कति होमए लगलैक। सभक काज एक-दोसरपर निर्भर छलैक।सभकेँ थोड़ेक स्वतंत्रता चाही,अपन काज करबाक लेल जगह चाही। टाइल्स मिस्त्रीसँ तीन बेर चिकरा-भोकरी करए पड़ल।परिणामतः कैक दिन धरि माथ दुखाइत रहल। दबाइओ खाए पड़ल।हमर हस्तक्षेपसँ दुखी भए ओ बड़बड़ाइत छल-

“हम एहन माहिर मिस्त्री छी,तकरा बुड़िबक बना देलक।”

पेंटर बहुत मेहनतिसँ काज केलक।मुदा अंतमे हिसाब-किताबमे ओ बहुत माथा-पच्ची केलक।बिजली मिस्त्री बहुत नफीस आ काजमे माहिर लोक छलाह।मुदा हुनकर फीस महग बुझाइत छल। सभ गोटे बहुत मेहनतिसँ सीमित समयमे काजकेँ पूरा केलनि जाहिसँ सात मईक गृह प्रवेश संभव भए सकल। राज मिस्त्री छोड़ि कए सभटा मिस्त्री हमर मित्र श्रीनारायणजीक सहयोगसँ भेटल छलाह। गामक तँ मात्र राजमिस्त्री छलाह।

गृह प्रवेश

सात मईक गृह प्रवेशक दिन ताकल छल।ओना हमरा कोनो उम्मीद नहि रहए जे ई संभव होएत,ने ताहि लेल कोनो अगुताइक जरुरति छलैक। जहिआ जे

हेबाक हेतैक,हेतैक।मुदा हमरासभकेँ आब मधुबनी डेरासँ ग्रेटर नोएडाक अपन आवासपर दस मईक वापस जएबाक कार्यक्रम पक्का छल।ताहि लेल कैक मास पहिने हम इन्डिगोक टिकट लए लेने रही। हमर पौत्र जखन कखनहु फोनपर देखाइत ओ बहुत दुखी भए जाइत छल। ओकरा अपन दादी बहुत मोन पड़ैत छलैक। एक बेर तँ ओ बाजल-

“पापा हमरा ओही बस स्टैंडसँ इसकूल बसमे चढाउ जाहि ठाम दादी रहैत छथि।”

हमसभ ओकरा कनैत देखि बहुत दुखी भए जाइत छलहुँ।मुदा काज करबाक छल,गाममे घर बनेबाक प्रतिवद्धता छल,ताही लेल मधुबनीमे ठहरल रही।तखन की करितहुँ?सभटा कष्ट बिसरि काजमे लागल रहलहुँ,अन्यथा काज नहि होइत।

गृह प्रवेशक सभटा ओरिआन करबाक भार हमर भातिज चंदनपर छलनि। ओ सभसँ पहिने पंडित श्री विश्वनाथजीसँ भेंट कए ओहि दिन हुनकर उपलब्धता सुनिश्चित केलनि। तकर बाद पूजाक लेल सामानसभक सूची बनबओलनि। फेर एक-एकटा सामानसभक जोगारमे लागल रहलाह। हमरा मोटा-मोटी पचीस गोटेकेँ बजेबाक इच्छा छल। मुदा बीच-बीचमे बिचार अबैत रहलैक जे कम सँ कम लोककेँ बजाओल जाइत छैक,गृह-प्रवेशक दिन किछु बाहर नहि जाइत छैक। हम दिल्लीमे पंडित राघवेन्द्रसँ फोनपर गप्पो केलहुँ। हुनकर मत छलनि जे ई सभ स्थानीय,पारिवारिक लोक परंपराक अनुसार कएल जाइत अछि। अंतमे पन्द्रह गोटेक भोजनक व्यवस्था करबाक निर्णय भेल जाहिमे दसटा तँ पारिवारिक सदस्ये रहताह। पाँचटा ब्राह्मण भोजन होअए सेहो बात पक्का भेल। सात मईक बहुत पैघ लगन छलैक। हलुआइ भेटनाइ मोसकिल छल। मुदा चंदन से केलनि। बहुत नीक भोजनक व्यवस्था कएल गेल। पर्याप्त

मात्रामे रसगुल्ला,छेना,पंतोआ लड्डू सभ आनल गेल।सात मईक पंडितजी समयसँ आबि गेल रहथि। राँचीसँ सत्येन्द्रजी हुनकर पत्नी आबि गेल रहथि। मुदा दिल्लीसँ हमर दुनू पुत्र नहि आबि सकलाह।कारण अचानक हुनका लोकनिक फ्लाइट रद्द भए गेलनि।

श्री नारायणजी

ओना तँ श्रीनारायणजीक बारेमे हम कैक ठाम लिखि चुकल छी,मुदा एमहर जनवरी २०२५सँ मई २०२५क बीचमे हुनका संगे जे रहबाक अनुभव भेल से अद्भुत छल,अपना-आपमे एकटा उपलब्धियो कहल जा सकैत अछि।निस्संदेह हम गाममे घर बनबैत छलहुँ,मुदा ओहिके पाछू यदि हनुमानजीक अतिरिक्त ककरो शक्ति,वुद्धि आ संपर्क,सामर्थ्य लागल छल तँ ओ छथि श्रीनारायणजी। पछिला दूसालसँ ओ अस्वस्थ जकाँ रहथि। शरीरमे कष्ट रहैत छलनि,तथापि हमर घर गाममे ठीकसँ बनि जाए ताहि लेल ओ की नहि केलाह।बढ़इ,पलंबर,बिजली मिस्त्री,पेंटर,टाइल्स मिस्त्री सभटा ओएह ताकि कए देलनि।असलमे ओ सभ हुनकासँ सालोसँ संपर्कमे रहथि।तकर फएदा हमरा भेटल। ओ सभ मधुबनीसँ अड़ेर डीह जा कए हमर मकानमे काज केलथि,से एक बेर नहि,अनेक बेर।ततबे नहि,मधुबनीक कोन दोकानसँ की कीनल जाएत से जानकारी ओएह देलथि। संगे-संग दोकान बला सभकेँ फोनो करैत रहथि। ओ सभ यथासाध्य हमरापर

विशेष ध्यान देलथि आ दामो मे किछु छूट दैत रहलथि।भवन निर्माण सामग्री श्री विमल खाण्डेलवालजीसँ लेल जाए,से विचार हुनके छलनि। विमलजी बहुत नीक लोक आ मधुबनीक प्रतिष्ठित व्यापारी छथि।हुनका ओहि ठाम उत्तमसँ उत्तम सामान भेटत से पक्का छल। दामो उचित आ से आनलाइन लेल जाएत।तहिना ग्रील बनेबाक लेल सभसँ उपयुक्त दोकान श्री शंभू महासेठजीक छनि।तकर जनतब श्री विमलजी देलनि। शंभू बाबू अपन काजसँ अपन श्रेष्ठता सिद्ध केलनि। नियत समयपर ओ ग्रील,द्वारिसभ बना कए दैत रहलाह।दामो उचित आ सामानक गुणवत्ताक गारंटी सेहो।आर की चाही?एहि सभसँ हमर चिंता कम भेल आ काज तेजीसँ आगू ससरल। केबाड़(रेडीमेड) आ अन्य संबंधित सामानसभ विजय ग्लाससँ लेबाक अनुशंसा श्रीनारायणजी केने रहथि ,जे सही सिद्ध भेल।पलंबरक सामान ए के इन्ट्रप्राइजसँ लेल गेल। मधुबनीक दोकानमे विक्रयक आधुनिकतम सुविधा देखबाक होअए तँ ओहिठाम चलि जाउ। एक सँ एक सामान एक्के ठाम ,सेहो बहुत सही मूल्यपर भेटि जाएत।अहाँक घर धरि सेहो पहुँचा देल जाएत।तखन समस्या की छैक?

गृह प्रवेशक दिन श्रीनारायणजी सपरिवार अएलथि। हुनकर ज्येष्ठ पुत्र(जे इसरोमे वरिष्ठ वैज्ञानिक छथिन) सेहो हुनका सभक संगे रहथिन।व्यस्तताक अछैत ओ सपरिवार एहि कार्यक्रममे सामिल भेलथि से बहुत सुखद अनुभव छल।एक हिसाबे गृहप्रवेश कार्यक्रमकेँ एहिसँ पूर्णता प्राप्त भेल,लागल जे लक्ष्य सिद्ध भए गेल।

गामक घर बनि गेल छल। आब मधुबनीमे डेरा राखबाक कोनो जरूरी नहि छल। तँ नओ मईक हमसभ मधुबनी डेराकेँ खाली कए देलहुँ।तकर पूर्व सूचना हमसभ श्रीनारायणजीकेँ देने रहिअनि। ओना पहिने ओहि ठाम सितंबर धरि रहबाक कार्यक्रम छल। मुदा आब तकर किछु औचित्य नहि रहि गेल छल।

हमसभ नओ मईक गामसँ मधुबनी गेलहुँ।पहिनेसँ ठेला लाल(बढ़इ)क माध्यमसँ तय छल। से आबि गेल। ओ सभटा सामान एक्के ठेलापर लादि लेलक,सामान छलहे ततबे ।संगमे लाल,बढ़इ सेहो अड़ेर धरि गेलाह आ सभटा सामान हमर गामक नवनिर्मित घरमे राखि देलनि। हम जखन गाम पहुँचैत रही तखन ओ सभ वापस अबैत रहथि। मधुबनीसँ बिदा हेबाक पूर्व हमर श्रीमतीजी आस-पासक लोकसभक घर जा कए मधुर बटलथि आ सुखद माहौलमे हुनकासभसँ बिदा लेलथि। असलमे ओहिठाम आसपासमे एकटा बहुत नीक पारिवारिक वातावरण अछि। सभ एक-दोसर ओहि ठाम अबैत-जाइत अछि।बैन-तिहार दैत अछि।ककरो घरमे यदि कोनो नीक तरकारी बनल अछि तँ ओ सभकेँ देत।समय-समयपर सामनेक ओशो आश्रममे विशेष कार्यक्रम सेहो होइत अछि ।ओहिमे आश्रमक सदस्य लोकनि अपन-अपन घरसँ किछु-किछु बना कए अनैत छलाह। जेना केओ तरकारी तँ केओ दालि,केओ भात तँ केओ खीर बना लेथि।एहि तरहेँ ओहि कार्यक्रममे सभक सहभागिता रहैत छल,एकटा सहभोजक आनन्द होइत छल।

ओशो परिनिर्वाण आश्रम ,मधुबनी

हमर मधुबनी डेराक ठीक सामनेने ओशो परिनिर्वाण आश्रम छल। ओहिठाम ओशोक भक्तलोकनि समय-समयपर भजन-कीर्तन करैत रहैत छथि। मुदा सभसँ विचित्र होइत छल एकदम भोरुका पहरमे एकगोटेक ध्यान। ओ तरह-तरहक अबाज निकालैत रहैत छलाह।अबाज ततेक विचित्र आ तीक्ष्ण आ जोरगर होइत छल जे केहनो सुतल आदमीक निन्न टूटि जाइत। हम एकर चर्चा ओहि ठाम किछु गोटेसँ केलिऐक। तकर बाद ओहन अबाज सामनेसँ नहि अबैत छल। अपितु,कनीक फटकीक मकानमेसँ ओहने अबाज होइत रहैत छल ।ओ सभ कहलनि जे ई ध्यानक एकटा विधा छैक। जे होइक,मुदा छैक तँ विचित्रे।

गाममे मूड़न

एहि बेर गाम यात्राक क्रममे कैकटा उत्सवसभमे सामिल होएबाक अवसर भेटल। सात फरबरीक कोमल भाइक पौत्रक मूड़न छलनि। तीन-चारि दिन पहिने ओ सभ दिल्लीसँ गाम आबि गेल रहथि। ओहिसँ पहिने दिल्लीए मे ओ हमरा मूड़नक हकार देने रहथि आ आग्रह केने रहथि जे हम एहिमे अबस्स सामिल होइ।संयोगसँ हमहूँ गाम आबि गेल रही। ओ हमरा देखितहि बहुत आह्लादित भेलथि आ आग्रह केलनि जे मूड़न भरि हुनके ओहिठाम रही। थोड़े काल हुनका ओहिठाम रहलहुँ।खूब स्वागत केलनि। चाह-पान भेलैक,नीक--नीक गप्प-सप्प भेलैक।फेर ओ अपन मकानक नव-निर्मित ऊपरका मंजिल देखबए लए गेलाह। हुनकर मकानमे स्टीलक केबार,खिड़कीसभ भरल छल। मकानक छतपर गेलासँ सौंसे गाम देखा रहल छल। चारूकात कोठे-कोठा भरल छल।अद्भुत दृश्य लागि रहल छल।एक समय छल जे गाममे तीन-चारि गोटे छोड़ि कए सभकेँ फूसक घर छलनि।आब सभकेँ कोठेक घर अछि।ककरो-ककरो दू महलो घर छनि।

मूड़नक दिन कोमल भाइ ओहिठाम बहुत आनन्ददायी दृश्य छल।ओ पहिने कहि देलनि जे रातिमे भोज खेबेक छैक,बेसक अहाँ तकर बाद मधुबनी चलि जाएब,तकर व्यवस्था हम करब।घरक सामनेमे बड़काटा सामियाना लागल छल। ओहिमे शताधिक कुर्सी राखल छल। हमरा ओहिठाम बैसबाक आग्रह भेल। तुरंत काफी आएल,मधुर आएल। फेर प्रभाकर भाइ पिअर रंगमे रंगल नवका धोती देलनि-

“एकरा पहिरि लिऔ।नीक लगतै।”

हम हुनकर आग्रह मानि धोती पहिरि लैत छी।सुनबामे आएल जे मूड़नमे सामिल शताधिक लोकनिकेँ धोती,साड़ी देल गेलनि। मुड़नक उत्सवकेँ

रोमांचकारी बनबैत रसनचौकी बला मधुर संगीत बजा रहल छलाह। मिथिलाक ई अद्भुत कला अखनहु जीबैत अछि,बाँचल अछि से जानि बहुत प्रसन्नता भेल।अफसोचक बात अछि जे लोकसभ महग-महग मनोरंजनक आधुनिक व्यवस्था करताह,मुदा अपन माटि-पानिक कला आ कलाकारकेँ बचेबाक कोनो सक्षम प्रयास नहि करैत छथि।परिणामतः हिनका लोकनिक धिआ-पुतासभ वंशानुगत प्राप्त पारंपरिक कलाकेँ परित्याग कए नौकरी करबाक लेल सहर जा रहल छथि।

सभसँ कमाल तँ केलक छअंगुरा हजाम। ओ पीने डगमग कए रहल छल ,संगे रसनचौकीक सुरपर अपन हाथकेँ ठेहुनपर लएवद्ध रूपमे तबला जकाँ बजा रहल छल। देहक भाव-भंगिमा नृत्यमय केने छल। छअंगुरिआ आ एकर कैक पुस्त एहि माटिसँ जुड़ल अछि।ओकर कैकटा समांगसभ आर्थिक रूपे संपन्न भए गेल,मुदा ओ ओहिनाक-ओहिना अछि।हम पता लगेबाक प्रयास केलहुँ जे आखिर से किएक भेल?लोकसभ कहलाह जे ई दिन-राति पीबैत रहैत अछि,बिना पीने रहिए नहि सकैत अछि।तकरे ई परिणाम अछि।एहन-एहन कैकटा उदाहरण गाम-घरमे सुनबामे,देखबामे आएल।

रसनचौकीक मधुर संगीत,भगवती गीत आ ऊपरसँ छअंगुरिआक भावमय नृत्यसँ बहुत नीक माहौल बनि गेल छल। बौआक मुड़नक संगे गीत-नाद सेहो भइए रहल छल। थोड़बे कालक बाद तनुकाक लेल बीस-पचीस गोटे बैसलाह।हमरा गामक पुरान परंपरा आब ओतेक मोन नहि रहि गेल अछि।साइत तनुका खाएब लोक पसिंद नहि करैत अछि।कनी-मनी प्रसाद लिअ,बस।रातिमे भोज होएबे करतैक। मुदा हम तँ बैस गेल रही।एहू लेल जे रातिमे तँ हम रहब नहि। मुदा तनुका की छल ओ तँ जबरदस्त भोज छल। बहुत दिनक बाद गाममे भोज खेबाक अवसर भेटि रहल छल। संगे अपन पसिंदक भोजन।ततेक नीक खीर

बनल छल जे लोकसभ बेर-बेर परसन लेबाक लेल वाध्य छलाह। खीरक संगे अनेक प्रकारक मधुर आ ऊपरसँ चोटगर तरकारी। खाइत-खाइत मोन अघा गेल।मूड़न संपन्न भेलाक बाद आ तनुकामे भरिपोख स्वादिष्ट भोजन खेलाक बाद हम सबेर-सकाल मधुबनी वापस भए गेलहुँ। रातिमे करीब दस बजे कोमल भाइ भोजमे सामिल हेबाक लेल पुछारी केलनि। हम तखन मधुबनी डेरामे विश्राम कए रहल छलहुँ।

हथधरीमे देपुरा

हम एकदिन प्रभाकर भाइकेँ फोन केलिअनि।गप्प-सप्पक क्रममे ओ कहलनि जे एकैस फरबरीक हुनकर कन्याक बिआह हेतनि। वर सरकारी इसकूलमे शिक्षक छथिन,देपुरा घर छनि।घरोक सुभ्यस्त। जे टाका ओ मगलखिन से ओ देलखिन। से सुनि अफसोच भेल जे अपना समाजमे दहेज अखनहु चलिए रहल अछि,जखन कि कन्या सेहो पढ़ल-लिखल एमए पास छथि। मुदा कएल की जाए?अपना ओहिठाम सरकारी नौकरीक बहुत महत्व अछि। लोकसभ अखनहु सरकारी नौकरी बला वरक लेल किछु करबाक लेल तैयार छथि,भने ओ किरानीए किएक नहि होथु।

हम गामेमे रहबे करी,तँ बिआहमे सामिल होएबेक छल।प्रभाकर भाइ हथधरीमे जेबाक सेहो आग्रह केलनि। कहलाह जे पन्द्रह गोटे हथधरीमे जाइत जेताह।हम तिनकर सभक नाम पुछलिअनि,से ओ कहलनि।हमर भातिज चन्दनक नाम सेहो छलनि। आर-आर अपने परिवारक लोकसभ।

२१ फरबरी २०२५ कए हम दू बजे मधुबनीसँ गाम पहुँचि गेल रही। प्रभाकर भाइक ओहिठाम बड़काटा सामिआना लागल छल। बेस गहमा-गहमी छल। ओहिठाम पहुँचितहि कैकटा पुरान लोकसभ भेटलथि। हुनका लोकनिसँ

चर्चा भेल। लगभग चारि बजे हमसभ कारसँ देपुराक लेल प्रस्थान केलहुँ।रस्तामे पान खाइत गप्प-सप्प करैत हमसभ थोड़बे कालक बाद देपुरा पहुँचि गेलहुँ। सभसँ पहिने वरक पितासँ भेंट भेल। ओ अद्भुत व्यक्तित्वक लोक छथि। हुनकर मोंछ तँ गजब अछि।एहन लक्षेदार मोछ दिल्लीमे दूगोटेकेँ देखने रहिअनि।एकटा तँ हमरासभक संगे गृह मंत्रालयमे सहकर्मी रहथि। दोसर नार्थ ब्लाकक स्टेट बैंकमे कार्यरत एकटा कर्मचारी। ओ सभ अपन-अपन मोंछकेँ बहुत इतमिनानसँ सजओने रहैत छलाह आ अपन मोछेक कारण प्रसिद्ध छलाह।वरक पिता बहुत उदार प्रकृतिक लोक बुझेलाह।गाममे नीकसँ व्यवस्थित छथि। कहलाह जे हुनकर महीस आठ लीटर दूध दैत छनि। ओ स्वयं भोरे डेढ़ लीटर दूत पीबैत छथि आ शेष दूध परिवारेमे खर्च होइत छनि,बेचैत नहि छथि। हमरा लोकनिक भोजनमे सेहो तकर प्रभाव देखबामे आएल।बेस पैघ-पैघ रसमलाइ ,छेना,रसगुल्ला सभटा घरेक बनल। खाइत-खाइत थाकि गेलहुँ।

दरबाजापर पहुँचितहि वरक पिता आ हुनकर समांगसभ हमरा लोकनिक बहुत अह्लादक संग स्वागत केलनि। हमसभ दरबाजाक आगू लागल सामियानामे राखल कुर्सीपर बैसति गेलहुँ। दरबाजापर गौँआसभ बैसल छलाह। जाइते देरी हमरा लोकनिकेँ पाग-डोपटासँ स्वागत कएल गेल। तकर बाद बिसलेरीक छोटकी बोतल आ डिब्बामे जलखै आएल।हमसभ से खेलहुँ,चाह पीलहुँ आ तकर बाद लगेमे सुधीर भाइक बहिनक ओहिठाम गेलहुँ। हमरा हुनका बारेमे जानकारी नहि छल। हमरासभकेँ देखि ओकरा बहुत प्रसन्नता भेलैक ।कनी काल ओहिठाम समय बिता हमसभ बाध दिस बिदा भेलहुँ।चारू कात हरिअर कंचन ,गाछ,बिरिछसँ भरल। बहुत आनन्ददायी दृश्य लागि रहल छल। हमसभ पैरे चलैत-चलैत ब्रह्मपुरा पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम ओहीगामक कलकत्ताक प्रवासी श्री कामदेव झा (गामक लोक हुनका बिरला-टाटा कहैत छनि) बहुत नीक दू महला मंदिर बनओने छथि। मंदिरक परिसर बहुत सुंदर अछि। थोड़े काल

ओहिठाम हमसभ बैसलहुँ।हमसभ मंदिरेपर बैसल-बैसल हँसी-ठठ्ठामे व्यस्त भए गेलहुँ। से बात मंदिरक पुजारीकेँ अपरतीब लगलनि। ओ बहुत नीकसँ टोकलखिन-

"अहाँसभ यदि नीचाँ अबितहुँ तँ प्रसादो दितहुँ।"हमसभ हुनकर इसारा बुझलिअनि।ताधरि हमर भातिज,चंदन आबि गेल छलाह।हमसभ हुनका संगे कारसँ वापस देपुरा आबि गेलहुँ। समय बितल जा रहल छल,मुदा अखन धरि बरिआतीक चलबाक सुरोसार नहि भेल छल। हमरा बुझा गेल जे अड़ेर वापस पहुँचैत-पहुँचैत बहुत राति भए जाएत। मुदा आब कएले की जा सकैत छल?लगभग नओ बजे हमरा लोकनि भोजन प्रारंभ केलहुँ। भोजनक विन्यासक की वर्णन करू। बहुत रास प्रकारक सामग्रीसभहक सचार लागल छल। कतेक खइतहुँ। तरह-तरहक मधुर जखन परसल गेल तँ बहुत अफसोच होअए जे पेटमे जगहे नहि रहि गेल अछि। मुदा हमरासभक संगे गेल एक गोटे लागल रहलाह आ दर्जनो रसगुल्ला,छेना खा गेलाह।हमसभ हुनकर रसगुल्ला,छेना खेबाक मात्रा आ गति दुनू देखि छगुन्तामे रही जे अखनहु एहन भोजनवीर बाँचल छथि।भोजनक बाद हमसभ बैसले छलहुँ कि पिअर रंगमे रंगल धोती सभक सामनेमे राखि देल गेल,एहि आग्रहक संगे जे एकरा पहिरि लेल जाए। वरक पिता करगर,नमगर मोंछ लेने सदिखन हमरासभक स्वागतमे मोस्तैद रहथि। ओहो आग्रह पर आग्रह केलनि जे धोती अबस्स पहिरि लेल जाए। हमसभ पिअरका धोती पहिरि बहुत संदर लागि रहल छलहुँ।

करीब साढ़े दस बजे वर बरिआतीक संगे हमसभ अपन गाम दिस बिदा भेलहु। डेढ़ सएसँ बेसीए बरिआती जा रहल छलाह।मैथिल ब्राह्मणमे बरिआतीक ई कुप्रथा नहि छल। पहिने मोसकिलसँ पाँच-सात गोटे बरिआती जाइत छलाह जे बढ़ि कए बीस-एकैस धरि ठेकि गेल छल। बरिआती दू-दिना जरूर होइत छल।

ओहि बीच कन्यापक्षक लोककेँ बहुत मेहनति करए पड़ैत छलनि। मुदा आब एकदिना के कहए एक संझ्रू बरिआती भए गेल अछि। मुदा बरिआतीक संख्यामे बहुत अधिक इजाफा भए गेल अछि। लोक बस-कार,जीपमे भरि-भरि कए बरिआती लए जाइत छथि। एहि आडंवरमे पड़ि अपन मौलिकता नष्ट केने जा रहल छथि। हमरालोकनिकेँ आबो चेतबाक चाही आ व्यर्थ आडंवरक चक्करमे नहि पड़बाक चाही।ताहीमे सभक कल्याण अछि।

एगारह बजे रातिमे बरिआती हमर गाम,अड़ेर डीह पहुँचल।हम बहुत थाकि गेले रही।राति भरि जागि बिआह कार्यक्रममे सामिल होमए जोगर परिस्थिति नहि बुझाएल। बहुत दिनक बाद अपन समाजक एकटा सुयोजित कार्यक्रममे सामिल होएबाक सुअवसर भेटल छल।अस्तु, मोनमे संतुष्टिक भावक संग चंदनक संग अपन मधुबनी डेरापर वापस भए गेलहुँ।

प्राणक भीख मगैत मिमाइत छागर आ वलिप्रदान

७ फरबरी २०२५ कए उच्चैठ भगवतीक दर्शनक लेल गेल रही। मधुबनीसँ कारसँ भोरे उच्चैठ हम दुनू बेकती बिदा भेलहुँ। हम तँ कैक बेर उच्चैठ गेल छी। मुदा हमर श्रीमतीजी पहिल बेर ओतए जा रहल छलीह।अस्तु,हुनका बहुत दिनसँ ओतए जेबाक अभिलाषा छलनि जे आइ संभव भए रहल छल। असलमे बहुत दिन बाहर रहि गेलासँ अपना ओहिठामक बहुत रास तीर्थ आ महत्वपूर्ण स्थानसभ देखबासँ छुटि गेल अछि जे आब बेरा-बेरी पूरा भए रहल अछि। एहि क्रममे हमसभ आइ उच्चैठ बिदा भेल छी।आब अड़ेर माने हमरसभक गाम आबि रहल अछि। दुबगली नव-नव मकान,नव-नव दोकान खुजि गेल अछि। अड़ेर थानासँ जेना-जेना आगू बढ़ब सड़कक काते-काते अनेक प्रकारक दोकानसभ देखबामे अबैत अछि जे अंततः धकजरीमे जा कए मिलि जाइत अछि।

आब हमसभ भदुली पहुँचि रहल छलहुँ। ओतए पहुँचितहि पुरान बातसभ मोन पड़ि जाइत अछि।एहि ठाम हमर परिवारक खेत,कलम सभ छलनि। बेर-कुबेर हमहूँ ओहि ठाम जाइत छलहुँ। ओहिठाम भोजो खाइत छलहुँ। आब तँ ने ओ रामा ने ओ खटोला। कनीके आगू बढ़लापर धकजरी आबि जाइत अछि। ओहिठाम बामा कात धकजरीमे लालबाबूक ड्योढ़ी देखाइत अछि जतए हुनकर पुत्र,नन्हकू बाबू कैक मंजिलक फ्लैटनुमा घर बनओने रहथि। ओहि समयमे हुनकर धाजा फहराइत छल। हुनकर पिता (लालबाबू) स्कूटरपर चलैत छलाह।कैक बेर ओ अड़ेर चौकपर रूकितथि।स्कूटरमे सिकार कएल बगेरीसभ रखने रहितथि। अड़ेर चौकपर पान खइतथि ,गप्पसप्प करितथि। हुनका देखि कए हमरा सन-सन कैकटा बच्चासभ सेहो हुनका लग आबि जाइत छल।बादमे जखन नन्हकू बाबूक समय अएलनि तखन ओहो बरोबरि देखैतथि। देखबामे अपूर्व सुंदर।माथपर लालठोप केने।हुनकर बड़ीटा परिवार छलनि। ओहि समयमे

साम्यवादी किसान आन्दोलनमे ओ सभ बहुत दिक्कतिमे पड़ि गेल रहथि। हुनकर बहुत रास जमीनसभपर झंझटि होइत रहैत छलनि। ई सभ बात हमसभ गाममे सुनियैक।

उच्चैठ यात्राक क्रममे धकजरीक बाद बेनीपट्टी आएल। बेनीपट्टी बहुत पहिने हमरा सभक थाना छल। बादमे हमरे गाममे थाना बनि गेल।बेनीपट्टीमे जमीन निवंधनक पुरान कार्यालय अछि।कैक बेर हमहूँ बाबूक संगे ओतए गेल छी,मधुर खेने छी। ओतए बहुत रास दोकानसभ देखबामे आएल। कार आगू बढ़ैत गेल आ थोड़बे कालमे हमसभ उच्चैठ पहुँचि गेलहुँ।

उच्चैठमे शुरूएमे गेटे लग एक गोटे फूल,प्रसाद बेचि रहल छलाह।पुछलिअनि-

“कतेक दाम छैक?”

“छोटका बीस,बड़का साठि।”

“साठि बला दए दिऔक।”

ओ तुरंत दए फुलडालीमे सभ किछु सड़िआबए लगलाह, ओहीक्रममे बजलाह-

“एक सए बला आर नीक छैक।”-से कहि फुलडाली पकड़ा देलनि।हम किछु बजितहु,बुझितहुँ ताहिसँ पहिने ओ अपन काज कए चुकल रहथि।साठि टकाक बदला दाम आब एक सए भए गेल छल। भोरुका पहर छलैक,भगवतीक पूजा करबाक रहए।तेहनमे मोनमे विक्षोभ उत्पन्न नहि बढ़बैत हुनका एक सए दए आगू बढ़ि गेलहुँ। तकर बाद तँ फूल-प्रसाद बेचनिहारक भीड़ लागल छल। हम पछताइ जे अनेरे शुरूएमे ई सभ कीनि लेलहुँ। मंदिर लग पहुँचैत-पहुँचैत एकटा पंडितजी भेटलाह-

“दर्शन करबैक?”

“हँ,हँ।”

“हमरा संगे चलू।हम सभटा नीकसँ करा देब।”

“टका कतेक लेबैक।”

“चलू ने। जे अपनेक श्रद्धा।जे मोन होअए से दए देबैक।”

हमसभ उच्चैठ भगवतीक मंदिरक बगले पोखरिमे जा कए पैर धोलहुँ।पोखरिक पानि तेहन छल जे कुरुर करबाक तँ प्रश्ने नहि छल? हमर श्रीमतीजी संगे रहथि। हुनका कालीदाससँ जुड़ल स्मृतिशेष देखबाक बहुत जिज्ञासा छहनि।

ओ एहि विषयक अनेक प्रश्न पुछि रहल छलीह-

“ओ स्थान कतए छैक?”

“ओ पुस्तकालय कहाँ छैक?”

“धार देखबाक मोन करैत अछि।”

हमसभ मंदिर अबैत काल लोकसभकेँ एहि विषयक जनतब देबाक आग्रह करैत रहलिऐक। मुदा ककरोसँ स्पष्ट जानकारी नहि भेटए। सोचलहुँ जे पहिने दर्शन कए ली। तकर बाद देखल जेतैक।भगवतीक दर्शन केलाक बाद पंडितजीकेँ दक्षिणा देबाक समय छल। हम एक सए टाका जेबीसँ निकालि रहल छलहुँ कि ओ बजलाह-

“एक सए टाका तँ अदना-पदना दैत छैक। अपने तँ,,।”

“हमरा अदने बुझू।”-से कहि हुनका एकसए टाका दए हमसभ मंदिरसँ आगू बढ़ि गेलहुँ।पंडितोजी कोनो आन ग्राहकक फिराकमे चलि गेलाह।कम सँ

कम पुरीक मंदिरमे महिला पुजारी जकाँ गारि पढ़ैत नहि देखेलाह। भगवती मंदिरक बाहर छोट-छोट छागरसभ मेमीआइत छल। ओकरासभकेँ स्नान करा कए वलिप्रदानक लेल आनल गेल छल। एहन क्रूड़ता माता कोना बरदास करैत छथि?ओ सभ मिमिआइत रहल।संभवतः कहि रहल छल-

"हे माते! हमर रक्षा करू। ई राक्षससभ हमर हत्या कए देत।"

"कतेक अफसोचक बात अछि जे जाहि जगदंबाक हमसभ अपन आ श्रृष्टिक कल्याणक लेल प्रार्थना करैत रहैत छी,तिनके प्रसन्न करबाक लेल हुनके एकटा संतानक वलिप्रदान करैत छी। ई कुप्रथा तुरंत बंद हेबाक चाही।विद्वान लोकनिकेँ एकर विरुद्ध अबाज उठेबाक चाही।"

हम इएहसभ सोचैत रहि गेलहुँ। कहि नहि केओ एहिपर ध्यान दए सकताह की नहि?भगवतीक दर्शनक बाद हमसभ बाहर भेलहुँ ।भूख लागि गेल रहए। बगलेमे कैकटा जलखैक दोकानसभ देखाएल। बहुत कम दाममे गरम-गरम जलखै केलहुँ।

हमसभ आब कालीदासक स्मृतिशेष तकबामे लागि गेल रही।मुदा ओहिठाम उपस्थित केओ व्यक्ति स्पष्ट नहि कहि पाबथि। मिथिलाक एहन प्रसिद्ध तीर्थ जे कालीदास सन विद्वानसँ सेहो जुड़ल होअए ततए कोनो गाइड,किंवा सुयोग्य व्यक्तिक अभाव बुझाएल। अंततोगत्वा, हम अपन भातिज,चंदनकेँ फोन केलिअनि। ओ वाहनचालककेँ आवश्यक जनतब देलखिन।तकर बादे हमसभ कालीदास स्मारक कालेजसँ सटले ओहि धारकेँ देखलहुँ ।कहाँ दनि कालीदास ओही धारकेँ हेलि कए भगवतीकेँ करिखा लगबैत रहथि कि ओ हुनका रोकलखिन आ अपेक्षित वरदानो देलखिन।तकर बाद कालीदास राति भरिमे पुस्तकालयमे राखलसभटा किताब उन्टा गेलाह आ से सभ हुनका कंठस्थ होइत गेलनि। कालीदास संगे भेल ई घटना हम बच्चेसँ सुनैत आबि रहल छी। मुदा एकर

प्रमाणिकतापर तँ शोधकर्ते किछु कहि सकैत छथि। एतेक महत्वपूर्ण पर्यटनस्थलमे जे प्रसिद्ध तीर्थो अछि,उचित सुविधाक अखनहु बहुत अभाव अछि।

सामनेमे कालीदास स्मारक महाविद्यालय,उच्चैठक भवन देखाएल। हम एतए अबितहि थोड़े काल मौन भए गेलहुँ। एही कालेजमे हमर पितिऔत आ अभिन्न मित्र लालबच्चा(डाक्टर विष्णुकान्त मिश्र) रसायन शास्त्रक विभागाध्यक्ष छलाह। सेवामे रहितहि हुनकर मृत्यु भए गेलनि। बड़ीकाल धरि हुनका बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ। एक-दूटा फोटो खिचलहुँ।फेर कारपर बैसलहुँ गाम वापस बिदा भए गेलहुँ।

भावनीपुर आ पण्डौल

चौदह फरबरी २०२५क हम दुनू बेकती भावनीपुर आ पण्डौल जेबाक कार्यक्रम बनओलहुँ। ताहि लेल एकटा टैक्सीक काज छल। हम श्रीनारायणजीसँ एहि विषयमे चर्चा केलहुँ। ओएह अठ्ठारह सएमे एकटा टैक्सीक जोगार कए देलनि।टैक्सी बलाकेँ सात बजे अएबाक रहैक। मुदा ओ जखन आठो बजे धरि नहि आएल तखन ओकर मालिककेँ फोन केलिअनि। ओ वाहन चालकक मोबाइल नंबर देलनि। वाहन चालक कहलाह-

“हमरा तँ आठे बजेक समय कहने रहए।”

“आबिए रहल छी। रस्तामे जाममे फँसि गेल छी।”

आखिर साढ़े आठ बजे धरि ओ पहुँचल। तखन हमसभ भवानीपुर बिदा भेलहुँ।मधुबनीसँ पण्डौलक रस्ता दिस बिदा होइतहि सासुर जेबाक एकटा अपूर्व आनन्द भए रहल छल। बीचमे हमसभ सनेसक लेल किछु फलसभ कीनलहुँ। थोड़बे कालमे हमसभ पण्डौल महावीर चौक लग पहुँचि गेल रही। मुदा टैक्सी रूकल नहि,बढ़िते गेल। ब्रह्मोत्तरा बाटे हमसभ पन्द्रह मिनटक भीतरे भवानीपुर

महादेव मंदिर लग पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम बहुत परिवर्तन भए गेल छल।मंदिर परिसरमे प्रवेशसँ पूर्वे हमर श्रीमतीजीकेँ कैकटा परिचित पण्डासभ भेटि गेलखिन। हमसभ नीकसँ महादेवक दर्शन केलहुँ,फोटो खिचेलहुँ आ बाहर निकलले छलहुँ कि पवन(हमर पितिऔत सार) भेटि गेलाह।

भवानीपुर, एना अचानक पवन भेटि जेताह से नहि सोचने रही। मुदा कहल जाइत अछि जे यदि मोन मिलैत अछि तँ किछु संभव अछि। हुनका भेटि गेलासँ उसास तँ भइए गेल। हमसभ थोड़े काल गप्प-सप्प केलहुँ । मधुर कीनलहुँ आ पण्डौल बिदा भए गेलहुँ ।भवानीपुरसँ पण्डौल जेबाक रस्तामे गामक बाध पड़ल। हमरा ध्यानमे आदरणीय श्री सुबोध नाथ झाजी आइ०ए०एस आबि गेलाह। ई हुनके गाम छनि। हम हुनका ओहि बाधक वीडियो बना कए पठा देलिअनि। तुरंत हुनकर फोन आबि गेल। कहलिअनि-

“अहींक गाम लगसँ जा रहल छी। ”

“से कोना?”

“भवानीपुर महादेवक दर्शन करबाक लेल आएल छलहुँ। आब पण्डौल जा रहल छी।”

से जानि ओ बहुत प्रसन्न भेलथि। थोड़बे कालमे हमरसभक टैक्सी पण्डौल पहुँचि गेल। हमसभ ससुरजीक साबिक दलानपर पहुँचि गेल रही। आब ओहि ठाम हमर पितियौत सार श्री विजय चन्द्र झा(पप्पुजी) घर बन्हने छथि। दनानपर तीनटा बड़का-बड़का कार ठाढ़ छल। लकड़ीक कारबार सेहो चलि रहल छनि। घरक चारूकात बेस पैघ देबाल बनल अछि। हमरा सभकेँ आएल देखि ओ जबरदस्त स्वागत केलनि।आङनमे कैकटा फरीकसभ घर बान्हि लेने छथि। कनीके हटि कए हुनकेसभक आर समाङसभ पैघ-पैघ घर बान्हि लेने छथि। एकटा घरक चाहरदेबारी तँ बहुत पैघ अछि। पण्डौलक बाध बहुत सोहनगर लगैत

छल। सरिसौक पिअर-पिअर फूलसभ ओकर सौंदर्यकेँ पराकाष्ठापर पहुँचा देने छल।हम थोड़े काल बाधमे घुमैत रहि गेलहुँ। पुरान बातसभ मोन पड़ैत रहल। सासुर सासुरे थिक चाहे ओ कतबो पुरान भए जाउ। रस्तामे सौजनिआ माए भेटि गेलखिन। हमर श्रीमतीजी हुनका देखि बहुत प्रसन्न भेलथि। ओ हमर सासुक विश्वासपात्र छलखिन आ बहुत दिन धरि हुनकर घरक देख-रेख केने छलीह। ओ सभ संगे फोटो खिचओलथि। हमसभ करीब तीन घंटा पन्डौलमे रहलहुँ। भोजन भेलैक।गप्प-सप्प भेलैक ।हमर श्रीमतीजी एकाध ठाम गेबो केलथि। फेर हमसभ लगभग चारि बजे मधुबनी वापस बिदा भए गेलहुँ।ओना हमरासभकेँ छओ बजे वापस हेबाक कार्यक्रम छल,मुदा टैक्सी बलाकेँ कोनो आर काजपर जेबाक रहैक। ओ अपन दिक्कति बतओलक। तेँ हमसभ कनी जल्दीए बिदा भए गेलहुँ। पाँच बजैत-बजैत हमसभ अपन मधुबनी डरापर वापस पहुँचि गेल रही। हमर श्रीमतीजी बहुत संतुष्ट प्रसन्न छलीह। बेसक आब हमरसभक सासु-ससुर नहि रहलाह,तथापि हुनकर सभक स्मृति ओहिठाम गेलासँ फेरसँ हरिआ गेल। हुनकर बनाओल घर अखनहु बहुत सुन्नर लागि रहल छल। बहुत नीकसँ ओकरा रंगल-ढंगल गेल छल। मुदा ओकर परिसरमे स्वछताक अभाव छल। चारूकात खढ़-पातसभ खसल छल। एकटा समय छल जखन हमसभ ओतए पहुँचितहि कतेक आश्वस्त भए जाइत छलहुँ।हमर सासु कतेक खुस होइत छलीह।मुदा समय-समय होइत अछि। चुपचाप सएह सभ सोचैत रहि गेल छलहुँ । मुदा आशावान छलहुँ जे भविष्यमे फेर ओ स्थान हरल-भरल रहत। हमसभ फेर ओहि ठाम जाएब आ आनन्दित होएब।

कपिलेश्वर महादेव

स्थानीय तीर्थ यात्राक क्रममे हम दुनू बेकती आटोसँ बाइस फरबरी २०२५क कपिलेश्वर गेलहुँ। ओहिठाम घंटा भरि रहि दर्शन केलाक बाद रहिका वापस अएलहुँ। ओहिठाम भोजन केलाक बाद सतलखा डीह टोल स्थित अपन बहिनक ओहि ठाम गेलहुँ। हुनकासँ भेंट केलाक बाद इच्छा भेल जे गामो चलिए जाइ।सतलखासँ अड़ेर छैहे कतेक फटकी?मोसकिलसँ पन्द्रह मिनटमे गाम पहुँचि गेलहुँ। ओहि ठाम मकानक काजक प्रगति देखि मधुबनी वापस भए गेलहुँ।

कपिलेश्वर महादेवक मंदिर मिथिलामे पुरान समयसँ विख्यात अछि। ओहि इलाकाक कतेको लोक सभ सोम दिन कए ओतए महादेवकेँ जल ढारैत छथि। आब तँ बहुत लोक ओही ठाम उपनयन,एकादशीक यज्ञ सेहो करैत छथि। बच्चासभक मूड़न तँ होइते रहैत अछि। हमहूँ बच्चेसँ ओहि ठाम अबैत-जाइत रहलहुँ अछि। गामसँ दरभंगा जेबाक रस्तेमे कपिलेश्वर स्थान पड़ैत अछि। मंदिरसँ सटले एकटा बहुत गहींर कूप अछि।ओहीमे सँ जल निकालि महादेवपर चढ़ाओल जाइत छनि। मंदिरक लगपासमे कैकटा पंडासभ भेटि जेताह। मुदा ओ सभ बेसी धराह नहि छथि। जे देबनि से लए कए मानि जाइत छथिन।पूजा-पाठ करा दैत छथिन। नहि तँ अहाँ असगरो से सभ कए सकैत छी। सामान्यतः एहि ठाम बेसी भीड़ नहि रहैत छैक। मुदा सोम दिन कए आ विशेष पर्वक दिन कए,जेना शिवरातिमे,एहि ठाम बहुत लोक जमा भए जाइत छथि। मंदिर परिसर आ आसपासमे कोनो विशेष विकास नहि भेल अछि।एतेक पुरान तीर्थ क्षेत्र अखन धरि किएक उपेक्षित अछि से विचारणीय विषय थिक।

जनकपुर यात्रा

२८ फरबरी २०२५क हमसभ जनकपुर जेबाक कार्यक्रम बनओलहुँ। ओना हम दू बेर पहिनहु जनकपुर गेल छी। मुदा हमर श्रीमतीजीकेँ ओतए जेबाक बहुत इच्छा छलनि। तेँ अवसर भेटितहि हम ओहिठाम जेबाक कार्यक्रम बनओलहुँ। एक दिन पहिने चंदन टैक्सी ठीक कए देलनि।टैक्सी बला हमरे गामक छल । भोरे मधुबनी आबि कए हमरासभकेँ लए जाएत। निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार भोरे सात बजे ओ आबि गेल। हमहूँ सभ तैयारे रही। सात बजैत-बजैत तँ हमसभ किशोरीलाल चौकसँ आगू बढ़ि गेल रही। भोरुका समय रहैक,सड़क एकदम खालीए छल। कार धराधर आगू बढ़ैत गेल। बीस मिनटमे हमर गाम आबि गेल। वाहन चालक पुछलक-

“रूकबै की?”

“अखन चलह।लौटतीमे देखल जेतैक।”

हमसभ बेनीपट्टी बाटे नेपालक सीमा धरि जेबाक लेल आगू बढ़ैत गेलहुँ।रस्तामे बहुत रास सुनल गामसभ अबैत गेल। नेपाल-भारतक सीमापर भारतीय सशस्त्र वलक जवानसभ जाँच कए रहल छलाह। हमसभ अपन परिचय पत्र देखओलिअनि। बिना कोनो परेसानीकेँ हमरासभकेँ आगू जेबाक अनुमति भेटि गेल। कनीके फटकी नेपाल दिस भनसार कटेबाक लेल वाहन चालक गेल। जनकपुरक लेल मात्र नेपाली पचास टाका देबाक होइत छैक। आन जिलामे जेबाक लेल चारि सए नेपाली देबाक होइत छैक। नेपालक सीमामे गेलाक बाद हमर मोबाइल फोन काज केनाइ बंद कए देलक। हम अपन जनकपुर जेबाक कार्यक्रमक बारे मे नेपालमे मैथिलीक प्रख्यात साहित्यकार आदरणीय डाक्टर राम भोरस कापड़ि’भ्रमर’जीकेँ कहने रहिअनि। हुनकासँ भेंट करबाक इच्छा छल। ओ

अपन नेपाली नंबर सेहो देने रहथि। मुदा हमर मोबाइल नंबरसँ संपर्क होएबे नहि करैक।

जनकपुर पहुँचलाक बाद हमसभ ओहिठामक सभटा मंदिरसभमे बेरा-बेरी दर्शन केलहुँ। वाहन चालककेँ सभटा देखल-सुनल रहैक। ओ हमरा सभक संगे लागल रहल। मंदिरसभमे आ आसपास मैथिली भाषा बहुत नीकसँ बाजल जाइत छल। लागि रहल छल जेना सही माने मे मिथिलामे आबि गेल छी।अपना ओहि ठाम तँ मैथिलीमे बजनिहार लोकक सर्वथा अभाव अछि। दोकानसभमे बेसी लोकसभ हिन्दीएमे कारबार करैत अछि। मुदा जनकपुरमे से हाल नहि छल। ओहिठाम नेपाली नहि तँ मैथिलीमे गप्प केलापर बेसी नीकसँ बुझल जा सकैत अछि। कैक ठाम मैथिलीमे सूचनापट्ट देखाएल जे अपनासभ दिस साइते कतहु भेटत।

श्री राम बरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जनकपुरमे स्थानीय मंदिरसभमे दर्शन केलाक बाद हमसभ कापड़ि'भ्रमर'जीकेँ ककरो फोनसँ संपर्क केलहुँ। एकटा बहुत नीक बात ई बुझाएल जे जकरा ककरो हुनकर फोन लगबए कहिऐक से मना नहि करए,अपितु तुरंत फोन लगा दैत।ई बात हम कापड़िजीकेँ सेहो कहलिअनि। से जानि ओ प्रसन्नता व्यक्त केलनि--

"हमरासभक ओहिठाम समाजवाद छैक। लोकसभ एक-दोसरक नीकसँ ध्यान रखैत अछि।"

जनकपुरमे कापड़िजीसँ भेंट करबाक इच्छा छल। ताहि लेल हम हुनका पहिने फोन केने रहिअनि। ओ सेहो उत्सुक बुझेलाह। मंदिरसभमे दर्शन केलाक बाद हम हुनका फेर ककोरो फोनसँ संपर्क केलअनि। ओ कतहु कार्यक्रममे छलाह। बीचमे हमरा धनुषा जेबाक सेहो इच्छा छल। तखन तय भेल जे धनुषासँ घुरलाक बाद हुनकासँ भेंट कएल जाएत। हम धनुषा जेबाक लेल उत्सुक भेलहुँ तँ वाहन चालक कहए लागल जे ताहि लेल बड़का भनसार कटेबाक छल। मुदा कापड़िजी तकर जरूरति नहि कहलनि।कारण जनकपुर आ धनुषा एक्के जिलामे अछि। से बात हम वाहन चालककेँ कहलिऐक। तखन बहुत अछता-पछता कए ओ धनुषा बिदा भेल। रस्तामे अपने सभक ओहि ठाम जकाँ घर,खेत-पथारसभ देखाएल। बीचमे परशुराम तलाव सेहो देखाएल। मुदा वाहन चालक सोझे धनुषा जा कए रूकल। हमसभ ओहिठाम दर्शन करए गेलहुँ। धनुषक नामपर पाथरक किछु अवशेष राखल छल। लोकसभक कहब छैक जे ओ जानकी बिआहमे आयोजित स्वयंवरमे श्री राम द्वारा तोड़ल गेल धनुषक अवशेष थिक। मुदा हमरा से कतहुसँ सही नहि बुझाएल।तखन तँ लोकमत आ आस्थाक अपन महत्व छैहे। लोकसभ अखनहु बहुत श्रद्धापूर्वक ओहि ठाम जाइत अछि,दर्शन करैत अछि,फोटो सेहो खिचबैत अछि।

थोड़ेकाल धनुषामे रूकलाक बाद हमसभ वापस जनकपुर बिदा भेलहुँ। कापड़िजीकेँ फेर ककरो फोनसँ संपर्क केलिअनि। ओ कहलाह –

"जनकपुर टीसन लग आबि जाउ।हमहूँ ओतहि पहुँचि रहल छी।"

आब हमरासभकेँ बहुत भूख लागि गेल छल। रस्तामे हमसभ एकटा भोजनालयमे भोजन केलहुँ। भोजन बहुत सस्ता आ स्वादिष्ट छल।प्रचूर मात्रामे तरुआसभ परसल गेल।हम खूब खेबो केलहुँ।(मुदा ओ पचल नहि। वापस मधुबनी पहुँचलाक बाद मोन उकरू लागि रहल छल आ रातिमे रद्द होमए लागल।) भोजन केलाक बाद हमसभ जनकपुर रेलवे टीसन पहुँचलहुँ ।टीसने लग एकटा दोकानसँ रुद्राक्षक माला कीनलहुँ। ओहि दोकानक मालिककेँ आग्रह केलिअनि जे कापड़िजीसँ गप्प करा देथि। ओ हुनका जनैत छलखिन,तुरंत फोन लगा देलनि। कापड़िजीसँ फोनसँ गप्प भेल।ओ कहलथि-

“हम पाँच मिनटमे पहुँचि रहल छी।

तकर बाद ओहि ठाम चाहक दोकानपर कनीके काल बैसल होएब कि कापड़ि जीक फोन आएल-

“केमहर छी?”

हम पाछू घुमलहुँ कि हुनका कारसँ निकलैत देखि लेलिअनि। हुनका संगे एक गोटे आर केओ छलखिन। हमसभ संगे बैसलहुँ। गप्प-सप्प केलहुँ।पुस्तकक आदान-प्रदान भेल। नेपालमे मैथिली साहित्यक गतिविधिपर ओ बहुत रास जानकारी देलनि। ओ कहलथि जे ओ दरभंगा मैथिलीक बैसारसभमे जाइत रहैत छथि।गप्प-सप्प होइते रहलैक ,संगे चाह-पान सेहो भेलैक। कापड़िजी एकटा जरूरी मिटिंग छोड़ि कए हमरासँ भेंट करए आबि गेल रहथि। ई हुनकर महानता छलनि।हुनका एहि लेल हार्दिक धन्यवाद दैत हमसभ बिदा लेलहुँ।

जनकपुर हमसभ घुमि लेलहुँ। कापड़जीसँ भेंटो भए गेल। आब हमसभ वापसी यात्रापर बिदा भेलहुँ। एक बेर फेर टैक्सी पुरने रस्तासँ तेजी सँ आगू बढ़ल जा रहल छल। थोड़बे कालमे हमसभ फेर भारत-नेपाल सीमापर पहुँचि गेल रही।

मुदा कोनो दिक्कति नहि भेल। पाँच मिनटसँ पहिने हमसभ भारतक सीमामे पहुँचि अपन गंतव्य दिस बढ़ि गेलहुँ। कार ओहिना धराधर चलैत रहल। देखिते-देखिते हम सभ लगभग तीन बजे मधुबनी पहुँचि गेलहुँ।जनकपुरक यात्रासँ हमरा एहि बातसँ बहुत संतोष भेल जे मैथिली नेपालमे सुरक्षित छथि आ मिथिलाक संस्कृति अखनहु ओमहर बाँचल अछि।

पटना यात्रा

गाममे बनि रहल घरक छत ढलाइ छओ मार्चक संपन्न भेल। एहिमे सभक सहयोग रहल।जिनका-जिनका बजओलिअनि सभ गोटे बेरा-बेरी अएलाह आ हमर उत्साहवर्धन केलनि। हमसभ बड़ी काल धरि आपसमे बतिआइत रहलहुँ। सौंसे दरबाजा भवन निर्माणक सामग्रीसँ भरल छल। दरबाजापर ढ़लाइ मसीन से लागल छल। मसीनक लेल बीच-बीचमे पानिक दिक्कति से भए गेल छलैक। तकर जोगार मिस्त्रीसभकेँ किछु टाका दए कएल गेल।ओ सभ दोसर चापाकलसँ पानि आनि-आनि मसीनमे ढारैत रहल। आखि बजैत-बजैत छतक ढलाइ भए गेल।मकानक छत ढलाइ भए जाएब माने मकान बनि जाएब। हमर कैकटा इष्ट-मित्रसभ एहि सुअवसरपर हमरा बधाइ देलनि। खास कए कमलाकान्तजीक अनुरागक की वर्णन कएल जाए? ओ हमरा निरंतर उत्साहित करैत रहलाह,बीच-बीचमे कैक बेर निर्माणाधीन मकान देखबाक लेल अबितो रहलाह।संगे ईहो आश्वासन देलाह जे यदि कोनो प्रकारक परेसानी होअए तँ कहब।मुदा से सभ किछु नहि भेल। समयसँ सभ काज आगू बढ़ैत रहल। आखिर छतो बनि गेल।आब कम सँ कम बाइस दिन सटरिंग लागल रहत।बाँससभ ओहिना ठाढ़ रहत। तकर बादे मकानक भीतर काज होएत। ऊपरी छतपर दस दिनक बाद काज भए सकैत अछि। अस्तु,तय भेल जे अठ्ठारह मार्च २०२५ कए प्रथम तलक काज शुरू होएत।नीचाँ बाँस लागले रहत,सटरिंग नहि खुजत।तखन हमसभ की करब?पन्द्रह दिनक लेल दिल्ली वापस चलि जाइ?मुदा एहिमे दिक्कति ई बुझाएल जे मधुबनीक व्यवस्था गड़बड़ा सकैत छल।फेर दिल्ली आएब-जाएब कोनो आसान काज तँ अछि नहि, परेसानी आ खर्चा दुनू। तेँ निर्णय केलहुँ जे हमसभ पाँच दिन लेल पटना चली। ओहि ठाम रहबाक लेल केन्द्र सरकारक होली डे होममे जगह पहिने आरक्षित करा लेने रही, रेलक टिकट सेहो लए लेने रही। तखन चिंता कथीक?

कथा अखन बाँकी अछि/

दस मार्च २०२५क भोरे पाँच बाजि कए पचास मिनटपर मधुबनी टीसनसँ पटना जाए बला इन्टर सीटी एक्सप्रेस पकड़बाक छल। ताहि लेल एकटा आटोक जोगार लाल(बढ़इ)क मारफत करओने रही।एक दिन पहिनेसँ जोगार भेल छल तेँ कोनो चिंता करबाक प्रयोजन नहि छल।तथापि,भोरे हम लालकेँ फोन केलिअनि,मुदा ओ सुतले रहथि। थोड़े कालक बाद फेर हुनका फोन केलिअनि।तखन ओ फोन उठओलथि। कहलाह-

“चचा। ओकर आटोमे तँ बैट्रीके गड़बड़ा गेलैक अछि। ओ स्टार्टे नहि भए रहल छैक।”

“आब की हेतैक?”

“की कहू चचा?हम तँ अपने बहुत अफसोचमे छी।”

“कोनो रस्ता निकालू जाहिसँ ट्रेन पकड़ा जाए।”

“चिंता नहि करू। हम अपने आबि रहल छी।”

मुदा हमर चिंता तँ बढ़ले जा रहल छल। हम आस-पास कैक गोटेसँ संपर्क केलहुँ। मुदा समाधान किछु फुरा नहि रहल छल। ओना मधुबनी टीसन छैक लगे,हमर डेरासँ पैरे पन्द्रह मिनटमे लोक जा सकैत अछि। मुदा हमरा सभकेँ तँ दूटा मोटा रहए। हम एही चिंतामे रही कि लाल साइकिल लेने धराधर पहुँचि गेल।एहि तरहेँ लालकेँ साइकिलपर अबैत देखि हमरा लोकनिकेँ जे प्रसन्नता भेल से कहि नहि सकैत छी।कारण आब ई मोनमे विश्वास भए गेल जे ट्रेन पकड़ा जाएत। हमसभ हुनके साइकिलपर दुनू सामानक मोटा राखि देलिऐक । लाल दुनू मोटा लदने साइकिल गुरड़कओने चलि रहल छलाह। संगे-संगे हमसभ पैरे-पैरे चलि रहल छलहुँ। हमर श्रीमतीजीकेँ तेजीसँ चलबामे दिक्कति भए रहल छलनि।हमसभ हुनकासँ आगू बढ़ि जाइत छलहुँ,फेर कनी काल थमकि जाइत

छलहुँ।जेना-तेना हमसभ थाना मोर लग पहुँचलहुँ। ओहि ठाम एकटा रिक्सा बला अबैत देखाएल। रिक्सा बलाकेँ देखि हमरा जानमे-जान आबि गेल। ओकरा आग्रह केलिऐक जे हमरा सभकेँ टीसन पहुँचा दिअए। ओ मानि गेल। हमसभ रिक्सापर बैसलहुँ । लाल संगे-संगे साइकिलसँ सामान लदने बिदा भेल। थोड़बे कालमे हमसभ टीसनपर पहुँचि गेल रही। ओतए लालक लेल प्लेटफार्म टिकट लेलहुँ।ओतहि पता लागल जे ट्रेन विलंबसँ चलि रहल छलैक। हमसभ अपन सामानसभकेँ प्लेटफार्मपर राखि लेलहुँ आ एकटा खाली कुर्सीपर हुनका बैसा देलिअनि।हम अपने ठाढ़े छलहुँ कि केओ दहिना दिससँ टोकलथि-

“अहाँ रबीन्द्र नारायण मिश्रजी छी की?”

“सही चिन्हलहुँ।”

“हम छी केसकर ठाकुर।हमरा लागि रहल छल जे अपनहि छी।तथापि,अपनेक श्रीमतीजीसँ पुछलिअनि। ओ जखन से पुष्टि केलनि तखन अपनेकेँ टोकलहुँ।”

केसकर ठाकुरजीसँ फोनपर कैक बेर गप्प भेल छल, मुदा भेंट नहि छल। से आइ अचानक मधुबनी टीसनपर भए गेल। दू दिन पहिनहि हुनका साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार देबाक घोषणा भेल छल। हम हुनका सद्यः बधाइ देलिअनि। कहलथि जे दू दिनसँ फोन सुनैत-सुनैत थाकि गेल छी। तकर बाद आर-आर गप्प-सप्प होइत रहल। ओ अपन पुत्रकेँ ट्रेन चढ़बए आएल रहथि। जाड़क भोर छलैक। चारू कात धुंध लागल छलैक।केसकरजी सेहो ओढ़नासँ अपन माथ झपने रहथि।

लगभग एक घंटाक बाद ट्रेन आएल। लाल हमरासभकेँ ट्रेनमे चढ़ा देलाह, सामानसभ राखि देलनि। हमसभ आब अपन सीटपर सुभ्यस्त छलहुँ।ट्रेन सीटी देलक आ आगू बढ़ि गेल।ट्रेन खुजिते अपन गति पकड़ि लेलक।हमसभ

खिड़की बाटे पण्डौल टीसन ताकि रहल छलहुँ। आखिर पण्डौल हमर सासुर थिक ने। मुदा ट्रेन कखन पण्डौलसँ आगू बढ़ि गेल से नहि बुझि सकलिऐक। सकड़ी अएलापर ट्रेन रुकल। किछु यात्रीसभ ओहिमे चढ़लाह। फेर ट्रेन आगू बढ़ि गेल। तकर बाद दरभंगा,लहेरिआसराय होइत ट्रेन समस्तीपुर पहुँचल। यात्रीसभ कहलनि जे एहिठाम ट्रेनक इंजन बदलल जेतैक। तेँ एतए आधाघंटा रुकतैक। हमसभ भुखले रही। ट्रेनमे किछु सुलभ नहि छल। एकटा सहयात्रीक संगे जलखैक जोगारमे बाहर निकललहुँ। मुदा ओतेक भोरे प्लेटफार्मो जेना सुतल छल। किछु उपलब्ध नहि बुझाएल।तकैत-तकैत हम सभ रेलवे कैंटीन लग पहुँचलहुँ। ओ सभ अपन दोकान खोलिए रहल छलाह। कुर्सीसभ यत्र-तत्र छिड़िआएल छल। सफाइ कर्मचारी पोछा लगा रहल छल। हमसभ ओहने मे दोकानक भीतर गेलहुँ आ मनेजरकेँ पुछलिऐक-

“किछु जलखै भेटि सकैत अछि की?”

“पराठा भेटि जाएत,मुदा किछु समय लागत।”

“ट्रेन ने छुटि जाए।”

“नहि छुटत।अखन एकर समय छैक।”

चारि टा पराठा हम आ ओतबे पराठा सहयात्री बनेबाक लेल कहलिऐक। थोड़े काल ओहीठाम जेना-तेना प्रतीक्षा केलहुँ। बीच-बीचमे ट्रेनोक चिंता होअए।आखिर जलखै बनि गेल। हमसभ आवश्यक भूगतान कए देलिऐक।जलखै सरिआ कए राखि लेलहुँ ।ताबे ट्रेन सीटी देबए लागल छल। हम दुनू गोटे प्लेटफार्मपर दौड़ए लगलहुँ। सहयात्री हमरा दौड़ैत देखि पुछलाह-

“बाबा अहाँक कतेक बएस अछि?”

“अहाँक दोबर।”

“एतेक बएसमे गजबके ऊर्जा अछि अहाँमे।”-ओ हँसैत बजलाह।

हमरो हुनकर बात सुनि कए हँसी लागि गेल। हमसभ आखिर ट्रेनमे पैसि गेलहुँ। अपन-अपन सीटोपर पहुँचि गेलहुँ। तकर बादे ट्रेन आगू ससरल।आब हम दुनू बेकती जलखै केलहुँ।संयोगसँ चाहो आबि गेल। सेहो पीलहुँ।ट्रेन अपन गतिसँ चलैत रहल। जखन ट्रेन मुजफ्फरपुर पहुँचए बला रहए तखन हम अपन मित्र आदरणीय श्री मदन मोहन सिन्हाजी मोन पड़लथि।हम हुनका फोन लगओलहुँ।ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलाह जे हमसभ मुजफ्फरपुर पहुँचि रहल छी। साइत हुनकर गामो जाइ। ओहिठामसँ हुनकर गाम जेबाक लेल टेकर भेटि जाइत छैक। से सभ जानकारी ओ देलनि। मुदा हमरा तँ पटना जेबाक छल। तखन वापसीमे संभव भेलापर हुनकार गाम होइते वापस जेबाक गप्प भेलैक। मुदा से संभव भेलैक नहि। कारण पन्द्रह मार्च कए पटनासँ मधुबनी वापसीक दिन कैक ठाम फगुआ मनाओल जा रहल छल। असलमे एहू साल फगुआ दू-दिना भए गेल छल। गामसभमे पन्द्रह मार्च कए फगुआ मनाओल गेल,जखन कि सहरी क्षेत्रमे चौदहे मार्च कए।

करीब डेढ़ बजे हमसभ पटनाक पाटलिपुत्र टीसन पहुँचलहुँ।ओना हमरासभकेँ पटना टीसन उतरबाक छल। मुदा एकटा सहयात्री कहलनि जे हमरसभक पटनाक गंतव्य(केन्द्र सरकारक होली डे होम) पाटलिपुत्र टीसनसँ लगीच अछि। तखन हमसभ ओतहि उतरबाक योजना बनओलहुँ। बीचमे ट्रेन खूब गतिसँ चलल छल।तँ हमसभ पाटलिपुत्र टीसनपर निर्धारित समयसँ किछु पहिने पहुँचि गेल रही। ओतए ट्रेनसँ उतरलाक बाद कूली भेटबे नहि करए। सामान भारी छल। ओकरा असगरे उघने प्लेटफार्मपर आगू चलब बहुत मोसकिल भए रहल छल। आखिर,दुनूगोटे सामानकेँ दुनू दिससँ पकड़लहुँ। बहुत मोसकिलसँ जेना-तेना सामान लदने हमसभ टीसनसँ बाहर भेलहुँ। ओहूठाम ओला,उबेरक टैक्सी

भेटबामे दिक्कति भए रहल छल। आखिर, एकटा आटो ठीक भेल। थोड़बे कालमे हमसभ आटोसँ होलीडे होम पहुँचि गेलहुँ। ओहि ठाम पहुँचि गेलाक बाद तँ समस्या खतम छल। सभ किछु देखल-सुनल बुझाएल। हमसभ अपन कोठरीमे सामान सहित पहुँचा देल गेलहुँ।डेरा अबैत-अबैत हमसभ बहुत थाकि गेल रही। अस्तु,सोचलहुँ जे सभ किछु बिसरि पहिने थोड़े काल विश्राम कएल जाए।

हमरासभकेँ पाँच दिन माने चौदह मार्च धरि पटनामे रहबाक छल।पन्द्रह मार्च कए भोरे फेर इन्टरसीटी एक्सप्रेससँ मधुबनी वापस जेबाक कार्यक्रम पहिनेसँ तय छल।पटना स्थित होलीडे होममे दस मार्च २०२५क पहुँचलाक बाद हमसभ दिनमे विश्राम केलहुँ। साँझमे टैक्सीसँ पटनाक प्रसिद्ध महावीर मंदिर गेलहुँ। ओहिठामसँ हमसभ गंगा नदीक काते-काते बनल रिभरफ्रांट लग एक पाँतिसँ बनल दोकानसभ देखलहुँ। आइ ओहि ठाम बेसी भीड़ नहि छल। प्रायः फगुआ लगीच होएबाक कारण लोकसभ अपन-अपन घर चलि गेल छल। तथापि किछु लोकसभ ओहि ठाम घुमि-फिरि रहल छलाह, चाह-जलखै कए रहल छलाह। हमसभ टैक्सीसँ एहि पारसँ ओहि पार धरि देखि गेलहुँ। रातिक आठ बाजि रहल छलैक। चारू कात अन्हार भए गेल रहैक। गंगाक कछार आब देखल नहि जा रहल छल।अस्तु,हमसभ बिना बेसी देरी केने ओहि ठामसँ डेरा वापस बिदा भए गेलहुँ।

राजगीर,नालंदाक यात्रा

पटनाक प्रसिद्ध महाबीर स्थान जेबाक लेल हमसभ ओलापर टैक्सी आरक्षित करओने रही। टैक्सी बला बहुत नीक लोक छल। ओ हमरासभकेँ बहुत नीकसँ महाबीर मंदिरमे दर्शन करा देलक ,संगे अपनहु दर्शन केलक।गंगाक कातमे बनल रिभर फ्रान्ट सेहो घुमा देलक। हमरासभकेँ राजगीर,नालंदा जेबाक इच्छा रहए। हम ओकरेसँ पुछलिऐक-

“अहाँ हमरासभकेँ राजगीर,नालंदा घुमा देब?”

“किएक ने।हमर तँ ई काजे अछि।कहिआ जेबै?”

“काल्हि चली,परसु चली।”

“कतेक टाका लगतैक?”

“पैंतालीस सए।”

“ठीक छैक।हमसभ आपसमे विचार करैत छी आ डेरा पहुँचलाक बाद सूचित करैत छी।”

हमसभ डेरा पहुँचैत छी। तकर बाद कनी काल सुस्ताइत छी। फेर आपसमे चर्चा करैत छी। असलमे एतेक दूर यात्रा टैक्सीसँ करबामे हमरा चिंता होमए लगैत अछि। मुदा ई आसान आ सुलभो अछि। हुनका राजगीर,नालंदा जेबाक बहुत मोन छलनि। अस्तु,हम टैक्सी बलाकेँ फोन लगबैत छी-

“हेलो! हम मिश्राजी बाजि रहल छी।”

“हँ,हँ कहियौ।”

“हमसभ काल्हि जेबैक राजगीर,नालंदा।”

"कै बजे ?"

"सात बजे ।"

"ठीक छै।"

भोरे सात बजिते हमसभ तैयार भए अपन कोठरीसँ बाहर निकलले छलहुँ कि टैक्सी बलाक फोन आबि गेल। ओ कहलक जे कारमे तेल भरा रहल अछि आ जल्दीए पहुँचत । पाँच मिनटक बाद ओ हमरासभ लग सचमुचकेँ पहुँचि गेल। हमसभ तुरंत टैक्सीमे सबार भए गेलहुँ आ बिदा भेलहुँ नालंदा,राजगीरक यात्रापर।

आइ यात्रापर निकलबासँ पूर्व हमसभ भोरुका चाह नहि पीबि सकल रही।मंगल दिन रहबाक कारण उपास से छल।तँ जलखै करबाक तँ चिंते नहि रहए। चाहक उचाट जरूर लागल छल। बीचमे कैक ठाम चाहक दोकानसभ देखेबो कएल।मुदा टैक्सी बलाक इच्छा रहैक हमरासभकेँ तंदुरी चाह पिएबाक। ओ तंदुरी चाहक बहुत प्रशंसा करैत छल। हमहूँसभ तंदुरी चाह पीबाक लेल बहुत उत्सुक रही। अखन धरि तंदुरी रोटी तँ सुनने रहियैक,मुदा तंदुरी चाह तँ पहिल बेर सुनि रहल छलहुँ।देखा चाही जे तंदुरी चाह अछि केहन?अस्तु,हमसभ बाट तकैत रहलहुँ तंदुरी चाहक। बीच-बीचमे उत्सुकतावश टैक्सी बलासँ ओकर विशिष्टताक कारण पुछबो करिऐक। ओ कहैत-

"कनीके काल ठहरू। पीबैक तखन अपने गुण गेबै।"

ओकरा से कहैत सुनि हमसभ चाह पीबाक लेल आर बेकल भए गेलहुँ, उचकि-उचकि कए बाहर देखि रहल छलहुँ। जे कोनो दोकान देखाइत से ओएह बुझाइत। हम टैक्सी बलासँ से पुछितिऐक आ ओ हँसि दैत।कार तेज गतिसँ चलैत रहल। बीचमे एकटा भगवतीक स्थान आएल। ओहि इलाकामे ओ बहुत प्रसिद्ध

भगवती छथिन। हमहूँसभ हुनकर दर्शनक लेल टैक्सीसँ उतरि गेलहुँ। मंदिर परिसरमे भगवतीक दर्शनक लेल बहुत रास लोकसभ जमा भेल रहथि। भगवतीक आरती चलि रहल छल। लोकसभ प्रसाद कीनि रहल छलाह। हमहूँसभ प्रसाद चढ़ओलहुँ ,पूजा केलहुँ आ बिदा भए गेलहुँ। करीब दस मिनट चललाक बाद टैक्सीबला बाजि उठल-

"उतरैत जाउ।आबि गेल तंदुरी चाहक दोकान।"

हम बहुत प्रसन्न रही जे आखिर चाहक जोगार भल,सेहो तंदुरी चाह । हमसभ बड़ी कालसँ चाहक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ। हम पाँचटा तंदुरी चाहक आदेश देलिऐक।से सुनि टैक्सी बला बाजल-

"पाँचटा?

"दू-दूटा हम दुनू बेकती पीबैक आ एकटा अहाँक लेल।"

टैक्सी बला हँसि देलक।हम बहुत उत्सुकतासँ तंदुरी चाहकेँ बनैत देखैत रहलहुँ।माटिक वर्तनमे पानिकेँ तंदुरीपर गरमाओल गेल। पुरना समयमे कोहामे भानस होइत देखने रहिऐक। ओहिना चाहकेँ माटिक वर्तनमे बरकैत देखलहुँ।माटिक दोसर वर्तनमे दूध गरम भए रहल छल।दूध की छल जेना खोआ रहल होअए। ओहिपर छाल्हीक बेस मोट पपड़ी पड़ल छल।चाह पीबासँ बेसी चाह बनबाक आनन्द भए रहल छल।थोड़बे कालमे माटिक कुल्हरमे तंदुरपर बनल चाह आबि गेल। हमसभ दू-दू बेर ओ चाह पीलहुँ। ओ चाह सचमुचकेँ बहुत स्वादिष्ट छल।पता लागल जे ओही दोकानपर शुद्ध घी आ खोआक पेरा सेहो भेटैत अछि। हमसभ ओहिठामसँ घी आ पेरा सेहो कीनलहुँ।चाह पीबिए लेने रही। आब हमरसभक मोन ऊर्जासँ भरि गेल छल। हमसभ द्विगुणित उत्साहसँ टैक्सीसँ नालंदा बिदा भेलहुँ।

पटनासँ नालंदक बीच सड़क गजबकेँ अछि। लगिते नहि अछि जे ई अपना ओहिठामक सड़क अछि। नालंदा मुख्यमंत्रीजीक गृह जिला छनि।तेँ एहि ठाम बेसी ध्यान देल जाइत अछि।से कहब छलैक टैक्सी बलाक। थोड़बे कालमे नालंदाक जिला अस्पतालक विशाल भवन देखबामे आएल। कहाँ दनि एम्स जकाँ एतहु चिकित्साक व्यवस्था कएल गेल अछि। से जानि प्रसन्नता भेल।मोनमे ईहो भेल जे किएक ने मधुबनीओमे एहन अस्पताल बनि सकैत अछि? साइत ओहन राजनेता अपना ओहिठामक नहि होथि,किंवा हुनका मधुबनीक प्रतिए से लगाओ नहि होनि। मधुबनीक आसपास चिकित्सा सुविधाक जे हाल अछि से कहबाक प्रयोजन नहि ।लोकसभ जान बँचेबाक लेल पटना,दिल्ली भागि जाइत अछि, खेत-पथार बेचि लैत अछि।ओना दरभंगामे एम्स खुलबाक सुरसार चलि रहल अछि। यदि से संभव भेल तँ संभवतः स्थानीय लोकसभकेँ किछु उसास होनि।

आब हमसभ राजगीरसँ कनीके फटकी छलहुँ कि सड़कक काते-काते छोट-छोट खाजाक सैकड़ों दोकानसभ देखाएल।हम आइ धरि एक ठाम एतेक खाजाक दोकान नहि देखने रहिऐक। ओना सिलावक खाजा नामी अछि। एकटा दोकानपर लिखल छल जे ओकरा खाजाक लेल अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार भेटल छल। हमसभ खाजा देखि मोहित भए गेल रही आ निर्णय केलहुँ जे वापसीमे खाजा कीनब।

टैक्सी बिना रुकने चलैत रहल। आब हमसभ आब राजगीर पहुँचि गेल रही। राजगीर आ नालंदामे देखबाक,घुमबाक लेल बहुत स्थान छैक।एक्के दिनमे सभठाम घुमब संभव नहि छैक।हमरासभकेँ ओही दिन साँझमे पटना लौटि जेबाक रहए।दिन भरिमे जतेक घुमि ली। हमर श्रीमतीजीकेँ चलबामे किछु परेसानी छनि। मंगलदिन हेबाक कारण हमरासभकेँ उपासो रहए। तखन सुविधापूर्वक जतबे पार लागत से घुमि लेब।सएह सोचि हमसभ मुख्य-मुख्य चीज देखबाक प्रयास केलहुँ।

राजगीरक गरम झरनासभ जगप्रसिद्ध अछि। एहिठामक ब्रह्मकुंडमे स्नान बहुत फलदायी मानल जाइत अछि। अस्तु,हमसभ सभसँ पहिने एतहि पहुँचलहुँ। ओना पहिनेसँ हमरा एहि ठाम स्नान करबाक निआर नहि छल, तेँ बेसी कपड़ा नहि अनने रही। मुदा हमर श्रीमतीजी तँ पूरा तैयारी केने रहथि। ओहिठाम पहुँचलाक बाद हमरो नहि रहल गेल। सभकेँ स्नान करैत देखि हमहूँ ओही पाँतिमे लागि गेलहुँ।यद्यपि थोड़बे दिन पहिने ब्रह्मकुण्डक विकास काज कएल गेल रहैक,मुदा ओहि ठाम स्नानक भारी कुव्यवस्था देखबामे आएल। पुरुष आ स्त्रीगण एक्के ठाम स्नान करबाक लेल उपरौंझ करैत देखेलाह। सातटा कूपकेँ पाइपसँ जोड़ल गेल अछि।सभमे सँ गरम पानि निकलैत अछि।सभमे बेरा-बेरी स्नान करब जरूरी अछि।सभक अपन-अपन महत्व छैक। तकर बाद ब्रह्मकुण्डमे कुदि जाउ आ खूब गरम पानिमे नहाउ। ओहिठाम स्नान कए रहल महिला लोकनिक दुर्दशाक वर्णन करब मोसकिल अछि,उचितो नहि अछि।अफसोचक बात अछि जे स्थानीय प्रशासन आ ओहिठामक प्रबंधक लोकनिक ध्यान एहि समस्यापर किएक नहि गेलनि अछि। ब्रह्मकुण्ड तँ तइओ कनी फैल छैक ,महिला-पुरुष कनी-मनी फराक भए जाइत छथि।मुदा स्थिति बहुत नीक तँ नहिए कहल जा सकैत अछि। एतबा नीक बात अछि जे महिला लोकनिक लेल एकटा कोठरी अलगसँ अछि जाहिमे ओ सभ स्नानक बाद अपन वस्त्र बदलि सकैत छथि।पुरुष लोकनिक लेल तँ किछु नहि अछि। लोकसभ भिजल-तितल जेना-तेना ओहि कुण्डसँ बहराइत छलाह आ कहुना कए अपन वस्त्र पहिरि बाहर चलि जाइत छलाह।हमहूँसभ स्नानक बाद ओहिठामसँ बाहर भेलहुँ । फोटो खिचेलहुँ। तकर बाद कनीके फटकी बनल गुरुद्वारा शीतल कुण्ड दिस बिदा भेलहुँ।

गुरुद्वारा शीतल कुण्डक खिस्सा बहुत रोचक अछि। कहल जाइत अछि जे आसपासमे गरम पानिक कुण्डसभ भरल छल। सभ ठाम गरम पानिए निकलैत छल। एहिसँ ओहि ठाम आगन्तुक लोकनिकेँ बहुत दिक्कति होइत छलनि। एक

बेर गुरु नानक ओहि ठाम पहुँचलाह। हुनकासभ गोहार केलकनि आ निवेदन केलकनि जे ओ शीतल जलक ओरिआन करथि। तकर बाद ओ अपन प्रभावसँ ओहि ठाम शीतल जलक झरना आनि देलनि। अखनहु ओ कुंड अछिए जाहिमे भक्त लोकनि श्रद्धापूर्वक शीतल जल पीबैत छथि।हम सभ ओहि परिसरमे प्रवेश करितहि रूमालसँ माथ झाँपि लेलहुँ। तकर बाद गुरुद्वारामे दर्शन केलहुँ आ शीतल कुण्डमे जल पीलहुँ।किछु काल ओहि परिसरमे विश्राम केलहुँ। ओ संपूर्ण परिसर बहुत स्वच्छ छल। कतबो काल बैसल रहू,मोन नहि भरत। मुदा हमरासभकेँ तँ आनो ठाम जेबाक छल। अस्तु,ओहिठामसँ बाहर निकललहुँ। बाहरो सँ ओ परिसर देखबामे बहुत नीक लागि रहल छल।हमसभ ओकर कैकटा फोटो खिचलहुँ आ अपन मित्र लोकनिकेँ ह्वात्सपपर पठेलिअनि।

राजगीरमे ब्रह्मकुण्डमे स्नानक बाद हमरा लोकनि नालंदा विश्वविद्यालयक परिसरक मुख्यद्वारिपर पहुँचलहुँ। मुदा भीतेर जेबाक अनुमति नहि भेटल। ओहि ठाम कार्यरत सुरक्षाप्रहरीसभ कहलक जे भीतर जेबाक लेल आनलाइन अनुमति पहिनेसँ लेबाक होइत छैक। तखन की कएल जाइत?हमसभ बाहरेसँ उचकि-उचकि कए किछु-किछु देखबाक प्रयास कएलहुँ। मुदा ओनामे की देखाइत।आखिर हमसभ पुरना नालंदा बिदा भेलहुँ।

पुरनका नालंदा पहुँचलाक बाद हमसभ टैक्सीसँ आगू नहि जा सकैत छलहुँ। तँ टैक्सीकेँ पार्किंगमे राखि एकटा आटो ठीक केलहुँ जे हमरासभकेँ ओहि ठामक प्रमुख स्थानसभ घुमा देत।हम दुनू बेकती आ टैक्सी बला ओहि आटोपर बैसलहुँ।आटो बला प्रशिक्षित छल। ओकरा नालंदाक प्रमुख स्थानसभक इतिहासक जनतब छलैक। मुदा बेसी काल ओ अपना लग बैसल टैक्सी बलासँ गप्प करैत रहैत छल।

आटो बला हमरासभकेँ सभसँ पहिने कारी बुद्धक मंदिरमे लए गेल। ओहि ठाम सएसँ बेसीए विदेशी बुद्ध भिक्षुकसभ पूजा-पाठमे लागल छलाह।हमहूँसभ ओहि ठाम थोड़े काल बैसलहुँ। भगवान बुद्धकेँ प्रणाम केलहुँ। सामनेमे तरह-तरहक बुद्धक प्रतिमासभ बिका रहल छल। से सभ देखैत-सुनैत हमसभ आगू बढ़ि गेलहुँ।आब हमसभ ह्वेनत्सांग स्मारक भवनमे पहुँचलहुँ। ह्वेन त्सांग चीनक यात्री छलाह। ओ पन्द्रह वर्ष धरि भारतमे रहलथि। एहि अवधिमे ओ नालंदामे पहिने विद्यार्थी ,फेर शिक्षकक रूपमे काज केलथि।हुनके स्मृतिमे एहि म्युजियमक निर्माण कएल गेल अछि। एकर निर्माण सन् १९६०ई०मे शुरू भेल छल आ चौबीस वर्ष बाद सन् १९८४ई०मे पूर्ण भेल।हमसभ बड़ी काल धरि एहि म्युजियममे घुमैत रहलहुँ। आब रौद चढ़ल जा रहल छल। ओहिमे जान बँचबैत हमसभ आगू नालंदा म्युजियम पहुँचलहुँ।ई सन् १९१७ई०मे स्थापित भेल छल। नालंदा विश्वविद्यालयक बहुत रास भग्नावशेष एहि ठाम राखल अछि।ओतए लगभग 350 कलाकृति प्रदर्शनीमे राखल गेल अछि जखन कि तेरह हजारसँ बेसी संग्रह सुरक्षित राखल गेल अछि।हमसभ एहिठाम किछु समय बितओलाक बाद विदेशी लोकनि द्वारा स्थापित अनेक बुद्ध मंदिरसभ देखलहुँ। तकर बाद हम सभ प्राचीन नालंदा विस्वविद्यालयक खण्डहर देखबाक लेल बिदा भए गेलहुँ।

आटो बला आसपासक प्रमुख स्थानसभ घुमेलाक बाद हमरा नालंदा विश्वविद्यालयक भग्नावशेष लग छोड़ि देलक।हमसभ ओहिठाम टिकट कीनलहुँ आ भीतर प्रवेश केलहुँ। कनीके आगू गेलाक बाद एकटा प्रशिक्षित गाइड सेहो हमसभ कए लेलहुँ। ओ चारि सए टाकामे अपन सेवा देबाक लेल तैयार भए गेल रहथि। हमरा लोकनिक ई अनुभव रहल अछि जे कोनो ऐतिहासिक स्थानकेँ देखबाक लेल गाइड जरूर रखबाक चाही,भने ताहि लेल किछु खर्च भए जाए।अस्तु,हमसभ तुरंत ई काज केलहुँ।आब हमसभ चारि गोटे छलहुँ।हम दुनू गोटे,टैक्सी बला आ गाइड।भोरसँ अखन धरि निरंतर व्यस्तताक कारण हमर

कथा अखन बाँकी अछि/

श्रीमतीजी बहुत थाकि गेल रहथि। बेसी थकलाक बाद कहीं हुनकर कष्ट आर ने बढ़ि जानि,तेँ हमसभ गाइडकेँ संक्षेपमे प्रमुख-प्रमुख स्थानसभ देखेबाक आग्रह केलिअनि जाहिसँ हमसभ बिना बेसी चलने अधिकसँ-अधिक जानकारी प्राप्त कए सकी। ओ से प्रयास यथासंभव केबो केलनि। मुदा बिना चलने कहीं देखल गेलैक अछि?तथापि,हमसभ प्रयास केलहुँ। ओहो निरंतर किछु-ने-किछु बतबैत रहलाह,सेहो बहुत रोचक ढंगसँ। लगपासमे बहुत रास विदेशी पर्यटकसभ घुमि रहल छलाह।हुनका लोकनिकेँ गाइडसभ हुनके भाषामे बुझा रहल छलखिन।ई कम गौरवक बात नहि अछि जे विश्वप्रसिद्ध नालंदा अपनेसभक बीचमे अछि। कहल जाइत अछि जे नालंदाक खंडहरक मात्र दस प्रतिशत खुदाइ भेल अछि।अखनहु नब्बे प्रतिशत खंडहर जमीनक नीचाँमे अछि। मुदा जतबे उपलब्ध अछि से अद्भुत अछि,ज्ञानसँ भरल अछि।

गाइड आगू बढ़ैत जा रहल छलाह,ठाम-ठाम उपलब्ध ऐतिहासिक चीज-वस्तुसभक बारेमे हमरा लोकनिकेँ बतवैत रहैत छलाह।सैकड़ों साल धरि नालंदा विश्वभरिक शिक्षाक केन्द्र छल। एतए हजारों विद्यार्थी विश्वभरिसँ अबैत छलाह। कहल जाइत अछि जे दू हजार शिक्षक हुनका लोकनिकेँ पढ़बैत छलाह। विद्यार्थी आ शिक्षक लोकनिक रहबाक लेल छात्रावासक उत्तम व्यवस्था छल,से अखनहु ऊपलब्ध खंडहरमे देखाइत अछि। भोजनालय,वाचनालय,पुस्तकालय मंदिरसभक वहुत उत्तम व्यवस्था कएल गेल छल।

ओ दिन केहन अभागल रहल होएत जखन कि विदेशी आक्रान्ता तुर्कीक क्रूर मुगल शासक बख्तियार खिलजी(कुतुबुद्दीन ऐबकक सैन्य सलाहकार) एहि ठामक पुस्तकालयमे आगि लगा देलक।कहाँ दनि आगि लगलासँ पुस्तकालयक लाखो पोथीसभ मासक-मास धू-धू कए जरैत रहि गेल छल।कालक्रमे विश्वविद्यालयक भवनसभ छाउरक ढेरीमे बदलि गेल।सालक-साल ओ ढेरी

ओहिना उपेक्षित पड़ल रहल। सन् १८१२ ई०मे स्काटिस सर्वेयर फ्रैंसिस बुकानन पुरना नालंदा विश्वविद्यालयकेँ फेरसँ तकलनि।सन् १८६१मे सर एलेक्जेन्डर कनींघम विधिवत एकरा प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालयक रूपमे चिन्हित केलथि।हुनका लोकनिक मेहनति आ सतत प्रयाससँ वर्तमान खंडहरसभ लोकक सामनेमे आबि सकल।

प्राचीन कालमे एशियाक सबसँ पैघ विश्वविद्यालयमे सँ एक नालंदा अपन उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्थाक लेल जानल जाइत छल ।एकर स्थापना 450 ई. मे गुप्त वंश के शासक सम्राट कुमार गुप्ता द्वारा कएल गेल छल | हुनका बाद नालंदा विश्वविद्यालयकेँ सम्राट हर्षवर्धन आ पाल शासकक पूर्ण संरक्षण भेटल छल | करीब आठ सए वर्ष धरि ई ज्ञान प्रचारक प्रमुख केन्द्र बनल रहल छल।एहि ठाम महायान बुद्धक शिक्षाक केन्द्र छल। नालंदा विश्वविद्यालय तीन बेर नष्ट कएल गेल।पहिल विनाश स्कन्दगुप्तक शासन कालमे(४५५-४६७ई०) मिहिरकुलक हूनक आक्रमणक कारण भेल छल।दोसर विनाश केलक सातम शताब्दीमे बंगालक गौड़ राजा।तेसर बेर ई काज केलक बख्तियार खिलजी। कहल जाइत अछि जे भारतीय वौद्ध भिक्षु शीलभद्र बख्तियार खिलजीक बिमारीक इलाज कए ओकर जान बचओने रहथि। ताहि उपकारक बदलामे ओ अगिले वर्ष,सन् ११९२मे नालंदा जा कए भिक्षुश्रेष्ठक गर्दनि काटि कए चुकओलक ,संगे नालंदाक पुस्तकालयमे आगि लगा देलक।लौटती बेर मे विक्रमशिलाक पुस्तकालयमे सेहो आगि लगा देलक।

हमरा लोकनि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालयक परिसरमे घुमैत काल भारतवर्षक गौरवशाली अतीतक भग्नावशेष देखि-देखि रोमांचित छलहुँ। मोनमे ई भाव अबैत रहल जे ज्ञानमे एतेक स्मृद्ध रहितहुँ हमसभ अपन एहन मुल्यवान

धरोहरक रक्षा किएक नहि कए सकलहुँ?ज्ञानक संग-संग शक्तिक प्रयोजन इतिहासक एहि घटनासँ स्वतः सिद्ध होइत अछि-

अग्रत: चतुरो वेदा: पृष्ठत: सशरं धनु:। इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि।।

नालंदाक खंडहरसँ जेना निरंतर चिकरि रहल छल-

“जागू!जागू!हे भारत माताक संतानसभ!आबो जागू!

इतिहासक एहन मर्मान्तक घटनासँ सबक लिअ।आपसमे मिलि कए रहू जाहिसँ एकटा मजगूत आ संगठित राष्ट्रक रूपमे हमसभ दुनिआक सामनेमे प्रस्तुत होइ आ फेर केओ एहन कुकृत्य करबाक दुस्साहस नहि कए सकए।”

ई विचार हमरा मोनकेँ बेर-बेर हिलोरि रहल छल, उद्वालित कए रहल छल। हमसभ उत्सुकतावश गाइडसँ बेर-बेर तरह-तरहक प्रश्नसभ करैत रहलिअनि। ओहो यथासंभव उत्तर दैत रहलाह। चारूकात पसरल ऐतिहासिक अवशेष देखबैत रहलाह। मुदा हमर श्रीमतीजी आब थाकि कए चूर-चूर भए गेल छलीह। आखिर,हमसभ सही स्थान देखि विश्रामक लेल बैसि गेलहुँ।तखनहु हमसभ गाइडजीसँ बैसले-बैसल नालंदाक ऐतिहासिक प्रसंगसभ सुनैत रहलहुँ। कैकटा फोटो खिचओलहुँ आ वापस मुख्यद्वारि दिस बिदा भए गेलहुँ।

वापसी यात्रामे हमसभ सिलावमे रूकि ओहिठामक प्रसिद्ध खाजा कीनलहुँ।तीनटा बंडलमे अलग-अलग प्रकारक खाजासभ राखल छल।एकटामे गुंड़क ,दोसरमे नूनगर आ तेसरमे चीनी बला खाजा राखल छल। तीनू पैकेट जतेक भारी नहि छल ततेक जगह छेकने छल। ओकरा सम्हारि कए टैक्सीमे राखि हमसभ आगू बढ़ि गेलहुँ। मंगल दिन छल,उपासक परना करबाक छल। साँझ होइत-होइत हमसभ अपन पटनाक डेरापर पहुँचि गेल रही।नालंदा-

राजगीरक यात्राक स्मरण बड़ी काल धरि होइत रहल। बहुत किछु देखलहुँ आ बहुत किछु छुटि गेल। एक्के दिने कतेक देखि सकितहुँ? कम सँ कम दू दिन जरूरी छल। मुदा जतबे पार लागल सएह कोन कम। आब हमसभ बहुत थाकि गेल रही। अस्तु, भोजन कए जल्दीए सुति रहलहुँ।

१२ मार्च २०२५क साँझमे चेतना समितिक अध्यक्ष श्रीमती निशा मदन झाजीसँ हुनका ओहि ठाम भेंट करबाक लेल हमसभ गेल रही। हुनकर आवासपर करीब एक घंटा रहलहुँ। ओ अपन व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक अनेक संस्मरणसभ सुनबैत रहलथि।घंटा भरिसँ बेसीए समय कोना बीति गेल से पता नहि लागल।ओही बीचमे हमसभ जलखै केलहुँ,काफी पीलहुँ ।आब ओहि ठामसँ बिदा होएबाक समय छल ।लगैत छल जेना बहुत किछु गप्प करब बाँकी रहि गेल।मुदा साँझ पड़ि रहल छल। हुनको पुत्र फगुआक अवसरपर बाहरसँ माए लग आएल छलखिन। मुदा ओतए जतबे काल रहलहुँ बहुत मोन लागल,बहुत किछु बुझबाक,सुनबाक अवसर भेटल । हुनकर जीवनक अनुभव आ उपलब्धिसँ परिचित होएबाक सौभाग्य भेटल। ओ हमरासभकेँ बहुत स्वागत केलनि। ओ बाहर धरि हमरा दुनू बेकतीकेँ अरिआति देलनि आ जाधरि टैक्सी आबि नहि गेल,ओतहि ठाढे रहि गेलथि। हुनकर विनम्रता आ आतिथ्य बिसरल नहि जा सकैत अछि।

१३ फरबरी २०२५क सभसँ पहिने हमसभ अपन वालसखा आ मित्र नवकरहीक आदरणीय श्री नारायण झाजीक आवासपर पहुँचलहुँ। हमसभ जतेक काल ओहि ठाम रहलहुँ,हुनकर पूरा परिवार हमरासभक स्वागतमे लागल रहलथि। अपने तँ ओ रहबे करथि। बहुत दिनक बाद हुनकासँ भेंट कए अपूर्व आनन्दक अनुभव भए रहल छल।हमसभ घंटा भरि ओहिठाम रहलाक बाद वापस अपन डेरा आबि गेलहुँ।

कथा अखन बाँकी अछि/

१४ मार्च २०२५क पटनामे फगुआ रहैक।आदरणीय श्री कामेश्वर चौधरीजीसँ फोनपर भेल गप्पसँ फगुआमे पटनाक स्थितिक बारेमे जानकारी भेटि गेल रहए।से सभ देखबोमे आएल।एक दिन पहिने सँ होलीडे होम खाली भए गेल छल। ओहि ठाम मोसकिलसँ दू-तीन गोटे रहि गेल होएब।ओतेकटा होलीडे होममे हमसभ असगर पड़ल रही। लिफ्ट बंद,कैंटीन बंद,भोरमे तँ पानिओ बंद भए गेल रहए। नीचाँक स्वागत कार्यालयमे कार्यरत दूटा कर्मचारी पीने बुत्त बगलक कोठरीमे बिना गंजी पहिरने पड़ल छलाह।एहनमे ककरा की कहल जाइत?आखिर,एकटा बगलमे रहि रहल परिवारक लोकसभ प्रयास कए पानि चलबओलनि। हमसभ एक दिन पहिने आनलाइन भोजनक सामानसभ मंगा लेने रही। ओएह काज आएल।भोरे चाहक अमल तेज पकड़लक। आब की करी? बाहर निकललहुँ।संयोगसँ होलीडे होमक बाहर कनीके फटकी एकटा खोपड़ीमे चाह बिका रहल छल। ओतहिसँ चारि कप चाह अनलहुँ।एहि तरहेँ दुनू गोटे भोरुका चाह पीबि सकलहुँ। अफसोच होअए जे आइ पटनामे किएक रहि गेलहुँ। हमरा तँ बूझल रहए जे फगुआ पन्द्रह मार्च कए हेतैक। मुदा ई पाबनि दू-दिना भए गेल रहैक। कहुना कए हमसभ ओहीठाम दिन बितओलहुँ।

१५ मार्च २०२५क हमरा भोरे इन्टरसिटी एक्सप्रेससँ मधुबनी वापस जेबाक छल। चिंता रहए जे भोरे टैक्सी भेटि सकत कि नहि।मुदा संयोगसँ ओलापर तुरंत टैक्सी आरक्षित भए गेल। हमसभ निश्चित समयपर पाटलिपुत्र टीसनपर पहुँचि गेलहुँ। ओतहि चाहो पीलहुँ। सामान प्लेटफार्मपर लए जेबाक लेल कूली नहि भेटि रहल छल। रेलवे पूछताछ कार्यालयसँ माइकपर घोषणा करबओलिऐक।से काज आएल। थोड़बे कालमे एकटा कूली ओहिठाम आबि गेल। ओएह हमरासभकेँ प्लेटफार्म नंबर चारिपर लए गेल आ ट्रेन अएलापर ओहिमे बैसाओ देलक। आब जखन ट्रेनमे बैसि गेलहुँ ,तखन चिंता कथीक?

समयपर ट्रेन आबि गेलैक आ खुजिओ गेलैक।सभसँ नीक बात ई भेलैक जे हमसभ मधुबनी नियत समयसँ आधा घंटा पहिने पहुँचि गेलहुँ। मधुबनी टीसनपर सामानसभ उतारबामे एकटा युवक सहयात्री मदति केलनि।हमसभ ट्रेनसँ प्लेटफार्मपर उतरि गेलहुँ। ताबतमे ट्रेनक द्वारिपर एकटा यात्री मोबाइल फोन लेने दौड़ल।

"ई अहाँक मोबाइल फोन अछि की?"

हम अपन मोबाइल तकलहुँ ,ओहो अपन मोबाइल तकलथि।हमरसभक मोबाइलसभ सुरक्षित छल। तखन हम कहनाइ शुरूए केलहुँ-

"नहि,नहि हमरसभक नहि अछि...।"एतबेमे ओ युवक सहयात्री दौड़ल द्वारि लग पहुँचलाह। ओ घामे-पसीने भीजि रहल छलाह। हुनकर मोबाइल चार्जींगमे लागल छलनि। हमरासभकेँ मदति करबाक लेल ओ बाहर आबि गेल रहथि आ मोबाइल ठामहि छुटि गेल रहनि।ओ मोबाइल फोन देखितहि बाजि उटलाह-

"ई हमर फोन अछि।"

हमसभ आश्वस्त भेलहुँ जे हुनकर फोन बाँचि गेलनि।अखनहु नीक लोक एहि दुनिआमे छथि,से सिद्ध भेल।हमरालोकनिक सहयात्रीक मोबाइल फोन भेटि गेलनि आ ओ परेसानीसँ बाँचि गेलाह,से सोचि बहुत संतोष भेल।आब हमसभ प्रसन्नतापूर्वक आगू बढ़ि गेलहुँ, अपन मधुबनी डेरा दिस।

शालीन आ विनम्र श्री उदय चन्द्र झा 'बिनोद'

मधुबनीसँ गाम(अड़ेर डीह) जेबाक क्रममे निश्चित रूपसँ मैथिलीक प्रख्यात कवि,लेखक आदरणीय श्री उदय चन्द्र झा,विनोद,जीक स्मरण भए जाइत छल। गाममे हम कैक गोटे लग हुनकर चर्चा केलिऐक ।ओ सभ हुनका जनैत छलखिन।हुनकर घरो देखल छलनि।असलमे अड़ेर आ रहिका तँ घर-आङन जकाँ अछि। अड़ेरसँ कपिलेश्वर जाएब,चाहे मधुबनी जाएब,चाहे दरभंगा जाएब वा सौराठ जाएब,रहिका जाए पड़त।फेर विनोदजी तँ बहुत प्रसिद्ध आ लोकप्रिय छथि।बेरा-बेरी कैक गोटे हुनकर घरक पता देलनि। तथापि,सही ठेकाना नहि बुझाएल। हम जखन कखनहु रहिका पहुँचए बला रही तँ फटकीए सँ ठिकिआबए लागी। आखिर एक बेर ओ अपन घरक ओसारापर कुर्सीपर बैसल देखेलाह। सामान्यतः हम साझी आटोपर बैसल रहैत छलहुँ तेँ ओकरा बीचमे रोकब मोसकिल भए जाइत छल। एहि तरहेँ मास दिन बीति गेल। तकर बाद निश्चय केलहुँ जे काल्हि हुनकासँ अबस्स भेंट करब। ताहि लेल पहिने सँ हुनका सूचित करबाक लेल फोन केलिअनि। ओ तुरंत फोन उठा लेलनि।गप्प-सप्पसँ लागल जेना कतेक दिनसँ एक-दोसरकेँ जनैत होइ।ओना हम हुनका अपन पोथीसभ कैक

बेर पठओने रहिअनि।फेसबुकपर ओ ओहि प्रसंगमे लिखनो रहथि। मुदा भेंट नहि रहए।फोनपर परिचय-पातक बाद कहलिअनि-

“हम अपनेसँ काल्हि भेंट करए चाहैत छी।”

“आउ ने।”

“ठीक छैक। तँ काल्हि एगारह बजेक आसपास अबैत छी।”

प्रात भेने आटो बलाकेँ फोन केलिऐक। ओकर आटोसँ गाम धरि जाएब।बीचमे रहिकामे विनोदजीक ओहिठाम घंटा भरि रूकब। से सभ बात ओकरा परिछा कए कहि देलिऐक। २५ फरबरी २०२५ कए लगभग एगारह बजे हम हुनका ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ। ओ सभ दिन जकाँ धोती-कुरता पहिरने अपन घरक ओसारापर बैसल किताब पढ़ि रहल छलाह। हम हुनका प्रणाम केलिअनि। ओ तुरंत हमरा चिन्हि गेलाह। हम हुनका अपन उपन्यास,जयतु जानकी आ ठेहा परक मौलाएल गाछ देलिअनि। ओहो अपन कविता संग्रह,जुलुम भए गेलै देलनि। हुनकर पुत्र सेहो आबि गेल रहथिन।हुनकोसँ परिचय भेल। गप्प-सप्पक क्रममे ओ कहलनि-
“अहाँ हमर प्रिय लेखक छी।”

हुनका मुँहे से सुनि हम कनी चकित जरूर भेलहुँ,मुदा बहुत नीक लागल।एतेक पैघ साहित्यकार जखन कहि रहल छथि तँ सोचिए कए कहने हेताह।हम कहलिअनि-

“गामक एतेक लगीचमे रहबाक कारण आ ओहुना अपने हमरा लोकनिक साहित्यिक अभिवावक छीहे। अपने एहिना आशीर्वाद दैत रही।”

करीब घंटा भरि हमसभ गप्प-सप्प करैत रहलहुँ। मैथिलीक प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता स्वर्गीय यशोधर झाजीक चर्चा सेहो

भेल।हुनकर घर ,परिवारक बारेमे बहुत रास जानकारी हुनकासँ भेटल।ओहि बीचमे गरम-गरम चाहो भेलैक। आब जेबाक समय छल। आटो बला अगुता रहल छल। अस्तु,हुनकासँ बिदा लए गाम बिदा भेलहुँ।

व्यवहार कुशल, विनम्र आ बहुत सहज स्वभावक विनोदजीसँ भेल ई भेंट बहुत आनन्ददायक आ उत्साहवर्धक रहल। ओकर बादो प्रायः नित्य गाम अबैत-जाइत हम हुनका ओही ठाम बैसल देखिअनि। बेसी काल कोनो-ने-कोनो किताब पढ़ैत देखिअनि। रहिकामे साहित्यिक गतिविधिक मुख्य केन्द्र आदरणीय विनोदजी रहलाह अछि। हुनकर मार्गदर्शनमे सालोंसँ ओहि ठाम विद्यापति पर्व मनाओल जाइत अछि। एहू बेर रहिकामे विद्यापति पर्व बहुत धूमधामसँ मनाओल गेल। हमरा से सभ अखबारमे पढ़बाक अवसर भेटल। हमरा रहिकासँ अबैत-जाइत मोन भेल रहए जे जा कए देखिऐक।मुदा नहि जा सकलहुँ...।ओहि समयमे हुनकर ओसारापर बेस हब-गब देखाएल रहए।

जखन हम फेसबुकपर हुनका संग भेल भेंटक विषयमे लिखलिऐक तँ बहुत गोटे अपन प्रतिक्रिया लिखलनि । ओही क्रममे आदरणीय प्रोपेसर डाक्टर भीमनाथझाजी लिखैत छथि-

“श्री विनोदजीसँ गपसप बड आनन्ददायक ओ ज्ञानवर्धक होइछ। नीरक्षीरविवेकी, शालीन ओ समकालीन मैथिली साहित्यक द्रष्टा ओ स्रष्टा हिनका सन आब बड कम लोक छथि।”

(https://www.facebook.com/photo?fbid=3831558613785788&set=a.1388340294774311)

डेरापर वापस गेलाक बाद हुनकर देल कविता संग्रह पढ़लहुँ। बहुत रसगर कवितासभ अछि।कैकटा कवितामे निराशा भाव सेहो पढ़बामे आएल। ओहीमे ओ ठीके कहने छथि-गाम अखनहु जीबैत छै,ओहिना छै ,एक बेर

देखिऔक तँ आबि कए।-से बात तँ हम स्वयं देखलिऐक एहि बेर। अखनहु एहि ठामक तरकारीसभमे बहुत स्वाद छैक।भोज-भात खूब होइत छैक। मुदा लोकसभ बेलसि भए गेल छैक। केओ ककरो ओहि ठाम नहि जाइत छैक।फगुआमे जोगिरा गबैत लोक नहि देखाइत छैक। से सभ भाव हुनकर कवितामे कैक ठाम अनुगुंजित भए रहल अछि। किछुसाल पूर्व हुनका प्रतिए लिखल गेल हमर कवितासद्यः मोन पड़ि गेल-

किएक छी एतेक उदास ?

हे महा कवि!

किएक छी अहाँ एतेक उदास?

सुनैत छी भरल-पुरल अछि

अहाँक गृहस्थी

सासुरेमे बनओने छी तीनमहला मकान

इलाकामे जानल-मानल छी अपने

साहित्यक कोनो विधा

अपनेसँ बाँचल नहि अछि

अखनहुँ फेसबुकपर

अहाँक कविता पढ़ि पाठक

झुमि जाइत छथि

तखनो अहाँ छी उदास!

किएक कहि रहल छी?

“हम परिणाम निराशा”

ई जीवन छैक श्रीमान् !

एतए एहिना होइत छैक

से अहाँसँ बेसी के बूझैत अछि?

जीवनकेँ बुझबाक,गुणबाक हेतु

अहाँ कहिआसँ छी लागल

तथापि अहाँ किएक छी उदास?

अहाँ बहुत जेठ छी

हम की कहि सकैत छी अपनेकेँ?

मुदा

हम एतबा विनती तँ कइए सकैत छी

नहि बुझू अपनाकेँ असगर

अहाँ संगे अछि

समस्त मैथिली साहित्य परिवार

बहुत उमीदक संग ।

छी अहाँ प्रणम्य

हे महा कवि!

नहि रहू अहाँ एतेक उदास

(11.1.2022)

आदरणीय श्री विनोदचन्द्र झा'विनोद'जीसँ भेल भेंट बहुत सार्थक रहल। आशा अछि,हुनकासँ फेर भेंट भए सकत। ओ स्वस्थ रहथि आ दीर्घकाल धरि हमरा लोकनिकेँ मार्गदर्शन करैत रहथि,से ईश्वरसँ प्रार्थना।

२५।०५।२०२५

'मिथिलाक रबीन्द्र' प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रकान्त झा

पछिला कतेको सालसँ आदरणीय प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रकान्त झाजीसँ हमरा संपर्क अछि।हम हुनका अपन कोनो पोथी पठओने रहिअनि। ओ ओहि पोथीकेँ तुरंत पढ़ि हमरा फोन केलनि आ अपन सकारात्मक प्रतिक्रिया देलनि। तकर बाद तँ हम हुनका अपन किताबसभ नियमित पठबति रहलिअनि। ओ ओकरा पढ़ि फोनपर अपन प्रतिक्रिया दैत रहलाह।ताहि संगे बड़ी काल धरि गप्प-सप्प,हास्य-व्यंग होइत छल। ओ सदिखन प्रसन्न आ आनन्दपूर्ण अवस्थामे रहैत छलाह। सभसँ प्रभावित करबाक बात तँ ई रहैत छल जे सभ तरहेँ संपन्न आ एतेक वरिष्ठ रहितहु हुनकामे अहंक कनीको लवलेश नहि रहैत छनि। हुनकर सहज आ सरल व्यवहारसँ के नहि प्रभावित भए जाएत?स्वाभाविक छल जे हुनका प्रतिए हमर आदर बढ़ैत गेल।हुनकर बात-व्यवहार हमरा बहुत आकृष्ट केलक ।हुनकर सकारात्मक रुखि आ उत्साहवर्धनसँ हमरा सृजनशील रहबाक प्रेरणो भेटैत रहल। हम जे निरंतर आ नियमित लिखैत रहलहुँ अछि ताहिमे हुनकर बहुत योगदान छनि। ओ हमर पठाओल किताबसभ पढ़ैत रहलाह आ पढ़लाक बाद अपन मंतव्य दैत रहलाह जे बहुत लाभकारी सिद्ध भेल।

हम मैथिलीमे लिखल अपन पोथीसभ हुनके नहि,अपितु अनेक विद्वान,मैथिलीक प्रोफेसर ,लेखक,समीक्षक लोकनिकेँ पठबैत रहलिअनि अछि। ओहिमे बहुत कम लोक छथि जे पार्सल पहुँचलापर पहुचनामो देथि,पढ़बाक तकर बाद अपन प्रतिक्रिया देबाक बात तँ छोड़ू। मुदा किछु गोटे एकर अपवादो छथि, जाहिमे आदरणीय प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रकान्त झाजीक नाम हमरा दृष्टिमे औअलि अछि। कारण किछु गोटे शुरूमे जरूर उत्साह देखओलनि,मुदा बादमे ओ हिलओलो,डोलओलोपर किछु नहि केलथि। मैथिली पाठक आ लेखक लोकनिक बीचमे एहन संवादहीनता निश्चित रूपसँ बहुत दुखद अछि। आखिर पोथी तँ पाठकेक लेल लिखल जाइत अछि। यदि पाठक ओकरा पढ़थि,ओहिपर अपन मंतव्य स्पष्टता आ इमान्दारीसँ राखथि तखन तँ बाते किछु आओर होइत। मुदा से स्थिति अछि नहि। एहन परिस्थितिमे साहित्यिक जगतमे खास कए मैथिलीमे इन्द्रकान्त बाबू सन लोकक उपस्थिति बहुत माने रखैत अछि,बहुत आवश्यको अछि।

हमरे नहि अपितु अनेक नव,अज्ञात रचनाकारकेँ उत्साहित करबाक लेल माननीय इन्द्रकान्त बाबू सभ दिन मोन राखल जेताह। हम हुनकर एहि गुणक अनुशंसा,प्रशंसा अपन परिचित दूटा रचनाकार(कवि राज किशोर मिश्रजी आ आदरणीय कामेश्वर चौधरीजीसँ केने रहिअनि। ओहो सभ हुनकर संपर्कमे अएलथि। हुनके सभक सेहो बहुत नीक अनुभव भेलनि। ई अछि हुनकर उदार आ जीवंत व्यक्तित्वक आभा जकर सानिध्यमे जे केओ गेलथि से निश्चित रूपसँ प्रभावित भेलथि,आनन्द उठओलथि आ लाभान्वित भेलथि।

इन्द्रकान्त बाबू कोरोना कालक समयमे २०२२मे दिल्ली आएल रहथि। ओ हमरा सूचितो केलनि,मुदा हमरा मोनमे कोरोनाक ततेक भय छल जे हुनका

लग जेबाक साहस नहि भेल।ओ मास दिन लगीचे मे नोएडामे रहि कए वापस पटना चलि गेलथि ।हमरा बादमे एहि बातक बहुत अफसोच भेल रहए।

"भेंट करबाक चाहैत छल,जे होइतैक,देखल जइतैक।"-मोनमे सोचाए। मुदा जानक डर मामुली नहि होइत अछि, से भुक्तभोगीए कहि सकैत छथि। कोरोना तेहन आतंक पसारने छल जे सालक-साल संपूर्ण विश्वकेँ हिला कए राखि देलक,हमर कोन कथा?

अपन नोएडा-दिल्ली प्रवासक समयमे इन्द्रकान्त बाबू निरंतर संपर्कमे रहलाह। किछुओ नव बात होइतैक तँ अबस्से कहितथि।ओ कहथि जे कोना हुनकर सोसाइटीमे बूढ़सभक मध्य प्रसिद्ध भए गेल छथि,कोना ओ हुनका लोकनिकेँ अपन कविता पाठसँ प्रभावित केलनि। अनेक तरहक समाचारसभ कहैत रहलथि। हुनकासँ भेंट नहि भेल,मुदा मोनमे ई निर्णय भए गेल जे पटना जाए जतेक जल्दी संभव होएत हुनकासँ अबस्स भेंट करबनि।

समय बीतैत गेल,मुदा पटना जेबाक कार्यक्रम नहि बनि सकल। आखिर एहि बेरक ग्राम यात्राक बीचमे किछु दिनक लेल पटना जेबाक कार्यक्रम बनओलहुँ।फगुआसँ पहिने १० मार्च २०२५ कए पटना पहुँचलहुँ। ओहिसँ एक दिन पहिने इन्द्रकान्त बाबूक फोन आएल छल। हम अपन संभावित कार्यक्रमक बारेमे कहलिअनि। ओ कहलाह-

"बहुत नीक समाचार देलहुँ। हमहूँ बहुत उत्सुक छी,अपनेसँ भेंट करबाक लेल। मुदा एगारह तारीख कए हम एकटा उपनयनक क्रममे बाबा वैद्यनाथ धाम जाएब आ बारह तारीख कए लौटब।तकर बाद अबस्स भेंट भए सकत। ओना बारहो तारीख कए साँझक बाद भेंट भए सकत कारण हम ताधरि लौटि गेल रहब। "

कथा अखन बाँकी अछि/

सभ बातक ध्यानमे रखैत हम तेरह तारीख कए हुनकासँ भेंट करबाक कार्यक्रम बनओलहुँ। ताहिसँ पूर्व हुनका फोन केलिअनि। ओ एक-दू बजेक अएबाक आग्रह केलनि।हम दू बजे एकटा आटोसँ हुनकर डेरापर बिदा भेलहुँ। आटो चालक मुसलमान छलाह,मुदा रहथि बहुत नीक। ओ इन्द्रकान्त बाबूक राजेन्द्र नगर,पटना स्थित घरक लगीच धरि पहुँचा देलनि। मुदा तकर बाद हमसभ एमहर-ओमहर बौआए लगलहुँ।तकर कारण छल जे हमरा हुनकर घरक सही ठेकाना नहि छल,ने हम हुनकासँ से पुछि सकलिअनि। हमरा लग हुनकर डाक पता छलहे आ ओहि पतापर हम कैक बेर किताबसभ पठा चुकल छी। मुदा पार्सल आ मनुक्खमे फरक होइत छैक। आसपासक रोडक जनतब नहि रहबाक कारण हम करीब घंटा भरि बौआइति रहि गेलहुँ। एहि बीचमे हम हुनका अनेक बेर फोन केलिअनि। मुदा ओ फोन उठेबे नहि करथिन। फोनक घंटी बजैत-बजैत बंद भए जाइक। हम हुनकर दोसर मोबाइल नंबरपर फोन केलहुँ,हुनकर दिल्ली स्थित पुत्रक मोबाइलपर फोन केलहुँ। किछु आर गोटेकेँ सेहो फोन केलिअनि। मुदा सभ प्रयास व्यर्थ साबित भेल। हम आब बहुत परेसान भए गेल रही। लगपासमे केओ हुनकर घरक हुलिआ नहि बताबए। भेल जे आब वापस अपन डेरा लौटि जाइ कि एतबेमे हुनकर फोन आबि गेल।हुनकर ध्यान मोबाइल फोनमे हमर अनेक मिसकालपर गेलनि।ओ स्वयं हमर पहुँचबामे भए रहल विलंबसँ चिंतित छलाह-

“रस्ता भुतला गेलिऐ की?”

“हमसभ लगीचे मे कतहु छी,मुदा अहाँक घर नहि ताकि पाबि रहल छी।”

“हमरा अंदाज लागि गेल। भारतीजी घंटा भरिसँ अहाँक प्रतीक्षा करैत-करैत चलि गेलाह। कोनो बात नहि।अहाँ फोन वाहन चालककेँ दिऔक।”

हम फोन वाहन चलाककेँ दैत छी। ओ रस्ताक सही जनतब हुनकासँ लेलक आ पाँच मिनटक भीतरे हमरा अपन गंतव्य लग पहुँचा देलक।हम आटोसँ उतरैत छी तँ देखैत छी जे इन्द्रकान्त बाबू स्वयं गंजी-धोती पहिरने सड़कक कातमे हमर स्वागतमे ठाढ़ छथि। हुनकर बेचेनी स्पष्ट देखल जा सकैत छल। हम आटो बलाकेँ किराया दैत छी आ   अपन सामानसभक संगे हुनका पाछू-पाछू बिदा भए जाइत छी।सामनेमे रेलक आवागमन देखल जा सकैत छल।असलमे ओ स्थान राजेन्द्र नगर रेल टीसनक पछुआर थिक।हम सामान सहित हुनकर भूतल स्थित घरमे हुनके संगे पहुँचैत छी।

भूतलपर स्थित हुनकर निवासपर पहुँचतहि हमरा पाग,डोपटा पहिरा कए ओ स्वागत करैत छथि। हुनकर पौत्र तकर वीडियो बनबैत छथि,फोटो खिचैत छथि। तकर बाद ओ अपन लिखित पुस्तकसभ दैत छथि। हमहूँ अपन नवीनतम उपन्यास,यज्ञसेनी,हुनका देलिअनि। सभ घटनाक फोटो हुनकर खिचलथि,तकरासभकेँ बादमे   हमरो मोबाइलपर पठा देलथि। कहि नहि सकैत छी ,कतेक अपनत्व भावसँ ओ हमरा स्वागत केलनि। रसगुल्ला,गुलाब जामुन,पेरा,खजूर खाउ,जतेक खाउ ,टेबुलपर राखल अछि। संगे हुनकर ओहूसँ बेसी मधुर व्यवहारसँ आनन्दक वर्षा भए रहल छल। करीब दू घंटा हम ओतए रहलहुँ। ओही बीच श्रीकामेश्वर चौधरीजीक फोन दिल्लीसँ आबि गेलनि। फोनपर भेल हुनकर वार्तालापपसँ सोनामे सुगंध लागि गेल। आब साँझ पड़ि रहल छल। हम हुनकासँ आशीर्वाद लए डेरा वापस बिदा भेलहुँ। ओ फेर हमरा सड़क धरि अरिआति देलनि। हुनकर विनम्रता आ सिनेहसँ हम अभिभूत छलहुँ। रस्ता भरि हुनकर ध्यान अबैत रहल।

फेसबुकपर हम आदरणीय प्रोफेसर इन्द्रकान्त झाजीसँ भेंटक जनतब देलिऐक तँ अनेक विद्वानलोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया देखबामे आएल जाहिमे सँ किछु एहिठाम उद्धृत कए रहल छी-

आदरणीय प्रोफेसर भीमनाथझा-

“भाग्यशाली तँ अहाँ छीहे। तकर एक प्रमाण ईहो। 'मिथिलाक रबीन्द्र'सँ सम्मानित हैब सामान्य बात नहि भैलै। ताहूमे एहि रंगदिवसपर...। हम तँ हिनका 'सर्वतंत्रस्वतंत्र' बुझै छियनि, महामहोपाध्यायोसँ पैघ। भविष्यमे हमरो लोकनि द' लोक कहत, जँ कहत तँ यैह जे ईहो सभ 'इन्द्रकान्त युग'क थिका।”

आदरणीय प्रोफेसर रमण झा

“बहुत -सुन्दर! आदरणीय इन्द्रकान्त बाबू स्वयं विद्वान छथि आ विद्वानक सम्मान करए जनैत छथि-

विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जन परीश्रमम्।

न हि वन्ध्या विजानाति गर्भिणी प्रसवव्यथाम्।।

दुनू साहित्यकारकेँ बधाइ आ शुभकामना!”

आदरणीय विनोदानन्द झा

“आदरणीय इन्द्रकान्तजीक ई विनम्रता सभकेँ भावुक कS दैत अछि। बधाइ।”

(https://www.facebook.com/permalink.php?story_fbid=pfbid027E4AdNnvDK32X15nkHrNZv3fPVudZSGpHMyo2vH38JCymy1pb34U8hwDFJQkLfw6l&id=100007950603547&rdid=JHtSnPJf4yfbcwqP#)

भेंट-घाँटक क्रममे आदरणीय प्रोफेसर इन्द्रकान्त झाजीसँ हुनके रचित किछु कवितासभ सुनबाक सुअवसर भेटल। कविताक किछु प्रमुख पाँति छल-

बूढ़ छी

बुढारी मे

ऊर्जावान छी

आँखि कान ठीक अछि

पढ़ै छी

लिखै छी

कवि सम्मेलनमे गरजै छी

हार्ट हमर अछि बड़ मजगूत

कते बूढाकेँ

हम मरैत देखने छी

हम डरै नहि छी

कन्हा दै छी

प्रसन्न रहै छी

हमरा ने कोनो बिमारी अछि

आइ काल्हि रह रहाँ हाइब्लडप्रेसर

लो बल्डप्रेसर आ डाइबीटीज

लोक सब केँ तंग करैए

मुदा हमरासँ कोसो दूर रहैए

हम खूब प्रेमसँ पनतुआ रसगुल्ला

चाभैत रहैत छी

आनन्दक जीवन बितबै छी।

(हम बूढ़ छी पृष्ठ ६०)

बूढ़ छी

बुढ़ारी जीवन

जीबैक सलुक

हम जानै छी,

धिया-पुताक

सब बात हम मानै छी

बंशी बजबै छी

बाँसक नहि

चैनक बंशी

जखन जे दैए

खाए लै छी

नहि दैए

लोटा भरि पानि

पीब लै छी

ढ़ेकार करै छी

ककरो विरोधमे

किछु नहि बाजै छी

हमर बिरोधमे बाजैए

सुनियो कए अन्ठबै छी

सुखमय जीवन जीबै छी

(हम बूढ़ छी, पृष्ठ ८८)

ऊपरोक्त पाँतिसभमे आदरणीय इन्द्रकान्त झाजीक जीवनमे संतुष्टि भाव आ वृद्धावस्थोमे जीवंतता बनओने रहबाक गूण स्पष्ट झलकैत अछि। जेहने सरस आ सार्थक कवितासभ ओ लिखैत छथि,वस्तुतः तेहने आनन्दमय जीवन ओ जीबैत छथि। इएह कारण अछि जे हुनकर कवितासभ पढ़ला,सुनलासँ जीवनमे उल्लास, उत्साह बढ़ैत अछि। जीवनक रहस्य बुझबामे,गुणबामे सफल ई कवितासभ सरिपहु अद्भुत अछि। इएह सभ सोचैत हम पटनाक केन्द्र सरकारक होलीडे होम स्थित अपन डेरा दिस बिदा भए गेलहुँ।रस्ता भरि आ डेरापर पहुँचलाक बादो बड़ीकाल धरि हुनका बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ- सही मानेमे जतबे महान,ततबे विनम्र ,सरल आ व्यवहार कुशल छथि ओ ।

बेजोड़ छथि श्री शिवशंकर श्रीनिवास

१८ जनबरी २०२५क हम दिल्लीसँ मधुबनी पहुँचलहुँ। किछु दिन गामक काजसभमे लागल रहलहुँ। तकर बाद किछु स्थानीय साहित्यकारलोकनिसँ भेंट करबाक कार्यक्रम बनाबए लगलहुँ। एही क्रममे हम मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय श्री शिवशंकर श्रीनिवासजी मोन पड़लथि।दूसाल पहिने एक बेर दिल्ली द्वारका स्थित हुनकर जमाएक डेरापर हुनकासँ भेंट भेल छल।ओहि दिन हुनकर व्यवहारसँ बहुत प्रभावित भेल रही। ओहि दिन हुनकर पत्नी अस्पतालमे भर्ती रहथिन। मुदा हमरासँ भेंट करबाक लेल ओ अस्पतालसँ डेरा आबि गेल रहथि। हुनकर बेटी,जमाएसभ हमर स्वागतमे लागल रहलथि।हम हुनका अपन किछु पोथीसभ देने रहिअनि। ओहिमे हमर उपन्यास,**हम आबि रहल छी,** सेहो सामिल छल। किछु दिनक बाद ओ एहि उपन्यासकेँ पढ़लनि आ अपन बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया देलथि।हम एहि बातसँ बहुत उत्साहित भेल रही।

हम श्रीनिवासजीसँ ह्वात्सअपपर संपर्क केलिअनि।हुनका अपन कार्यक्रमक बारेमे कहलिअनि। ओ तुरंत अपन गाम अएबाक आग्रह केलनि,अपन पता पठा देलनि। आइ जाएब,काल्हि जाएब करैत-करैत समय बीतैत गेल। एकदिन हुनकासँ फोनपर गप्प भेल तँ ओ २४ मार्च २०२५ कए पटना होइत

दिल्ली जेबाक सूचना देलनि। आब तँ किछुए दिन बाँचल छल। हम दोसरे दिन हुनका लोहना जेबाक लेल टैक्सीक ओरिआनमे लागि गेलहुँ।मधुबनीमे टैक्सीक व्यवस्था नीक नहि अछि। जे से किराया लैत अछि,ओहूपर सँ कतेक तरहक असुविधाक संभावना बनले रहैत अछि। समयक कोनो पाबंदी नहि,व्यवहारक कोनो मर्यादा नहि,किछु बाजि सकैत छथि।एहिसँ नीक आटो बला सभ अछि जे सुभ्यस्तो होइत अछि आ सामान्यतः विनम्रो। मुदा लोहना जेबाक लेल आटो भेटल नहि।आखिर एकटा टैक्सी बलासँ बात तय भेल।ओकरा अपन गंतव्य आ समय बतओलिऐक। सभ बात बुझलाक बात ओ अपन स्वीकृति देलक।

१९ अप्रैल २०२५ कए नियत समयपर टैक्सी आबि गेल। टैक्सी बला ओना ठीक-ठाक लोक बुझेलाह,मुदा हुनका लोहना जेबाक मार्गक स्पष्ट जानकारी नहि छलनि।हम हुनका श्रीनिवासजीसँ गप्प करा देलिअनि। ओ मधुबनीसँ लोहना जेबाक रस्ताक सही जनतब हुनका देलखिन।मधुबनीसँ रामपट्टी-भगवतीपुर-बिरौल चौक-(दक्षिण दिस मुड़ि जाउ) -रैमा-रुपौली आ तकर बाद लोहना।ओना हम एहि इलाकामे एक बेर बरिआतीक क्रममे गेल रही। मुदा रातिक समय रहैक,कोनो बहुत जानकारी नहि भए सकल छल। एहि बेर बाध-बोन देखैत-सुनैत करीब घंटा भरिमे हम लोहना पहुँचि गेलहुँ। लोहना पहुँचबासँ पहिने हुनकर फोन कैक बेर आबि गेल छल। जखन हमसभ हुनकर घर लग पहुँचलहुँ तँ ओ अपन दनानसँ सटले रोडेपर हमर प्रतीक्षा कए रहल छलाह।हम टैक्सीसँ उतरलहुँ आ हुनका नमस्कार करैत हुनके संगे हुनकर घरक ओसारापर पहुँचि गेलहुँ।

हमसभ आपसमे गप्प-सप्प कइए रहल छलहुँ कि एकटा शोधार्थी सेहो आबि गेलाह।बीच-बीचमे हुनकर शोधपत्रपर अपन टिप्पणी आ ओहिमे सुधारक संभावित विषयपर सेहो ओ मार्गदर्शन दैत रहलखिन।हमर भातिज प्रसिद्ध कवि

आदरणीय श्री राज किशोर मिश्रजी आ हुनकर साहित्यिक कृतिक चर्चा सेहो ओ केलनि।प्रसिद्ध कथाकार श्री अशोकक चर्चा सेहो भेल। कहलथि जे ओ गाममे रहितथि तँ अबस्स अबितथि आ सभगोटे संगे बतिअबितहुँ। असलमे अशोकजी हुनकर अभिन्न मित्र आ ग्रामीण छथिन। दुनूगोटे एक्के विधा,कथामे लिखैत छथि, संगे समीक्षको छथि।हुनका लोकनिक आपसी सिनेहक चर्चा पहिनहु सुनने छी। बादमे अशोकजी ह्वात्सअपपर हमर एहि यात्राक चर्चा केलनि प्रसन्नता व्यक्त केलनि।

श्रीनिवासजीक सरलता,विनम्रता आ अपनत्व भाव ककरो मोहित कए सकैत अछि। ओहिठाम पहुँचितहि लगैत छल जे कोनो अपन आदमीसँ भेंट भए रहल अछि।

बरषहि जलद भूमि नियराए,जथा नबहि बुध विद्या पाए।

तुलसी रामायणक उपरोक्त कथन सद्यः प्रमाणित भए रहल छल। विश्वास नहि भए रहल छल जे मैथिलीक एहन प्रसिद्ध आ सफल कथाकार, साहित्यक एतेक पैघ विद्वानसँ भेंट भए रहल अछि। अतिसय सहज आ स्वाभाविक मुस्कान हुनकर व्यक्तित्वक आभाकेँ चमत्कृत कए रहल छल। सही मानेमे हुनका संग बिताओल गेल प्रत्येक क्षण आनन्ददायी छल। एहन विलक्षण व्यक्तित्वक लोकसँ भेंट कए हम सरिपहु बहुत आनन्दित भेल छलहुँ।

लगभग दू घंटा हम हुनका ओहिठाम रहलहुँ।हुनकर श्रीमतीजी ताधरि जलखैकक ओरिआनमे लागल रहलीह।कहि नहि सकैत छी जे कतेक स्वादिष्ट छल ओ भुजल चूरा आ आलूक चप। कैक बेर परसन लए कए हम खाइत रहलहुँ।ओ जलखै नहि,अपितु भोजन भए गेल। रातिमे मधुबनी डेरापर वापस अएलाक बाद किछु भोजन करबाक जरुरति नहि रहि गेल।

आब साँझ पड़ि रहल छल। टैक्सी बलाक संग तय समय सीमाक अधीन वापस हेबाक छल। हम सभ चाह पीलहुँ।श्रीनिवासजीकैँ आ ओतए उपस्थित शोधार्थीकैँ अपन लिखल उपन्यास देलिअनि।तकर बाद हम ओहिठामसँ बिदा हेबाक लेल हुनकासँ आज्ञा लेलहुँ। फेर ओएह रस्ता,ओएह बाध-बोन। मुदा एहि बेर दुबिधा नहि छल,तेँ सुगम लागि रहल छल। सूर्यास्त भए रहल छल।भगवान सूर्यकैँ मोने-मोन प्रणाम केलहुँ । मोनमे बहुत संतुष्टिक भाव छल।हम वापस मधुबनी स्थित अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ।हमरा बहुत प्रसन्न देखि श्रीमतीक उत्सुकता बढ़लनि।हुनका सभटा बात कहलिअनि।ओ कहलीह-

"अपन समाजमे अखनहु एहन लोकसभ छथि,से बहुत गौरवक बात।"

हम दुनू बेकती बड़ी काल धरि आजुक यात्रापर चर्चा करैत रहि गेलहुँ।

मैथिली भाषा आ साहित्यक एकान्त साधक,डाक्टर योगानन्द झा

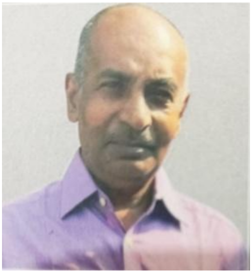

"अन्यायोक कोनो सीमा होइत अछि।"

ई शब्द थिक मैथिलीक प्रसिद्ध विद्वान लेखक,समालोचक आदरणीय डाक्टर श्री योगानन्द झाजीक जे ओ फोनपर हमरा किछु साल पूर्व कहने रहथि। हुनकर इसारा केमहर छल से सोचल जा सकैत अछि।असलमे ओ पहिल व्यक्ति छलाह जे स्वेच्छासँ हमर पोथीपर समीक्षा लिखलनि।उपरोक्त गप्पक किछु दिनक बाद ओ स्पीडपोस्टसँ अपन हाथसँ लिखल हमर उपन्यास,मातृभूमिक समीक्षा पठओने रहथि। कहलथि जे हमर पोथीसभ पढ़ैत रहलाह अछि। बहुत दिनसँ ओहिपर लिखबाक सोचि रहल छलाह। मातृभूमि उपन्यासपर समीक्षा लिखि कए बहुत दिनसँ अपने लग रखने रहथि।इच्छा छलनि जे ओकरा हमरा हाथे मे देताह।परन्तु, दिल्ली दिस अएबाक संयोग नहि बनि रहल छलनि।तेँ ओ आब डाके सँ पठा रहल छथि।बादमे ओ हमर उपन्यास,बदलि रहल अछि सभ किछुक समीक्षा सेहो लिखलनि जे अनेक पत्रिकासभमे छपल छल।

सन् २०१८मे आदरणीय डाक्टर योगानन्द झाजी दिल्ली आएल रहथि। हमरा फोनो केलाह।हम हुनकासँ भेंट करबाक लेल सभास्थल(इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र) गेबो केलहुँ। मुदा ओ कार्य्रक्रममे व्यस्त रहथि, भेंट नहि भए सकल।हम

एक घंटा ओतए रहि वापस भए गेल रही। बादमे हुनकासँ फोनपर कैक बेर गप्प-सप्प होइत रहल।हम जखन कखनहु हुनका अपन किताब पठबिअनि तँ ओ तकर पहुँचनामा अबस्स सूचित करथि।ओ समय-समयपर कैक बेर किताब पढ़ि अपन पाठकीय प्रतिक्रियासँ सेहो अवगत करबैत रहलाह।

आदरणीय डाक्टर योगानन्द झाजीसँ पहिल बेर साक्षात भेंट भेल मार्च २०२४मे जखन कि हम दरभंगा किछु काजसँ गेल रही।हुनकासँ भेल हमर प्रथम भेंटक चर्चा हम कतहु आन लेखमे कए चुकल छी,तँ पुनरावृति नहि करैत एतबे लिखि रहल छी जे हुनका बारेमे जे हमर श्रद्धा आ सिनेह छल से ओहि भेंटक बाद आर मजगूत भए गेल।हम हुनकर विनम्रता,मैथिलीक प्रति अनुरागकेँ नहि बिसरि सकैत छी। ओ बेर-बेर ई बात दोहरओलनि जे पोथीसभ मोफतमे नहि बाँटबाक चाही। मोफतमे भेटल वस्तुक लोक महत्व नहि दैत छैक।एहन पोथीकेँ लोक नहि पढ़ैत छैक।संगे लेखकक आर्थिक क्षति तँ होइते छैक। मुदा लेखको की करए?किताब छपि कए आबि गेल छैक। ओकर बंडलसभ घरक सीमित स्थानकेँ छेकने जा रहल छैक।गृहस्वामिनी फराके चिचिआ रहल छथि। खरचा तँ जे भेल से भेबे कएल ,ऊपरसँ अनेक तरहक परेसानी से होइत रहैत अछि। तेँ किछु आर खरचा कए किताबसभ पार्सल द्वारा संभावित पाठक धरि पहुँचाओल जाइत अछि। मुदा तकर परिणाम?नहि चर्चा करब बेसी नीक।

हम कैक बेर अपन पोथीसभक बंडल पार्सलसँ हुनका पठा दैत छलिअनि।ओ ओहि पोथीसभकेँ चुनिन्दा लेखक,समीक्षक लोकनिकेँ दैत छलखिन आ आग्रह करैत छलखिन जे तकर पहुँचनामा हमरा जरूर देथि।बहुत गोटे से केबो केलनि।आदरणीय शशिबोध मिश्र ‘शशि’जी तँ हमर उपन्यास,लजकोटरपर समीक्षो लिखलनि आ बादमे जखन दिल्ली अएलाह तँ भेंटो केलनि।मुदा बहुत रास विद्वान लोकनि जिनका हमर पोथी ओ देलखिन

,अपन पाठकीय प्रतिक्रिया नहि दए सकलथि। एक बेर किछु कार्यवश योगानन्द बाबू पटना गेल रहथि तँ ओहिठामक तीनटा प्रमुख मैथिली पुस्तक विक्रेतासभसँ भेंट कए हमर उपन्याससभ देलखिन आ आग्रह केलखिन जे हमर पोथीसभक विक्रयक उचित व्यवस्था करथि। मुदा से सभ किछु नहि भेल।

पाँच अप्रेल २०२५क मधुबनीमे **सगर राति दीप जरए** कार्यक्रम हेबाक रहैक। उम्मीद रहए जे ओहिठाम योगानन्द झाजीसँ सेहो भेंट होएबे करत। मुदा ओ ओतए नहि भेटलथि। तखन दू दिनक बाद हुनकासँ भेंट करबाक लेल कबिलपुर,लहेरिआसराय स्थित हुनकर घरपर गेलहुँ। दूपहरक बारह बजेक आस-पासक समय रहैक। हम हुनका ओहिठाम करीब घंटा भरि छलहुँ। ओहि बीचमे ओ कैकटा स्थानीय साहित्यकारलोकनिकेँ हमर आगमनक बारेमे कहलखिन,मुदा ओ सभ कतहु आर व्यस्त छलाह। दरभंगामे आयोजित किछु साहित्यिक कार्यक्रमसभक जनतब सेहो हुनका मारफत भेटल।आर कैक तरहक गप्प-सप्प भेल।जलखै,चाह-पान तँ भेबे केलैक,पोथीक आदान-प्रदान सेहो भेलैक। बाहरमे रिक्सा बला प्रतीक्षा कए रहल छल। ओकरा रोकि लेने रहिऐक कारण ओहि रौदमे ओकरा बिना चलब मोसकिल छल। तेँ कनी जल्दीए हुनकासँ बिदा लेलेहुँ। ओ हमरा बहुत फटकी धरि अरिआति देलथि।

दूबर-पातर,सरल अत्यन्त साधारण वेषमे योगानन्द बाबू व्यवहारमे अद्भुत विनम्र छथि।अपनत्व भाव तँ भरल रहैत छनि। हुनकासँ गप्प कए लगैत रहैत अछि जेना खाँटी,सुच्चा मैथिलसँ मुखातिब छी। मैथिलीक साहित्यक आकाशक चमकैत सूर्य थिकाह आदरणीय योगानन्द झाजी। हुनकर एक-एक रचना,आलेख,समीक्षा,शोध निबन्ध पाठकपर अमिट चाप छोड़ैत अछि। तकर मूल कारण थिक जे ओ जे किछु लिखैत छथि से गंभीर अध्ययनक बाद आ पूरा

मनोयोगपूर्वक, ऊपर-झापर किछु नहि।तँ पाठक हुनकर रचनासभकेँ पढ़ि कए सोचबाक लेल विवश भए जाइत छथि।

एक बेर फेर एहन सुच्चा मैथिलीप्रेमीसँ भेंट भेल से हमर सौभाग्य।ईश्वर एहन महान व्यक्तित्वसँ मिथिलाकेँ भरि देथि से प्रार्थना।

योगानन्द बाबूसँ भेल भेंट विषयक अपन ब्लागपर लिखल आलेखक लिंक जखन हम फेसबुकपर देलिऐक तँ किछु विद्वान लोकनिक बहुत मार्मिक आ प्रेरक प्रतिक्रिया आएल जकरा उद्धृत कए रहल छी-

प्रोफेसर (डाक्टर) श्री भीमनाथ झा-

“वास्तवमे श्री योगा बाबूक प्रति जे भावना अपने व्यक्त कयल अछि, से शत-प्रति-शत यथार्थ थिक। ओ लोके हीरा छथि।”

आदरणीय श्री लक्ष्मण झा ‘सागर’-

“योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यक अनमोल खजाना छथि!!”

आदरणीय श्री नन्द कुमार राय-

“मैथिली भाषा आ साहित्यक एकान्त साधक, लोक साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान, प्रसिद्ध अनुवादक, समीक्षक आ सभसँ बढ़ि सहृदयी व्यक्तित्वक धनी योगानन्द झा मैथिली साहित्यक ओ अनमोल रत्न छथि जनिक माँ मैथिलीक प्रति कर्तव्यनिष्ठाकेँ लेखनीक माध्यमसँ कथमपि जगजियार नहि कएल जाए सकैछ।”

https://www.facebook.com/photo?fbid=3820619828213000&set=a.1388340294774311

१२।०५।२०२५

आटो बला

मधुबनीसँ गाम अबैत-जाइत हम बेसी काल साझी आटोमे बैसल रहैत छलहुँ। किशोरीलाल चौकसँ अड़ेर चौक धरिक यात्राक लेल ओ मात्र तीस टाका लैत छल।जखन कोनो सामान संगमे रहैत छल वा श्रीमतीजी संगे रहैत छलीह तखन आटो आरक्षित कए लैत छलहुँ।कहिओ काल चरिचक्कासँ सेहो जाइत छलहुँ। मुदा महग हेबाक कारण ओकर बेसी उपयोग नहि करैत छलहुँ। ताहि लेल मधुबनीसँ लगीचेमे रहैत आटो बलाक सेवा लैत छलहुँ।ओकरा हमर मधुबनीक डेरा आ गामक घर देखल भए गेल छलैक। संगहि ओकरा संगे आपसी सामंजस्य सेहो भए गेल रहए। सामान्यतः ओकरा भोरे किंवा एक दिन पहिने अपन यात्राक समय बता दैत छलिऐक आ ओ समयपर उपस्थित भए जाइत छल। जखन कोनो दोकानसँ सामान कीनबाक होइत छल तँ ओतहि बजा लैत छलिऐक जाहिसँ ओकर समय खराप नहि होइक। एहि तरहेँ जरूरी सामानसभ मधुबनी गिलेशन बाजार वा आसपासक दोकानसँ कीनि कए बहुत सुगमतासँ हम गाम लेने चलि जाइत छलहुँ।

ओहि आटो बलासँ हमर संपर्क क्रमशः बढ़ैत गेल। ओ एकटा समांग जकाँ काज करए। अकस्मात एक दिन फोन केलापर बड़ी काल धरि घंटी बजैत रहि गेलैक। घंटी घनघनाइत रहल आ बंद भए गेल। केओ ओमहरसँ उत्तर नहि देलक। एक बेर फेर प्रयास केलहुँ।तखन ओकर पत्नी फोन उठओलनि कहलथि-

“ओ तँ समस्तीपुर जहलमे अछि।”

हम से सुनि बहुत चकित रही। आटो बला तँ एहन लोक नहि बुझाइत छल।पातर-छितर,हँसमुख आ विनम्र युवक अछि ओ। दिन भरि परिश्रम करैत

अछि। इमानदारीसँ अपन काज कए जीवन चलबैत अछि,अपन बच्चासभकेँ पढ़बैत अछि।तखन की भेलैक? ओ जहल किएक गेल? हम ई बात ओकर पत्नीसँ पुछलिऐक। ओ कहलीह-

"राँटी रेलवे गुमती लग ओकरा रेलवे पुलिस बला पकड़ि लेलकै।ओकर आटोकेँ जब्त कए लेलकै आ ओकरा समस्तीपुर जहलमे बंद कए देने छैक।"

"आखिर भेलैक की?"

"रेलवे बला पुलिस झूठ केसमे फँसा देने छैक। टक्कर मारलकै केओ आ फँसा देलकै ओकरा।"

"ओह ।ई तँ बहुत गलत भेलैक।आब की हेतैक?कहिआ धरि छुटतैक ओ?"

"आब जखन पकड़ाइए गेल छै तँ टैम लगबे करतै।थाना,पुलिस हेतै।कहि नहि कहिआ धरि छुटतै।"

आब की करितहुँ?ओहि आटो बलाक रहलासँ मदति भए जाइत छल।सामान लए गाम जाएब आसान भए जाइत छल। बीचमे आन-आन आटो बलाक मदति लेलहुँ ।ओना अपना इलाकामे आब आटो भरल अछि। मिनट-मिनटपर मधुबनीसँ अड़ेर-बेनीपट्टीक लेल आटो चलैत अछि। मुदा ओ रोड अछि खतरनाक। दुर्घटनाक समाचार अबिते रहैत अछि।असलमे सभ ततेक जल्दीमे बुझाइत रहैत अछि जे जान खतरामे कए लैत अछि,अपनहु आ यात्रीओक।मुदा कएल की जाए?

लगभग एक सप्ताह समस्तीपुर जेलमे रहलाक बाद आटोबलाकेँ जमानतिपर छोड़ि देल गेलैक। ताहि लेल ओकरा परिवारकेँ बहुत खर्चा करए पड़लैक।कर्जा लेबए पड़लैक। आखिर ओ जहलसँ छुटि गेल। घर अबिते हमरा

फोन केलक।ओकर फोन सुनि बहुत नीक लागल।हम ओकर हाल-चाल पुछलिऐक।

“आखिर भेलैक कोना?”

“की कहू मालिक? हमर कोनो गलती नहि छल। हमरासँ आगू बला टक्कर मारलकै आ भागि गेलै।हम तँ मोफतमे फँसा देल गेलहुँ।आटो से पकड़ि लेने अछि।”

“आटो किएक नहि छुटि रहल छह?की कहैत छह?”

“बहुत पाइ मांगि रहल छलै।हम से कोना दितियै?तँ हमरा जहल पठा देलक।मुदा हमहूँ केस करबा देलिऐ घर बालीसँ।”

आटो बला सरिपहु परेसान छल। ओकर रोजी-रोटी मोसकिलमे पड़ि गेल छलैक।ऊपरसँ कर्जा सेहो भए गेलैक।मुदा ओ हिम्मति बनओने रहल। एकटा दोसर आटो किरायापर लेलक। जी-जानसँ परिश्रम करए लागल। आब ओकर आटो पहिनोसँ बेसी चलि रहल छलैक।कहलक-

“टाइमे नै रहै छै।कतेक भारा उठेबै?दू बजे दिन धरि बारह सए कमा लै छिऐ।ओहिमे सँ तीन सए मालिककेँ होइत छै।तैओ नओ सए बँचि जाइत छै।”

आटो बला आब किरायाक रिक्सा चला रहल छल। ओकर आटो अखनहु थानामे बंद छलैक। पुलिस,कोर्टक चक्कर चलिए रहल छैक। सभकेँ चाही बहुत-बहुत टाका।ओ से नहि दए पाबि रहल छैक।मुदा ओ हिम्मति नहि हारल।ओकर साहस बनल रहलैक। ओ परिश्रमपूर्वक अपन परिवारक पालन करैत रहल ।संगे कोर्ट पुलिसक चक्कर सेहो लगा रहल छल।

नओ मई कए एहि बेरक ग्राम यात्राक अंतिम बेर मधुबनीसँ अपन गाम हम फेर ओकरे आटोसँ गेल रही। तखन धरि ओकर आटो नहि छुटल रहैक। गाम

पहुँचि हम ओकरासँ बिदा लेलहुँ। तीन सए किरायाक अतिरिक्त दू सए टाका इनाम देलिऐक। कहलिऐक-

“अहाँ बहुत मदति केलहुँ। हम आब दिल्ली चलि जाएब। मुदा फेर आएब।ताधरि अहाँक आटो सेहो छुटि गेल रहत। हम सभ फेर अहाँक मदति लेबे करब। ”

आटो बलाकेँ दू सए टाका अनापेक्षित भेटि गेल रहैक ।ऊपरसँ नीक-नीक,उत्साहवर्धक गप्प सेहो।ओ बहुत प्रसन्न छल। हमरा प्रणाम केलक , किछु-किछु पुछबो केलक ।फेर चलि जाइत रहल ,अपन जीवन संघर्षमे आगू।हम अखनो कैक बेर ओकरा बारेमे सोचैत रहैत छी। ई सोचि दुखी भए जाइत छी जे केना ओकरा सन-सन जीवन-संघर्षमे जुटल युवकसभ अनेरे परेसानीमे पड़ि जाइत छथि आ हुनका उचित न्याय समयसँ नहि भेटि पबैत छनि।से के सुनत,ककरा समय छैक एहन गरीबक बातपर ध्यान देबाक?

२२।५।२०२५

लाउडस्पीकर बजैत रहल

लाल मुरेठा बन्हने हाथमे ड़डा लेने अंट-संट बजैत एकटा युवक आ लगपासमे हतप्रभ किछु लोकसभ।

"अकस्मात ई कतए सँ आबि गेलैक?ई छै के?"

हम अपन मधुबनी डेरासँ सभटा देखि रहल छलहुँ। ततबे मे ओ पंडितजीकेँ पिटाई सेहो कए देलक आ चिकरिते रहि गेल-

"सामने आबि जो जकरा हिम्मति होउ। आइ नओ-छओ भइए जाए।"

थोड़बे कालमे कनीके काल पहिने बंद भेल लाउडस्पीकर फेरसँ आर बेसी जोरसँ बाजए लागल। ओ युवक विजयी मुद्रामे थोड़े काल ओतहि घुमैत रहल,बड़बड़ाइत रहल। लोकसभ चुप-चाप सभटा देखैत रहि गेल। ककरो प्रतिरोध करबाक साहस नहि भेलैक।ओकर चिकरब-भोकरब सुनि किछु गोटे ओहि ठामसँ घसकिओ गेल।

हमरा बात बुझबामे देरी नहि भेल। ओ युवक स्थानीय दबंग छल जकरा डरे हनुमान मंदिरक पुजारी आ आसपासक लोकसभकेँ अबाज बंद छलनि।

ई बात अछि छओ अप्रैल २०२५क।असलमे करीब घंटा भरि पहिने हम सगर राति दीप जरए कार्यक्रमसँ वापस आएल रही।राति भरिक जगरना छल। देह काज नहि कए रहल छल। भेल जे चाह पिअब तखन किछु उसास होएत। ताहि लेल रस्ते सँ दूध लेने आएल रही। आटो बलाकेँ पहिने कहने रहिऐक। ओ दूधक दोकान लग आटो रोकलक। दूध लेलहुँ।लगीचे मे सजमनि बिका रहल छलैक। सेहो कीनलहुँ आ डेरा वापस आबि गलहुँ। मुदा एहि ठाम तँ श्रीमतीजीक हालति बहुत खराप छलनि। ओ राति भरि जगले रहथि। सामने मे हनुमान मंदिरमे राति भरि लाउडस्पीकरपर भजन-कीर्तन होइत रहल।तकर परिणाम भेल जे

लगपास रहनिहार कैक गोटेक मोन खराप भए गेलनि।मुदासभ बेबस छल। केओ प्रतिरोध नहि केलक। से सोचि हमरा बहुत आश्चर्य लागि रहल छल।

"एहन कोन पूजा भेल जे लोकक जानपर बनि जाइक।"-हमरा मोने-मोन सोचाएल।आश्चर्य एहि बातसँ भेल जे सालक-साल ओहि ठाम रहि रहल लोकसभ केओ किछु बाजि नहि रहल छलाह,अपितु कष्ट सहनाइ बेसी सही लागि रहल छलनि।कहि नहि हुनका लोकनिक की विवशता छलनि?बादमे पता लागल जे श्रीनारायणजीक श्रीमतीजी रातिएमे ओकरासभकेँ बहुत आग्रह केने छलखिन।कहने रहथिन-

"श्रीनारायणजीक मोन खराप छनि।लाउडस्पीकरक अबाज कम कए दिऔक।"कनी काल लाउडस्पीकरक अबाज कम कइओ देने रहैक। मुदा थोड़बे कालक बाद फेर ओएह हाल।

हमर श्रीमतीजीक माथक दर्द कम हेबाक नामे नहि लए रहल छलनि।हुनकर परिस्थितिसँ दुखी हम अपन डेरासँ तमतमाएल बाहर भेलहुँ। मंदिर लग किछु गोटे पहिने सँ ठाढ़ रहथि। हम सोझे मंदिर लग गेलहुँ आ भजन कए रहल कीर्तनिआसभकेँ लाउडस्पीकरक अबाज कम करबाक लेल कहलिऐक।ओहिमे सँ एक गोटे बाजल-

"अहाँ केहन मनुक्ख छी?कीर्तनमे लाउडस्पीकर नहि बजतैक तँ कथीमे बजतैक? ई कोनो बेर-बेर तँ हेतैक नहि। अहाँ अनेरे हल्ला केने छी।"

"हम स्वयं हनुमानजीक भक्त छी। कीर्तन होइ ताहिमे कोनो दिक्कति किएक हेतैक? ई तँ नीक बात छैक। मुदा ई कतए लिखल छैक जे लाउडस्पीकर बजबे करए, भने लोकक जान चलि जाइक?"

"जे कीर्तन करबा रहल छथि तिनकासँ गप्प करू।हमसभ एहि मामिलामे किछु नहि कए सकैत छी।"

ओ सभ आपसमे किछु-किछु बड़बड़ाइत रहल आ कीर्तनो करैत रहल।हम तुरंत सामने मे कनीके फटकी कीर्तन करओनिहारक ओहिठाम पहुँचलहुँ। कैक बेर घंटी बजओलापर एकटा महिला बाहर भेलीह। हम हुनका कहलिअनि-

"ई की करबा रहल छी?ई कोन धर्म भेलैक जाहिमे सभक जान खतरामे पड़ि जाइक? अहाँकेँ पता अछि जे लगपासक कैकटा महिला रातिएसँ दुखित पड़ल छथि। हुनका सभक प्राण अवग्रहमे छनि।यदि लाउडस्पीकर नहिए बजतैक तँ की पूजा नहि हेतैक?"

"जा कए बंद करबा दिऔक।"

"हम ओही ठामसँ आबि रहल छी। ओ सभ तँ अहीं लग पठा देलक।कहलक जे अहीं कीर्तन करबा रहल छी। जे करबैक से अहीं करबैक।"

"हम तँ कहलहुँ ने जे जा कए बंद करबा दिऔक।"

हमरा संगे मंदिरक पुजारी सेहो छलाह।हम हुनका कहलिअनि-

"आब सुनलिऐक ने?"

"चलू ने। फेर कहबैक।बंद तँ ओएहसभ करत।"

हम वापस मंदिर लग पहुँचलहुँ। ताधरि लगीचमे रहनिहार दू गोटे सेहो आबि गेल छलाह। ओहो सभ कीर्तनिआसभकेँ लाउडस्पीकर बंद करबाक लेल कहलखिन। आखिर ओहीमे सँ केओ उठि कए लाउडस्पीकर बंद कए देलक। माहौल तुरंत बदलि गेल। चारू कात शांति पसरि गेल। कीर्तन सेहो हल्लुक अबाजमे चलिते रहल। हम विजयी मुद्रामे अपन डेरा वापस भेलहुँ। मुदा ई सभ बेसी काल नहि चलल। थोड़बे कालक बाद लाउडस्पीकर फेर बाजि रहल

छल,सेहो आर बेसी जोरसँ।हमर श्रीमतीजी माथक दर्दसँ छटपटा रहल छलीह। हुनका लेल दबाइ आनब जरूरी छल,मुदा बाहर निकलबामे डर होइत छल-

"कहीं ओ हमरे पर ने तामस उतारि दिअए?"

ओही इलाकामे किछुए दिन पहिने लगपासमे एक आदमीकेँ आपसी विवादमे छुरा मारि कए हत्या कए देल गल रहैक। ओ गेल रहए शांतिक प्रयास करए।दू गुटमे झंझटिकेँ शांत करेबाक प्रयासमे जान चलि गेलैक। से सभ सोचि चिंतित छलहुँ। मुदा हुनका लेल दबाइ तँ अनबेक छल,से पैरे बिदा भेलहुँ। मधुबनीमे भोरुका उखरामे बेसी दोकान बंदे रहैत अछि। संयोगसँ थाना मोर लगक दबाइक दोकान खुजल छल। हुनकासँ जरूरी दबाइसभ कीनलहुँ रिक्सासँ वापस डेरा लग आबि गेलहुँ । हुनका दबाइसभ देलिअनि। ओ दबाइ खेलाक आधा घंटाक बाद कनीक आश्वस्त भेलथि। फेर चाह बनल। माहौल कनी हल्लुक भेल। मुदा लाउडस्पीकर बजिते रहल।जकरा जे होउ।

साँझमे एहि घटनापर श्रीनारायणजीसँ गप्प भेल।ओ कहए लगलाह-

"एहि ठाम थाना-पुलिससभ सेहो किछु नहि करैत छैक।तेँ लोकसभ सभ किछु सहि जाइत अछि।अनुचित बात देखिओ कए मूकदर्शक बनल रहि जाइत अछि।शांतिक लेल लोक लग इएह सर्वोत्तम विकल्प छैक,नहि तँ लड़ैत रहू,झंझटिसभमे पड़ैत रहू।"

मधुबनीमे,गामोमे बेसीकाल लाउडस्पीकर बजिते रहैत अछि।ककरो कोनो कनीकोटा उत्सव करबाक हेतैक तँ लाउडस्पीकर जरूर लगा देत।सत्यनारयण भगवानक पूजा होअए,बिआह,उपनयन,मूड़न किछु होअए लाउडस्पीकर बजबे करत।अहाँकेँ जे हेबाक अछि से होअए।ओना एहिठामक लोकसभ एहन ध्वनि प्रदूषणक अभ्यस्त भए चुकल बुझाइत छथि। हम जखन मैट्रिकक परीक्षा देबए सन् १९६७मे मधुबनी आएल रही तखनहु इएह हाल रहैक।

जे होइ,मुदा ई स्थिति बहुत दुखद अछि।मधुबनी आ आसपासक इलाकामे लाउडस्पीकरपर गाना-बजाना होइत रहब आम बात थिक।कखनहु माहौल शांत रहिते नहि अछि।सोचल जा सकैत अछि जे विद्यार्थी आ दुखितलोकसभकेँ कतेक परेसानी होइत हेतनि।जरूरी अछि जे प्रशासन,समाजसेवी संगठन आ समाजक गण-मान्य लोकसभ एहि समस्यापर विचार करथि जाहिसँ ध्वनि-प्रदूषणपर किछुओ नियंत्रण संभव भए सकए।

२९।५।२०२५

अकस्मात चलि जाएब शैलेन्द्र झाजीक

के जनैत छल जे मधुबनी टीसनपर हम हुनका अंतिम यात्रापर बिदा कए रहल छी। मुदा नियति अपन गर्भमे सएह नुकओने छल। ओहि दिन(२८ फरबरी २०२५) हम भोरे कारसँ श्रीमतीजीक संगे जनकपुर गेल रही। ओही दिन दू बजे शल्लुकेँ पत्नी सहित मुम्बई जेबाक छलनि। मधुबनी टीसनसँ ट्रेन पकड़बाक छलनि। हमरा कनीको उम्मीद नहि छल जे हम मधुबनी ताधरि वापस भए सकब। मुदा संयोग एहन भेल जे हमसभ जनकपुर,धनुषा घुमि कए तीन बजे धरि मधुबनी वापस आबि गेल रही। मधुबनी पहुँचहि बला रही कि हम हुनका फोन केलिअनि। ओ कहलाह-

"हमसभ अखन मधुबनीए टीसनपर छी। ट्रेन घंटा भरिसँ बेसीए विलंबसँ चलि रहल छैक।"

हमरा से जानि बहुत प्रसन्नता भेल। हमरा भेल जे आब हुनकासँ टीसनपर भेंट भए जाएत। वाहन चालककेँ कहलिअन-

"हमरा मधुबनी टीसने पर छोड़ि देब।"

"ठीक छैक।"

हम श्रीमतीजीकेँ मधुबनी डेरापर छोड़ि कए वापस टीसन पहुँचलहुँ। ओहि ठाम प्लेटफार्म टिकट लेलहुँ। दस टाका खुल्ला नहि छल। खिड़कीपर बैसल बाबूकेँ से बात कहलिअनि।ओ कहलाह-

“कोनो बात नहि। अपने वापसीमे टाका दए देबैक।”

ओ हमरा प्लेटफार्म टिकट देलनि।हम तुरंत प्लेटफार्म नंबर दूपर पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम शल्लु(**शैलेन्द्र झा)** सपत्नीक बेंचपर बैसल छलाह।संगेमे गामसँ एक गोटे आएल छलखिन।हम सभ बड़ी काल धरि गप्प सप्प करैत रहलहुँ। फोटो सेहो खिचल गेल। करीब घंटा भरिक बाद ट्रेनक आगमनक सूचना प्रसारित भेल। जयनगर दिससँ ट्रेन छुक-छुक करैत आबि गेल। ओ ट्रेनमे चढ़ि गेलाह। हम किछु काल ओतहि ठाढ़ ट्रेन दिस देखैत रहि गेलहुँ। ओ हमरा प्लेटफार्मपर ठाढ़ देखलनि आ फोनसँ कहलनि-

“आब कतेक काल ठाढ़ रहबह। ट्रेनमे हमसभ आश्वस्त भए गेल छी।आब चलबे करतैक।”

हम तकर बाद प्लेटफार्मपर सँ बिदा भए गेलहुँ ।थोड़बे कालमे ट्रेन ससरि रहल छल। हम बाहरसँ हुनकासभकेँ देखबाक चेष्टा कए रहल छलहुँ।मुदा से संभव नहि भए रहल छल। आखिर ट्रेन आगू बढ़ैत गेल आ थोड़बे कालमे अदृश्य भए गेल। हमहूँ बाहर भेलहुँ। प्लेटफार्म टिकट बला खिड़कीपर जा कए बाबूकेँ दस टाका देलिअनि आ आटोसँ अपन डेरा दिस बिदा भए गेलहुँ।

ई घटना २८ फरबरी २०२५क अछि। शल्लु पछिला दू सप्ताहसँ गाममे छलाह। ओ एहि ठाम कैकटा पारिवारिक कार्यक्रममे सामिल हेबाक लेल मुम्बईसँ आएल छलाह। ओ अपन गाम जेबाक कार्यक्रमक बारेमे हमरा पहिने जानकारी देने रहथि। तँ जखन मधुबनी हमरा जेबाक कार्यक्रम बनल तँ भेल जे हुनकोसँ भेंट

होएबे करत। पन्द्रह फरबरीक रातिमे ओ मुम्बईसँ गाम पहुँचल रहथि। सत्तरह फरबरीक हुनकासँ फोनपर गप्प भेल। ओ गाम आबि गेल छथि से पक्का भए गेल। तखन हम प्रात भेने मधुबनीसँ गाम पहुँचलहुँ तँ हुनका फोन केलिअनि। ओ एकटा बच्चाक संगे अपने पहुँचि गेलाह। हाथमे एकटा बेंत लेने ओ बहुत धीरे-धीरे चलैत छलाह। हम दुनू गोटे करीब घंटा भरि बतिऔलहुँ। तकर बाद हमसभ जीबूजी(हुनकर छोट भाए) क बनि रहल नव मकान देखबाक लेल बिदा भेलहुँ। ओहिठाम गाछक छाहरिमे हमसभ बैसलहुँ। ओतहि हुनको हिस्साक जमीन छनि। ओहिपर मकान बनेबाक विषयमे ओ कहलाह-

“आलोकसँ गप्प भेल छल। ओ कहलाह जे जमीन बटा गेलै ने।आब हमरापर छोड़ दिअ।”

कहबाक तात्पर्य जे ओहो अपना हिसाबसँ ओतए मकान बना लेताह।आर-आर बातसभ होइत रहल। किछु काल ओहि ठाम बैसलाक बाद हमसभ वापस घर दिस बिदा भेलहुँ।रस्तामे हुनकर फोटो सेहो खिचलहुँ।ओहि फोटोकेँ देखि कए लगैत अछि जेना ओ अनन्त यात्रापर निकलि गेल होथि। मुदा से पहिनेसँ के बुझि सकैत छल?नियति अपन काज करैत रहैत अछि। बीचमे फेर हुनकासँ भेंट भेल। ओहि दिन हमसभ लालबच्चाक ओहिठाम भौजी(हुनकर श्रीमतीजी) सँ भेंट करए गेल रही।ओहि ठाम युगलजी सेहो रहथि। हमसभ बड़ी काल धरि ओहिठाम बैसल गप्प -सप्प करैत रहि गेल रही। एकटा समय छल जखन हम,लालबच्चा आ शल्लु ओहीठाम घंटो बैसल रहैत छलहुँ। काकाजी सेहो आबि जइतथि।गप्प-सप्प चलैत रहैत। कैक बेर भोजनो ओतहि भए जाइत छल। आब समय चक्र बहुत आगू बढ़ि गेल अछि। ने काकाजी छथि,ने लालबच्चा।हुनका लोकनिक अभाव के पूरा कए सकत? मुदा भौजी रहथि। ओ अपना भरि बहुत

ध्यान देलनि। जलखै-चाहसभ सेहो भेलैक। फेर हमसभ वापस अपन घर दिस बिदा भेलहुँ।शल्लुकेँ हुनका घर धरि पहुँचा देलिअनि आ हम मधुबनी चलि गेलहुँ।

शल्लु मुम्बई चलि गेलाह। मुदा हम मधुबनी-गामे मे छलहुँ। गामपर काज चलि रहल छल। ओहू दिन हम गाम गेल रही। गाम पहुँचलाक थोड़ काल बाद मोबाइल खोललहुँ तँ जीबूजी(हुनकर अनुज)क पठाओल एकटा वीडियो देखाएल। ओकरा खोलिते अवाक रहि गेलहुँ।

“ई की?”

“ई की?”

शल्लुक लास एकटा डिब्बामे बंद पड़ल छल। ओ एहिना जीवंत लागि रहल छलाह। बात बुझि गेलिऐक। हुनकर देहान्त भए चुकल छलनि। तुरंत जीबूजीकेँ फोन केलिअनि। ओ कहलनि-

“ओ भोरे फरीदाबाद साढ़ूक पुत्रक बिआहमे सामिल हेबाक लेल हबाइ यात्राक लेल सामानसभ सरिओलनि।तकर बाद किछु जलखै केलनि। ओतबेमे मोन कनी गड़बड़ बुझेलनि। ओ ई बात श्रीमतीजीसँ कहलखिन। ओ वास बेसीन लग गेलाह। हुनका रद्दमे खून निकलि गेलनि। तकर बाद ओ ठामहि खसि पड़लाह। जाबे केओ किछु बुझितए,किछु करितए ओ एहि दुनिआसँ जा चुकल छलाह। ई सभ एतेक जल्दी भेल जे किछु नहि कएल जा सकल। बादमे ओ अस्पताल लए जाएल गेलाह। मुदा डाक्टर हुनका मृत घोषित कए देलकनि।”

मोन दुखसँ भरि गेल छल। किछु बाजल नहि होअए। तुरंत शल्लुक ओहिठाम गेलहुँ। ओहिठाम हुनकर अग्रज-नरेन्द्रजी उदास,चुपचाप अपन घरक सीढ़ीए पर बैसल छलाह। हम किछु काल ओहिठाम हुनका संगे अपन-अपन दुख बटलहुँ।हुनका मौन श्रद्धांजलि देलिअनि आ अपन घर वापस चलि अएलहुँ।

एहि तरहेँ हमर वालसखा आ आजीवन मित्रक अंत भए गेल छल। सोचल जा सकैत अछि जे ई कतेक कष्टपूर्ण अनुभव छल हमरा लेल।मुदा कएल की जा सकैत छल? मृत्यु एकटा एहन प्रश्न अछि जकर उत्तर आइ धरि केओ नहि ताकि सकल ,जकर प्रकोपसँ केओ नहि बँचि सकल।इएहसभ सोचि कए मोनकेँ शांत करबाक प्रयास करैत अछि। जीवन तँ चलिते रहैत छैक,मुदा जे चलि जाइत अछि तकर स्थान सभ दिन लेल रिक्ते रहि जाइत छैक।तकर कोनो विकल्प नहि छैक। तेँ ने जीवनकेँ क्षणभंगुर कहल जाइत छैक।

शल्लु(शैलेन्द्र झा) हमरासँ दस मास पैघ छलाह। एहि हिसाबे ओ चौहत्तरि वर्षसँ कनी बेसीए दिन जीलाह। हुनकर जन्म बहुत प्रतिष्ठित आ संपन्न परिवारमे भेल छलनि। हुनकर बाबा स्वर्गीय कमलाकान्त झाजी बहुत आदरणीय लोक छलाह। हुनकर आ राम बाबूक दोस्ती ओहि समयमे जगजाहिर छल। दुनू गोटे घंटो हमरा घर लगक कोनटापर ठाढ़ गप्प करैत रहि जाइत छलाह।कखनहु राम बाबू हुनका ओहिठाम जइतथि तँ कखनहु कमलाकान्त बाबू राम बाबूक ओहि ठाम ।शल्लुक पिता शिक्षक रहथि। अड़ेर मिडिल इसकुलमे ओ हमरासभकेँ छठा किलासमे ज्यामिति पढ़ओने रहथि। दुर्भाग्यवश, ओ कमे बएसमे स्वर्गीय भए गेलाह। हुनकर मृत्युक दृश्य अखनहु हमरा मोन अछि।उत्तरबरिआ कोठलीमे ओ पड़ल रहथि,दर्दसँ परेसान।हुनकर मृत्युक समयमे जाड़क मास छलैक। हम अपन दनानपर पुआरपर बैसल रही। लोकसभ हुनका अंतिम संस्कार लेल लए जा रहल छलनि। तकर किछुए दिनक बाद शल्लुक मैट्रिकक परीक्षा भेल रहनि। ओ ओहि परीक्षामे प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेल रहथि। पिताक असमय मृत्युक बाद हुनकर परिवारमे आर्थिक संघर्ष बढ़ि गेल रहनि। तथापि ओ आर०के०कालेज मधुबनीसँ बी०एससी(गणितमे प्रतिष्ठा) उत्तीर्ण केलनि । तकर बाद ओ बिना किछु अवलंबकेँ जीविकाक जोगारमे घर छोड़ि देलनि।दिल्लीमे भोगेन्द्र झाजीक डेरापर किछु दिन रहलथि। फेर हुनके संगे मुम्बई चलि गेलाह। भोगेन्द्रजी तँ अपन कार्यक्रमक

अनुसार आगू बढ़ि गेलाह,मुदा शल्लु मुम्बईमे जमि गेलाह। ओ ओहि ठाम बहुत धैर्यपूर्वक सालो संघर्ष केलनि। ओतहि कपड़ा मीलमे काज शुरू केलनि।बादमे ओहि मीलकेँ सरकार अपना हाथमे लए लेलकैक। ओ क्रमशः ओही ठाम विधि अधिकारी बनि गेलाह। अपन गामक,परिवारक बहुत लोकसभकेँ ओ नौकरी धरओलनि।अपन छोट भाए लोकनिक शिक्षा आ रोजगार लेल बहुत तत्पर रहलथि।तकरे परिणाम भेल जे कालान्तरमे हुनकर पूरा परिवार फेरसँ हरिआ गेल। सभ भाए आ हुनकर धिआ-पुतासभ नीक-नीक पदपर पहुँचि गेलाह।हुनकर अनुज जीबूजी तँ जिला शिक्षा अधिकारीक पद सुशोभित केलनि।

शल्लुक प्रथम बिआह भच्छीमे भेल रहनि। हम आ लालबच्चा ओहि बिआहमे बरिआती गेल रही। मुदा हुनकर ओ पत्नी अपन प्रथम संतानक जन्मक समयमे गामे मे स्वर्गीय भए गेलखिन। एहि घटनासँ शल्लु बहुत दुखी भेल रहथि। ओ बच्चा टुगर भए गेल। मुदा भगवान जकरा रक्षा करए चाहैत छथि तकरा सभ जोगार भए जाइत छैक। शल्लुक दोसर बिआह नवकरही भेलनि। हम ओहूमे बरिआतीमे गेल रही। हुनकर ओ पत्नी ओहि नवजात शिशुकेँ अपनो संतानसँ बेसी प्रेम आ करुणासँ पालन केलथि। एहन अनुकरणीय उदाहरण ओ अपन जीवनमे व्यवहारसँ प्रस्तुत केलनि। तकरे परिणाम भेल जे ओ वालक बहुत तेजस्वी आ सुयोग्य भेलाह आ संप्रति बहुत उच्च पदपर गुड़गाँवमे काज कए रहल छथि। शल्लुक दोसर बिआहसँ दूटा कन्या आ एकटा पुत्र भेलखिन। ओहोसभ बहुत नीक शिक्षा प्राप्त केलनि आ बढ़िआसँ व्यवस्थित छथि।

सेवानिवृत्तिक बाद शल्लु फेरसँ करीन तीन साल विधि सलाहकारक रूपमे ओही कंपनीमे काज केलनि। ओतहि जाइत काल एक दिन ट्रेनसँ पिछड़ि कए खसि पड़लथि । जान बँचि गेलनि,मुदा जांघक हड्डी टूटि गेल रहनि। जेना-तेना दीर्घकालीन चिकित्साक बाद ओ बेंतक सहायतासँ चलि लैत छलाह,मुदा

दिक्कति तँ भइए गेल रहनि। स्वभावसँ आध्यात्मिक रहबाक कारण जीवनक उठा-पटकक बीचो ओ निरंतर शांत रहैत छलाह।से शांति अंतोमे हुनकर आननपर झलकैत छल।मुम्बईमे रहि ओ मैथिलीक गतिविधिसँ निरंतर जुड़ल रहैत छलाह। मैथिली पत्रिकाक संपादनक काज ओ बहुत दिन धरि करैत रहलाह।आदरणीय डाक्टर धनाकर ठाकुरक नेतृत्वमे संचालित अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक आनलाइन साप्ताहिक बैसारमे ओ नियमित सामिल होइत रहैत छलाह आ अधिकांश एहन बैसारक अध्यक्षता ओएह करैत छलाह।हुनकर आकस्मिक निधनसँ धनाकर बाबू सहित कतेको गणमान्य लोकनि अपन शोक व्यक्त केलनि।हमर गाममे तँ ई समाचार सुनितहि लोकसभ शोकमग्न भए गेलथि। सभ एतबे कहथि-

"अखने तँ आएल छलखिन।केहन नीक छलखिन।"

मुदा फेर ओएह बात कहब।मृत्युक कोन हिसाब छैक। ई संसारे मृत्यु भुवन थिक।जे आएल अछि से जाएत। सही कहल गेल अछि-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च |
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ||

एहि तरहेँ एकटा सार्थक,सफल परोपकारी जीवन जीबि कए शल्लु अचानक हमरासभकेँ छोड़ि चलि जाइत रहलाह। निस्सन्देह आब सशरीर ओ हमरा लोकनिक बीचमे नहि छथि,मुदा हुनकर सफल संघर्ष गाथा ,स्नेहपूर्ण व्यवहार आ परोपकारी प्रवृति सभ दिन मोन राखल जाएत आ आगामी समयमे बहुत लोकक लेल प्रेरणाक श्रोत बनल रहत।

।।ओम् शांतिः।।

२७।०५।२०२५

एहि बेरक गाम यात्राक पटाक्षेप

रामायणमे सत्य कहल गेल अछि-

जाकर जापर पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलहिं न कछु संदेहू॥

हम कतेको सालसँ गामपर एकटा छोट-छीन घर बनेबाक सपना देखि रहल छलहुँ। खाली सपने देखि रहल छलहुँ से बात नहि।ताहि लेल जरूरी धनक व्यवस्था सेवानिवृत्तिक बादेसँ केने छलहुँ। मुदा हमर पैतृक घड़ारीक हिसाब-किताब तेना ने ओझराएल छल जे काज आगू नहि बढ़ि सकल।एक बेर हम एकटा जमीन कीनबाक लगीच धरि पहुँचि गेल रही,मुदा हमरे गलतीसँ बनैत काज बिगड़ि गेल।एगारह साल समय बीति गेल। पछिला तीन सालसँ हमर आर भाए लोकनि सेहो एकर चर्चा शुरू केलथि। मुदा ढाकक तीन पात।बात सोझरेबाक स्थानपर ओझराइते गेल।संयोग एहन भेल जे हम सत्येन्द्रजी(हमर सभसँ छोट भाए)क सेवानिवृत्तिक बाद हुनका संगे घर बनेबाक विचार केलहुँ। ताहि लेल बहुत तरहक आपसी समझौता करए पड़ल। अंततोगत्वा, काज आगू बढ़बाक माहौल बनल,निर्णय भेल।ई तय भेल जे नीचाँक तलपर हमर आ प्रथमतलपर हुनकर घर रहतनि।अखनहु भैयारीमे सर्वसम्मति नहि छल। किछु विरोधक स्वरकेँ पाछू छोड़ि हमसभ घर बनेबाक योजनामे आगू बढ़ि गेलहुँ। ओहिमे हमर भातिज चंदन बहुत मदति केलनि। सालोंसँ पड़ल जंगल-झारकेँ बुलडोजर लगा कए स्वच्छ करओलनि।सत्येन्द्रजी दरभंगासँ कारसँ गाम अबैत-जाइत रहलाह।हम ग्रेटर नोएडासँ सभ काजमे सामिल रहलहुँ।सफाइक क्रममे कैकटा अजोध गहुमन साँपसभ सेहो अभरलैक।एकटा विषधर सामनेक घरक छतपर मरल पड़ल भेटल।संभवतःसपनौर ओकरा मारि देने होइक।साँपक नाम सुनि काज केनिहार

मजदूरसभ सेहो डराइत रहैत छल।एक दिन एकटा मजदूरक पैरो कटि गेलैक।नीचाँमे शीशा रहैक।ओहिपर ओकर पैर पड़ि गेलैक। बहुत तरहक परेसानीकेँ पार करैत अंततः जमीन साफ भेल,नक्सा बनल,चापाकल गराओल गेल,बिजलीक मीटर लागल आ काज आगू बढ़ि गेल।

सात दिसम्बर २०२४क मकान बनेबाक निर्णय भेल।पन्द्रह दिसंबर २०२४क काज प्रारंभ भेल। अठ्ठारह जनबरी २०२५क हमसभ दुनू बेकती मकानक काजकेँ निमित्त मधुबनी पहुचलहुँ ।१८ जनबरी २०२५सँ दस मई २०२५ क बीच लगभग चारि मास हम मधुबनीमे रहलहुँ। ओहि बीच हमर प्रमुख काज गाममे घर बनाएब छल। ओना कहल जा सकैत अछि जे घर तँ मिस्त्री,ठेकेदार बनबितैक तँ हमर कोन काज? घर बनेबाक लेल जरूरी सामान ओकरासभकेँ उपलब्ध भए जाइ आ घर बनि जेतैक। सेहो बात सही छैक। कैक गोटे ह्वात्सपे पर गाममे घर बनबओलनि अछि। मुदा हमरा व्यक्तिगत रूपसँ एहि यज्ञमे सामिल हेबाक दृढ़ इच्छा छल ताहि लेल योजनावद्ध ढंगसँ काज कएल गेल। काजक पहिल चरण माने नीव धरि हमर अनुज(सत्येन्द्रजी हमर भातिज चंदनक सहयोगसँ) गाम जा कए ई काज आगू केलनि। निश्चित रूपसँ ओ बहुत परिश्रम केलनि। जाड़क मासमे दरभंगासँ गाम आएब-जाएब साधारण बात नहि छल। मुदा से ओ केलनि। एहि बीचमे हम मधुबनी डेराक जोगार कए ओतए पहुँचि गेलहुँ आ इतमिनानसँ चारि मास रहलहुँ। हम ई सोचलहुँ जे काजो करी आ तकर आनन्दो उठाबी। गामक काजसँ यदि पलखति भेटए तँ लगपासमे घुमी-फिरी ।तँ जखन कखनहु गामक काजसँ फुरसति होइत छल तँ हमसभ लगपासक कोनो मंदिर,तीर्थस्थान चलि जाइत छलहुँ। कहिओ काल मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठित विद्वान साहित्यकार लोकनिसँ भेंट करए सेहो चलि जाइत छलहुँ। जेना कि बीचमे(सेहो १० मार्चसँ पन्द्रह मार्च धरि) पाँच दिनक लेल हम पटना चलि गेल रही। एहि तरहेँ मोन बदलि जाइत छल आ समयक सदुपयोग सेहो होइत छल।ओही क्रममे हमसभ

उच्चैठ,भवानीपुर,पण्डौल,कपिलेश्वर,जनकपुर,पटना,नालंदा,राजगीर बेरा-बेरी गेलहुँ।

जनबरीसँ मईक बीचमे गाममे मकानक काज चलल। ओहि बीच मौसम बदलि गेल,जाड़सँ वसंत,फेर गृष्म आबि गेल,मुदा हम अनवरत काजमे लागल रहलहुँ। कैक बेर मोन खराप लगैत रहैत छल,देह दुखाइत रहैत छल। अत्यधिक थकानक कारण रातिमे निन्नो नहि होइत छल। भोर भेने फेर गाम जेबाक छल।तेँ दबाई खाइत छलहुँ। तखन फेर गाम दिस बिदा भए जाइ। हम सोचि लेने रही जे जान रहए कि जाए काज करबेक अछि। एहिसँ पूर्व कैक बेर प्रयास भेल,मुदा काज आगू नहि बढ़ल। मुदा एहि बेर हमर द्दढ़ निश्चयकेँ हमर श्रीमतीजी मजगूत केलनि। हनुमानजीक असीम कृपा तँ छलहे। अंततोगत्वा, सात मईक गृहप्रवेश संपन्न भेल।

एहि तरहेँ लगभग चारि मासक निरंतर साधनाक बाद गृहयज्ञ सफल भेल। बीच-बीचमे अनेक मित्र,शुभचिंतक लोकनि हमर मनोवल बढ़बैत रहलाह जाहिमे सेवानिवृत्त आइएएस अधिकारी आदरणीय सुबोध नाथ झाजी,श्री मदन मोहन सिन्हाजी,कमलाकान्त भंडारीजी,संजीव सिन्हाजीक नाम प्रमुखतासँ लेल जेबाक चाही। श्रीनारायणजीतँ लागले रहलाह। हुनकर प्रशंसाक लेल कोनो शब्द नहि भेटि रहल अछि।

नओ मईक मधुबनीसँ गाम सामानसभ आबि गेल। तकरा रखबाक लेल दूटा आल्मीरा कीनलहुँ। तथापि बहुत रास सामानसभ एमहर-ओमहर पड़ल रहि गेल। सोचलहुँ जे अगिला यात्रामे सभ किछु नीकसँ व्यवस्थित कएल जाएत।

दस मईक साढ़ चारि बजे इन्डिगोक जहाजसँ हमरासभकेँ दिल्ली वापस जेबाक छल। ताहि लेल एक दिन पहिने हमर भातिज चंदन टैक्सीक ओरिआन कए देलनि। दोसर दिन हमसभ बारह बजेक आसपास गामसँ बिदा भेलहुँ।कारण

हबाइ हड्डापर तीन घंटा पहिने पहुँचबाक आदेश लागू भए गेल छल। भारत-पाकिस्तानमे तनातनी चलि रहल छल।तेँ डरो लागि रहल छल। की पता?मुदा जहाज नियत समयपर उड़ल। हमसभ छओ बजे साँझमे दिल्ली हबाइ अड्डापर उतरि गेलहुँ। आठ बजे हमसभ घरमे रही। हमरासभकेँ आएल देखि हमर पोता-पोतीक प्रसन्नताक अंत नहि छल। हमर पोता तँ नृत्य करए लागल।हमसभ सेहो अतिशय आनन्दित भेलहुँ ।एक बेर फेर वापस अपन घरमे छलहुँ। एकटा निश्चित आ ठोस उपलब्धिक संग।

हमरा कैक गोटे पुछथि जे आब एहि बएसमे गाममे घर बना कए की फएदा?हम हुनका की कहितिअनि?हम गाममे घर फएदा आ नोकसानक हिसाबे नहि बना रहल छी। ई हमरा लेल एकटा अभियान छल,एकटा संकल्प छल,चिर अभिलाषा छल।सभसँ ऊपर कर्तव्य छल।हम हुनकासभकेँ कहिअनि-

“आखिर एक सए पैंतालीस वर्षक बएसमे भीष्म पितामह युद्ध केलनि कि नहि?किएक केलनि?कर्तव्य बुझि केलनि।जखन कि किछु दिनक बादे हुनकर मृत्यु भए गेलनि।”

जीवनमे सभ किछु फएदा-घाटाक दृष्टिसँ नहि देखल जा सकैत अछि।सभ मनुक्खक जीवनक अपन खिस्सा छैक,अपन गंतव्य छैक। नियति ककरासँ कखन की कराएत तकर कोन हिसाब देल जा सकैत अछि?

oooooooooooooooooooo

पुस्तकमे वर्णित व्यक्ति / स्थानसँ संबंधित किछु चित्रसभ

प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रकान्त झाजीक संग

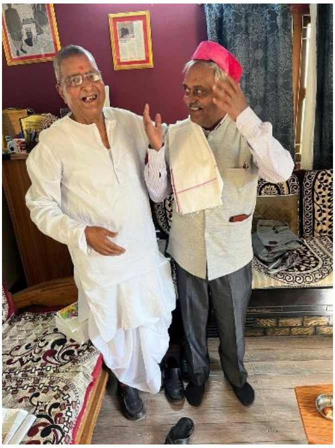

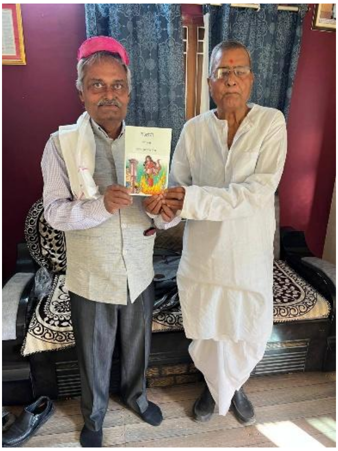

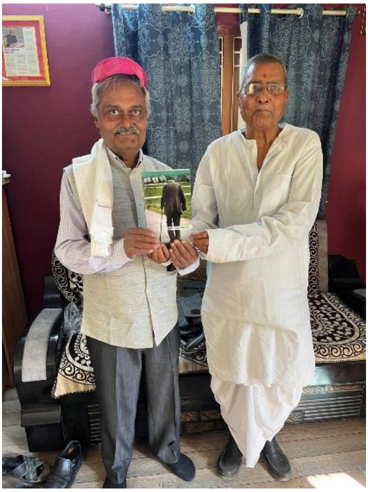

श्री शिवशंकरश्रीनिवासजीक संग

श्री उदय चन्द्र झा’विनोद’जीक संग

सगर राति दीप जरय,मधुबनी(आदरणीय श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीक संग)

होली मिलन,मधुबनी

ग्राम यात्रापर,हबाइ अड्डा,नई दिल्ली

गाममे बनैत घर

श्रीनारायण झा,मधुबनी

डाक्टर कमलाकान्त भंडारी

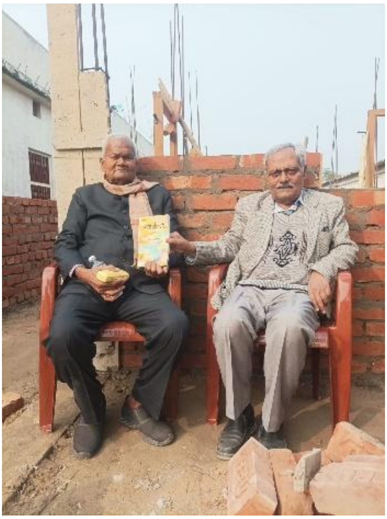

गाममे मूड़न

स्वर्गीय शैलेन्द्र झा(शल्लूजी)

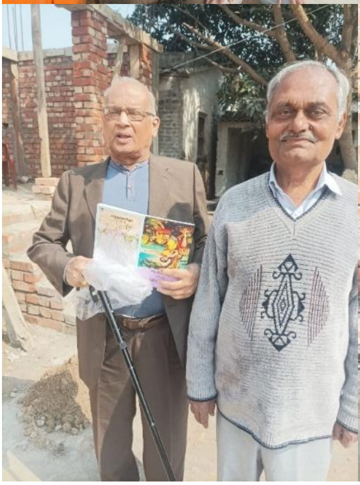

भवानीपुर-पण्डौल

कपिलेश्वर स्थान

उच्चैठ

भारत-नेपाल सीमा

भारत में आपका स्वागत है
WELCOME TO
भारतीय सीमा शुल्क
INDIAN CUSTOMS

SASHASTRA SEEMA BAL
CHECK POST
INDO - NEPAL BORDER

जनकपुर -धनुषा

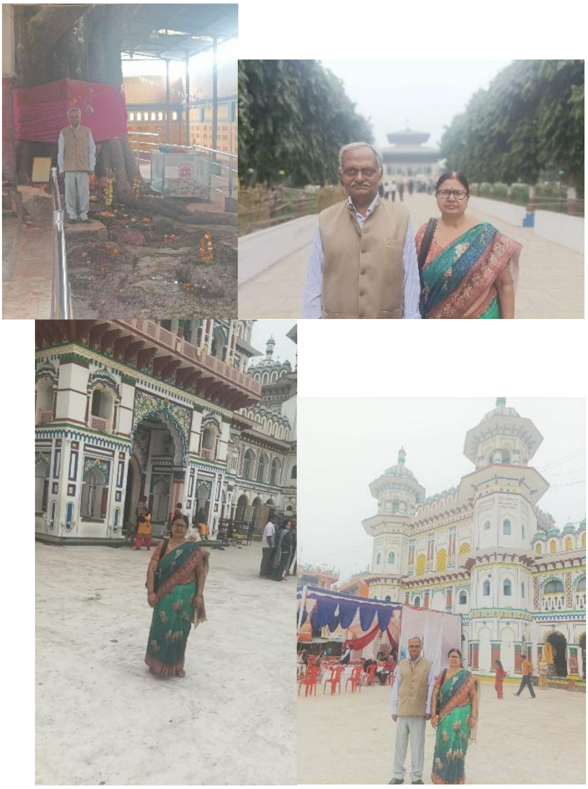

होलीडे होम पटना

हमर इसकूलिआ संगी श्री नारायण झा,नवकरही

पटना-राजगीर-नालंदा

ब्रह्म कुण्ड
Brahma Kund

६ मार्च २०२५ छत ढलाइमे उपस्थित ग्रामीण लोकनि)(युगलजी,ध्रुबजी,सीताराम भाइ आ बृजभूषण मिश्रजी)

तैयब,राजमिस्त्री आ ठीकेदार, जे हमर गामक घर बनओलनि)

हमर ग्रामीण नारायणजी आ योगी भाइ

पाठकीय प्रतिक्रिया

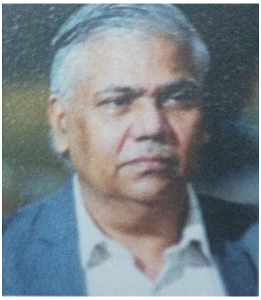

प्रख्यात कवि श्री राज किशोर मिश्रजी

(सेवानिवृत्त मुख्यमहाप्रबंधक,बीएसएनएल,नई दिल्ली) लिखैत छथि-

“मैथिली-साहित्यक श्रेष्ठ ओ वरिष्ठ उपन्यासकार आदरणीय श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रजी द्वारा रचित संस्मरणात्मक पोथी 'कथा अखन बाँकी अछि ' पढ़बाक अवसर भेटल। पोथी ततेक रुचिगर लागल जे एकहि बेर मे शुरू सँ अंत धरि पढ़ि गेलहुँ। संस्मरणक माध्यमसँ समाजमे व्याप्त अंतर्विरोध, पाखंड, तकनीकी परिवर्तन कारणेँ रीति-रेबाज ओ परंपरागत सामाजिक संस्थासभमे नहु-नहु अबैत अंतर आदिक विवरण अतीव चारु ओ आकर्षक अछि। मैथिलीक किछु विशिष्ट साहित्यकारलोकनि संग लेखक महोदयक भेँट-वार्ता ज्ञानवर्धक अछि। एहि संस्मरण मादे भौगोलिक , ऐतिहासिक, पौराणिक ओ आर्थिक पृष्ठभूमि पर ठाढ़ परिवेशमे मंथर गतिसँ परिवर्तनकेँ अवलोकन कयल जा सकैत अछि।

आदरणीय श्री मिश्रजीकेँ एहि अद्भुत साहित्य-सृजन लेल बहुत रास बधाइ आ सादर प्रणाम।”

--राज किशोर मिश्र।

१४|७|२०२५

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://shorturl.at/abhkJ

पटाक्षेप(उपन्यास)

https://shorturl.at/tTEJV

जयतु जानकी(उपन्यास)

https://bit.ly/3LLCXq7

यज्ञसेनी(उपन्यास)

https://shorturl.at/jaAAr

कथा अखन बाँकी अछि(कथा संग्रह)

https://tinyurl.com/2umdjrm6

गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह)

https://tinyurl.com/d5wnh5pm

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।